अंगिका व्याकरण
आरो रचना कला

डॉ. अमरेन्द्र • डॉ. आभा पूर्वे

अंगिका व्याकरण आरो रचना कला

अंगिका व्याकरण
आरो रचना कला

डॉ. अमरेन्द्र

(पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, सी.एम,कॉलेज, बौंसी, बाँका)

डॉ. आभा पूर्वे

एम.ए. (गृह विज्ञान (गोल्डमेडलिस्ट) और हिन्दी), एम.एड., पी-एच.डी
(व्याख्याता, शिक्षा संकाय, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर)

ISBN : ९७८.८१.९६५१०७.२.५

प्रथम संस्करण
२०२३

सर्वाधिकार ©
लेखकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ पचास रूपये मात्र

Angika VyakaranAro Rachna Kala
By Dr.Amrendra/Dr.Abha Purbey Rs.150/-

डॉ. कामेश्वर शर्मा

केरों यादों में

जे पहिलें होना चाही, आबें होय रहलों छै

डॉ. अमरेन्द्र द्वारा लिखलों 'अंगिका भाषाशास्त्र' के व्याकरणवाला भाग एक बार नै, कै दाफी जहाँ-तहाँ छपलै; कभी संक्षिप्त रूपों में, तें कहीं विस्तृत रूपों में प्रकाशित होलों छै। चंद्रप्रकाश जगप्रिय आरो धनंजय मिश्र के अंगिका व्याकरण के आधार उपरोक्त 'अंगिका भाषाशास्त्र' ही छेकै, जे दोनों विद्वानों के पुरोवाक् सें भी स्पष्ट छै। कभी ई पांडुलिपि के सहारा हम्मूं अंगिका व्याकरण परिचय लें लेलियै। दुर्भाग्य ई रहलै कि डॉ. अमरेन्द्र के भाषाशास्त्र पांडुलिपि रूपों में ही अभी तांय छै। ई पुस्तक के बहुत बड़ों हिस्सा कें हम्में प्रकाशित करी रहलों छियै। यैमें हमरों जे कुछ छै, ऊ रचनाकला सें जुड़लों छै, कहानी, नाटक, कविता, निबंध, ललित निबंध आरो रिपोर्ताज आरनी सें संबंधित। छंदवाला हिस्सा तें डॉ. अमरेन्द्र के 'छंद छौनी' सें ही लै लेलें छियै। होन्है कें अमरेन्द्र जी के पांडुलिपि 'अलंकार मंजरी' सें कुछ अलंकार यैमें लै लेलें छियै, चूँकि भाषा शैली सें एकरों संबंध होय छै। तबें यहाँ विस्तार सें बचै लेली अधिकांश अलंकार के उदाहरण हटाय देलें छियै, ओकरों लक्षणे काफी लागलै—यही वास्तें।

कहै के जरूरत नै छै कि ई पुस्तक के प्रकाशन छात्र सिनी कें ध्याने में रखी कें करलों गेलों छै। जों उपयोगी सिद्ध होलै, तें भविष्य में 'अंगिका भाषाशास्त्र' कें भी रचनाकला के साथें प्रकाशित करै के मोंन रहतै। इखनी जतना टा हुएँ पारी रहलों छै, वही रखी रहलों छियै। कुछ कमी लगौं, तें कहियें जरूर!

—आभा पूर्वे
दीपावली
१२ नवम्बर २०२३

शरतचंद पथ
मशाकचक, भागलपुर
८१२००१ बिहार

विषयसूचि

● अंगिका ध्वनितत्व ९-१५

❖ व्याकरण : परिभाषा ❖ ध्वनि आरो वर्ण ❖ स्वर ❖ व्यंजन ❖ अनुस्वार आरो विसर्ग ❖ अंगिका रौं दू विशिष्ट ध्वनि ❖ सन्ध्यक्षर आरो स्वर-संयोग

● रूपतत्व १६-४२

❖ शब्द-रूप ❖ संज्ञा ❖ वचन ❖ लिंग ❖ कारक ❖ विशेषण ❖ सर्वनाम ❖ क्रिया ❖ अव्यय ❖ क्रिया-विशेषण ❖ संबंधसूचक शब्द ❖ समुच्चयबोधक शब्द ❖ निपात ❖ उपसर्ग ❖ प्रत्यय ❖ समास ❖ विराम चिन्ह आरो एकरों प्रयोग ❖ कहवी ❖ मुहावरा

● वाक्यरूप ४२-४७

❖ वाक्य-रचना ❖ अर्थ केरों दृष्टि सें वाक्य रचना भेद ❖ रचना के अनुसार वाक्य-भेद ❖ उद्‌देश्य आरो विधेय ❖ वाक्य विश्लेषण ❖ वाक्य-संश्लेषण

● अर्थतत्व ४८-५३

❖ अर्थविज्ञान ❖ शब्द-अर्थ-संबंध ❖ संकेतग्रह के साधन ❖ शब्दशक्ति

● रचना कला ५३-१००

❖ रस के वर्गीकरण ❖ अलंकार ❖ निबंध ❖ कविता-लेखन ❖ छंद-विवेचन ❖ कहानी-लेखन ❖ नाटक ❖ संस्मरण-लेखन ❖ ललित निबंध ❖ रिपोर्ताज ❖ अनुवाद कला ❖ सारांश आरो सारलेखन कला ❖ पत्र-लेखन

अंगिका ध्वनितत्व

व्याकरण : परिभाषा

भाषा के व्यवस्थित प्रयोग लेली, नियम के जरूरत होय छै, भाषाशास्त्र के अन्तर्गत यहेँ नियम व्याकरण कहावै छै। एक तरह सें कहलोॅ जावेँ सकै छेँ कि व्याकरण भाषा-प्रयोग के संविधान छेकै।

ध्वनि आरो वर्ण

भाषा रोॅ मूल ध्वनि के प्रतीक चिन्ह वर्ण कहावै छै। वर्ण ही अक्षरो कहावै छै। ई वर्ण आकि अक्षर रोॅ कोय खंड फेनू नै करलोॅ जावेँ सकै छेँ, जेना दाम के द-आ-म-अ में विभाजित करलोॅ जावेँ सकै छै, मतरकि फेनू एकरोॅ खंड नै करलोॅ जावेँ सकै छेँ।

ध्वनितंत्र/उच्चारण-अवयव

शरीर के जोॅन-जोॅन अंग ध्वनि के उच्चारण में मदद करै छै, भाषाशास्त्र में वहेँ ध्वनितंत्र आकि उच्चारण-अवयव के नामोॅ सें जानलोॅ जाय छै। शरीर के हेनोॅ मुख्य अंग साँस नली, कंठ, स्वरयंत्र, उपालि, जिह्वा, कौआ, कोमल तालु, कठोर तालु, मुर्धा, दाँत, ओठ, नाक आरनी छेकै।

जबेँ साँस-नली सें साँस बाहर होय छै आरो ओकरोॅ बाहर होय में बाधा होय छै, साँस-नली छोड़ी केँ आरो काँही कोय बाधा नै होय छै, तेँ स्वर सिनी के जनम होय छै आरोॅ जबेँ साँस केँ साँस-नली के बादोॅ अन्य जग्घा पर संघर्ष करै लेँ लागै छै, तबेँ व्यंजन-वर्ण सिनी के जन्म होय

छै।

अंगिका ध्वनि सिनी के भेद भी हिन्दी ध्वनि सिनी नाँखी कैएक आधारों पर करलों गेलों छै, जे नीचें देलों जाय रहलों छै–

१. (क) अनुदात्त (मंद स्वर सें) (ख) स्वरकृत भेद–उदात्त (ऊँचों स्वर सें) आरो (ग) समाहार (नै उच्चों नै नीचें)

२. कालकृत भेद–एक ध्वनि के उच्चारण में लगैवाला समय के आधार पर जेना, (क) ह्रस्व आरो (ख) दीर्घ।

ग. स्थानकृत भेद–मुँह के जोंन-जोंन स्थानों से ध्वनि के उच्चारण होय छै, ऊ स्थान के आधार पर जेना कंठ्य, तालव्य, दंत्य, ओष्ठ्य आरनी।

घ. भीतरी प्रयत्नकृत भेद–मुँह के भीतर जिह्वा के सहयोग सें एक ध्वनि के उच्चारण के कर्त्तें प्रयत्न करै लें लागै छै, ओकरों आधार पर भेद, जेना–स्पर्षी, संघर्षी आरनी।

ङ. बाहरी प्रयत्नाकृत भेद–एक ध्वनि के उच्चारण में कर्त्तें साँस के जरूरत होय छै, ओकरों आधारों पर भेद, जेना,

अल्पप्राण

आरो महाप्राण।

उच्चारण-स्थान के दृष्टि से अंगिका स्वर आरो व्यंजन सिनी केरों वर्गीकरण,

स्वर	व्यंजन	उच्चारण स्थान	वर्ग
अ, आ, ऑ	क, ख, ग, घ, ङ,	कण्ठ	कण्ठ्य
	क, ख, ग,	जिह्वामूल	जिह्वामूलीय
इ, ई	च, छ, ज, झ, ञ, य, श	तालु	तालव्य
ऋ	ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, ष	मूर्धा	मूर्धन्य
	त, थ, द, ध	दन्त	दंत्य
	न, र, ल, स, ज	वर्त्स (ऊपर)	वर्त्स्य
उ, ऊ	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ	ओष्ठ्य
ए, ऐ		कण्ठ-तालु	कण्ठतालव्य
ओ, औ		कण्ठ-ओष्ठ	कण्ठोष्ठ्य
	व, फ	दंत-ओष्ठ	दंतोष्ठ्य

स्वर

विवृत—विवृत स्वर ऊ छेकै जेकरों उच्चारण में जिह्वा आरो स्वर-सीमा के बीच अधिक-सें-अधिक स्थान खाली रहें। आ, ऑ विवृत स्वर छेकै। सामान्यतः हेन्हों विवृत ध्वनि अंगिका में ऐलों अंग्रेजी शब्द में मिलै छै। जेना—डॉक्टर, कॉलेज आरनी।

अर्द्धविवृत—जेकरों उच्चारण में जिह्वा आरो स्वर-सीमा के बीच विवृत के वनिस्पत कुच्छू कम जग्घों खाली रहें। अंगिका में 'अ' अर्द्धविवृत स्वर छेकै, जेना कि हिन्दियो में।

संवृत—जबें जिह्वा आरो स्वर-सीमा के मध्य कम-सें-कम स्थान खाली रहें। इ, ई, उ, ऊ अंगिका भाषा में सवृत ध्वनि छेकै।

अर्द्धसंवृत—जबें जिह्वा आरो स्वर-सीमा के बीच संवृत के वनिस्पत कुछ ज्यादा स्थान खाली रहें, अर्द्धसंवृत ध्वनि कहावै छै, जेना—ए, ओ ।

व्यंजन

व्यंजन केरों पाँच वर्ग, यानी कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग आरो पवर्ग रों प्रत्येक के पहिलकों दू टा अक्षर (क-ख, च-छ, ट-ठ, त-थ, प-फ) कठोर कहावै छै, जबें कि तेसरों आरो चौथों (ग-घ, ज-झ, ज-झ, द-ध, ब-भ) कोमल कहावै छै। होन्है कें प्रत्येक वर्ग के अखिरलका अक्षर ङ, ञ, णा, आरो म सानुनासिक कहावै छै, जेकरों उच्चारण में नासिका रों प्रयोग होय छै)

स्पर्श—स्पर्श ऊ ध्वनि सिनी कें कहलों जाय छै, जेकरों उच्चारण में मूँ के भीतर आकि बाहर के दू उच्चारण-अवयव एक-दुसरा सें जोर से स्पर्श करतें हुएँ खुलै छै, जेकरों कारण निःस्वास थोड़ों देर लेली एकदम सटी जाय छै आरों फेनू वेग से बाहर निकली आवै छै । स्पर्श ध्वनि कें दुसरों नाम स्फोटक भी छेकै। स्पर्श ध्वनि छेकै—

क, ख, ग, घ,

ट, ठ, ड, ढ,

त, थ, द, ध,
प, फ, ब, भ

स्पर्श-संघर्षी—स्पर्शिये व्यंजन नाँखि जबें निःस्वास कुछ क्षण लेली उच्चारण-अवयव के कारण एकदम अवरुद्ध होय जाय छै, मतरकि यहाँ ओकरा आपनों निकास लेली संघर्षण के जरूरत होय छै। यहें लेली हेनों व्यंजन-स्पर्श-संघर्षी कहावै छै। च, छ, ज, झ,स्पर्श-संघर्षी ध्वनि छेकै।

अनुनासिक—अनुनासिक ध्वनि के उच्चारण तबें होय छै जबें कि कोमल तालु झुकी जाय छै आरो निःस्वास मुँह से निकलै के बदला नाक के नली सें निकलै छै । ङ, ञ, ण, न, म अनुनासिक ध्वनि छेकै ।

सानुनासिक आरो निरनुनासिक—जै में साँस के थोड़ों टा अंश नाक सें निकली कें आवें, ऊ सानुनासिक छेकै। चन्द्र बिन्दु सानुनासिक छेकै। एकरों बदला जबें पूरे साँस मुँह दै कें निकलै ऊ निरनुनासिक छेकै।

पार्श्विक—हेनों व्यंजन के उच्चारण में जीह्वा के नोक तें उपरी मसूड़ा सें लगलों रहै छै, मतरकि जिह्वा के एक आकि दोनो पार्श्व खुल्ले रहै छै, जेकरों कारण निःस्वास वहें पार्श्व सिनी सें बाहर निकली आवै छै । 'ल' पार्श्विक ध्वनि छेकै।

लोढ़ित—जबें जिह्वा रों नोक मसूड़ा (वर्त्स) पर एक आकि कै-एक बार टक्कर मारें, तें वै सें उच्चरित-ध्वनि लोढ़ित आकि लुंठित कहावै छै। 'र' लोढ़ित ध्वनि छेकै।

संघर्षी—संघर्षी व्यंजन ऊ छेकै, जेकरों उच्चारण में निःस्वास के निकास में पूरा-पूरा अवरोध नै होय छै, बलुक ई ध्वनि के उच्चारण में मुख-विवर एन्हें साँकरों होय जाय छै कि स्वास कें रगड़ खाय कें बाहर होय लें लागै छै। श, ष, स के उच्चारण में एक प्रकार के घर्षण होला के कारणें ई सब कें उष्म वर्ण भी कहलों गेलों छै। 'ह' आरो ':' के उच्चारण में साँस कें जोर सें फेकै लें पड़ै छै। संघर्षी ध्वनि छेकै—व, श, स, ह, विसर्ग।

अर्द्ध स्वर/ईषत विवृत—ई स्वर आरो व्यंजन रों बीचवाला ध्वनि छेकै । ई ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा संवृत स्थान सें विवृत स्थान दिश बहै छै। य, व, अर्द्ध स्वर ध्वनि छेकै।

श्वास (प्राण) के मात्रा के आधार पर वर्ण-भेद

अल्प-प्राण—जे ध्वनि सिनी के उच्चारण में श्वास-वायु के मात्रा कम होय

छै, ओकरूहै अल्पप्राण व्यंजन कहलोॅ जाय छै। क, ग, ह, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म आरो ड़, य, र, ल, व, अल्पप्राण छेकै ।

महाप्राण—जोॅन-जोॅन ध्वनि के उच्चारण में श्वास-वायु के मात्रा ज्यादा होय छै, वहेॅ सिनी महाप्राण व्यंजन छेकै। ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, ह महाप्राण ध्वनि छेकै।

अनुस्वार आरो विसर्ग

रेखा के ऊपर पड़ै वाला बिन्दु अनुस्वार आरो रेखा के नीचें पड़ैवाला विन्दु विसर्ग कहावै छै। अनुस्वार में नासिक्य ध्वनि कम होय छै, जबेंकि चाँद विन्दु में अनुस्वार सें ज्यादा होय छै। विसर्ग में 'ह' ध्वनि साफ-साफ नै होय छै। अंगिका में 'दुःख' के उच्चारण 'दुक्ख' नाँखी होय छै। अनुस्वार के प्रयोग क, च, ट, त, प वर्ग के पंचम वर्ण के स्थान पर होय छै। जेना—कंठ, कंद, पंत आरनी।

भाषाशास्त्री ई व्यंजन के बादो क्ष, त्र, ज्ञ केॅ भी अलग सें तीन वर्ण मानलेॅ छै, कोय-कोय हेनोॅ मानै सें इन्कार करै छै। अंगिका में एकरोॅ प्रयोग ज्यादातर हेना होय छै, च्छ, तर आरो ग्य। अंगिका में 'ज्ञ' के उच्चारण 'ग्यँ' नाँखी होय छै। हिन्दियो में शायते एकरोॅ शुद्ध उच्चारण 'ज्यँ' मिलै छै।

स्वराघात—शब्द के उच्चारण में अक्षर पर जे जोर पड़ै छै, ओकरूहै स्वराघात कहलोॅ जाय छै।

अनुतान—बोलै क्रम में स्वर के उतार-चढ़ाव अनुतान कहावै छै। यै सें अर्थ के परिवर्त्तन स्वाभाविक रूप सें होय जाय छै, जेना—अच्छा के अनुतानी प्रयोग सें आश्वर्य, स्वीकृति आरो प्रश्न तीनो के बोध होय छै ।

अच् आरो हल—संस्कृत में स्वर वर्णो के 'अंच' आरो व्यंजन वरणोॅ के 'हल' कहलोॅ जाय छै। जबेॅ व्यंजन वरणोॅ में स्वर मिललोॅ रहेॅ तेॅ ओकरा 'अजन्त' (अच्+अन्त, जेना—क+अ=क आरनी), मतरकि जबेॅ व्यंजन वरणोॅ के साथें स्वर वर्ण नै मिललोॅ रहेॅ तेॅ ओकरा 'हलन्त' (हल+अन्त) कहलोॅ जाय छै, जेना—क्, च्, ट् आरनी।

संयुक्त व्यंजन—जबें दू आकि यहू सें ज्यादा व्यंजन के बीच स्वर नै रहें तें ओकर्‌है संयोगी आकि संयुक्त व्यंजन कहलों जाय छै, जेना—झग्गड़, तग्गड़ आरनी।

अंगिका रों दू विशिष्ट ध्वनि

'ऍ' (प्रसृत ए-कार) आरो 'ऑ' (प्रसृत ओ-कार) अंगिका रों विशिष्ट ध्वनि छेकै। 'ऍ' के उच्चारणों में मुँह 'ए' के उच्चारणों में तनी बेसी खुलै छै आरो निचलका जबड़ा जरा आगू बढ़ी जाय छै। एकरों मात्रा केरों चिन्ह (ॅ) छेकै; जेना—लें, दें, आबें, तबें ओगैरह शब्दों में ऐलों ऍ-कार (ॅ)। वहें रङ, 'ऑ' केरों उच्चारण 'ओ' के अपेक्षा जरा वर्तुल (गोल) होय छै, जना कि 'आबों', 'बैठों', 'पढ़ों', 'लिखों' ओगैरह शब्दों में ऐलों ओ-कार (ॉ)। एकरों मात्रा केरों चिन्ह 'ॉ' छेकै। 'ले', 'दे' (अवज्ञार्थक) आरो 'लें', 'दें' (आदरार्थक) तथा 'हमरो' (बोलैवाला-सहित) आरो 'हमरों' (बोलैवाला केरों) में ए-कार आरो ऍ-कार तथा ओ-कार आरो ऑ-कार केरों अन्तर स्पष्ट छै।

प्लुत—संस्कृत में प्लुत नामक एक तेसरों स्वर मिलै छै, जेकरा में तीन मात्रा के योग मनलों गेलों छै। प्लुत के प्रयोग दूर सें हँकावै, चिल्लावै, गावै आकि कानै में होय छै। अंगिका में अर्द्ध ओकार लेली, यहें लेली 'ॅ' के प्रयोग प्रचलित छै।

सन्ध्यक्षर आरो स्वर-संयोग

'अंगिका भाषा और साहित्य' में डॉ. अमरेन्द्र नें सन्ध्यक्षर आरो स्वरसंयोग पर विचार करतें हुऍ जे लिखलें छै, ऊ नीचें उद्‌धृत छै,

खड़ी बोली नाँखी आधुनिक अंगिका में सन्ध्यक्षर ध्वनि सिनी ए, ओ, ऐ, औ के ही प्रमुखता छै, लेकिन ई भाषा के धरमपुरिया रूप में स्वर-संयोग भी पैलों जाय छै, जेना—चौंर > चाउर। गैया > गइया आरनी।

अन्तिम 'आ' कहीं सानुनासिक आरो कहीं निरनुनासिक रूप सें उच्चरित होय छै। उदाहरणार्थ : 'बढ़ियाँ', 'घटिहा', 'हटिया' आरनी । सहज सानुनासिकता धरमपुरिया अंगिका सें केन्द्रिय अंगिका में अधिक मिलै छै।

व्यंजन ध्वनि सिनी में 'श्', 'ष्', 'स्' के जगह 'स्' के ही प्रयोग होय छै। 'ष' के स्थान पर कभी-कभी ख्' के उच्चारण होय छै । 'ल्' आरो 'र्' में तथा 'न्' आरो 'ल्' में प्रायः विपर्यय देखलोॅ जाया छै। जेना, नदी—नद्दी—लद्दी, रहरी-लहरी। अनुनासिक ध्वनि सिनी में चार के ही उच्चारण होय छै, 'ण' के उच्चारण नै होय छै। उदाहरणार्थ : ङ—आङन, ञ्—अञ्, न्—अन्त्, म्—लम्बा।

आधुनिक अंगिका में 'ऋ' आरो 'श' 'ष' के भी प्रयोग चली रहल छै, अर्थ के अनर्थ सें बचै लेल 'श' के प्रयोग कें स्वीकार कैर लेल गेलोॅ छै।

'क' वर्ग के ध्वनि सिनी के उच्चारण में जिह्वा आकि पिछला भाग कोमल तालु के स्पर्श करै छै। जे अग्र कंठ्य ध्वनि छेकै। चवर्ग के ध्वनि सिनी अग्रतालु सें उच्चरित होय छै। ट वर्ग के उच्चारण अग्रमूर्द्धा सें होय छै, मध्यमूर्द्धा सें नै। तवर्ग के ध्वनि सिनी दन्त्य नै होय कें वर्त्स्य छेकै। पवर्ग के ध्वनि सिनी ओष्ठय ही छेकै। 'य्', 'व्' अर्द्धस्वर छेकै। र् लुण्ठित आरो कोमल तालव्य छेकै तथा 'ल्' वर्त्स्य छेकै। इकार, उकार के बाद 'य्', 'व्' के ध्वनि सिनी अल्पश्रुत होय छै, जों एकरा सिनी के आगू कोय स्वर हुऍ आरो ओकरोॅ उच्चारण अग्रिम स्वर में मिली जैतें रहें। सघोष महाप्राण 'ह्' में बदली जाय छै । 'र्ह' के भी उच्चारण होय छै। संक्षिप्त ड़्, ढ़् भी विद्यमान छै ।

रूपतत्व

शब्द-रूप

व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद :
(१) रूढ़ (२) यौगिक (३) योगरूढ़।
रूढ़ : रूढ शब्द ओकरा कहै छै, जेकरों खंड करला पर कोय अर्थे नै निकलें; जेना, भक, रथ, हट आरनी
(२) यौगिक : यौगिक शब्द ऊ छेकै, जेकरों रचना दू आकि तीन शब्द के मिलला सें होय छै; जेना, घोड़ागाड़ी, पाठशाला, विद्यार्थी आरनी।
(३) योगरूढ़ : योगरूढ़ शब्द ऊ छेकै, जेकरों निर्माण दू शब्दों के मेल सें भले बनै छै, मतुर ओकरों अर्थ कुछ अलग आरो विशिष्ट होय छै; जेना, लंबोदर, पंकज, जलद आरनी

अर्थ के आधार पर शब्द- भेद

अर्थ के आधार पर शब्द के तीन भेद होय छै—(१) वाचक (२) लक्षक (३) व्यंजक।
वाचव : जे शब्द सें ओकरों सांकेतिक अर्थ ही प्रकट हुए, ऊ वाचक शब्द कहाय छै; जेना, घोंर, पानी, सरंग आरनी
लक्षक : जबें कोय शब्द अपनों सांकेतिक अर्थ छोड़ी कें लक्षण के आधार पर अन्य अर्थ दै छै, तें ऊ लक्षक कहाय छै; जेना कोय बहादुर कें शेर कहवों। यहाँ शेर के अर्थ कोशवाला नै छै।
व्यंजक : जहाँ कोय शब्द अपनों सांकेतिक आकि लक्ष्यार्थ सें भी अधिक गूढ़ अर्थ दै, ऊ व्यंजक शब्द छेकै जेना, प्राणदायी जेठ।

रूप के आधार पर शब्द- भेद

रूप के आधार शब्द के दू भेद होय छै, (१) विकारी (२) अविकारी।
विकारी शब्द : जे शब्द में कारक, लिंग, वचन आरनी के कारण

परिवर्तन होय छै, ऊ विकारी शब्द कहावै छै; जेना, हवा, तोहें, छौड़ा, आरनी।

अविकारी : जे शब्द में कारक, लिंग, वचन आरनी के कारण कोय परिवर्तन नै होय छै, ऊ अविकारी शब्द छेकै; जेना, मुदा, मतुर, मजकि, बलुक आरनी

प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद

वाक्य में शब्द के प्रयोग कोन रूपो मे होलो छै, ई आधारो पर ओकरो भेद निम्नांकित छै –

(१) संज्ञा(२) सर्वनाम(३) विशेषण(४) क्रिया (५) क्रिया विशेषण (६) अव्यय।

संज्ञा

संज्ञा के ह्रस्व, दीर्घ के साथें अतिरिक्त रूप भी अंगिका में उपलब्ध छै; जेना–माली, मलिया, मलीबा। सामान्यतः नामों कें छोटों करी दै के प्रवृत्ति विद्यमान छै; जेना, 'अनन्तलाल' कें 'अन्त्' (प्यार में) आरो 'अन्ता' (छुटपन या कनिष्टता में); फिरू 'हरिनारायण' कें दीर्घान्त 'हरी' करी दै के भी प्रवृत्ति पैलों जाय छै। आकारान्त स्त्रीलिंग कें अनादर आकि कनिष्ठता सूचित करै वास्तें 'इया' सें युक्त करी कें बोलै छै, जेना, गीता-गितिया आरनी। हेनों स्थिति में आदि दीर्घ स्वर ह्रस्व में बदली जाय छै।

जातिवाचक संज्ञा सिनी में भी 'इया' (अनादर या लघ्वर्थ में) लगै छै; जेना, गाय–गइया, बाछी–बछिया। कहीं-कहीं संज्ञा सिनी के अन्तिम व्यंजन द्वित्व रूपों में मिलै छै; जैसें भात–भत्ता, दूध–दुद्धा। हेनों प्रयोगों में आरम्भिक दीर्घ स्वर ह्रस्व में बदली जाय छै।

संज्ञा सिनी में 'वा' आकि 'इवा' (अनादर के अर्थ में) लगाय कें भी बोलै के प्रवृत्ति देखलों जाय छै; जैसें, फूल–फुलबा, भाय–भइबा। डॉ. डोमन साहु समीर नें अंगिका में हेनों प्रयोग कें विशिष्ट अर्थप्राप्ति लिए मानलें छै, जैसें, 'बैलवा कें सानी पानी दै लें' में 'बैलवा' खास बैल

के ओर ही संकेत है।

वचन

अंगिका में दू वचन छै,

१. एकवचन आरू

२. बहुवचन।

एकवचन में शब्द सिनी के मूल रूप रहै छै, लेकिन बहुवचन–सब, सभ, सभे, लोग, लोगनी, लोकनी आरनी समूहवाचक शब्द सिनी के योग सें बनै छै। यहें प्रकार–आर, आरनी, आरू, आरी, सिनी, सनी जोड़ी कें भी बहुवचन के रूप बनैलों जाय छै। उदारणार्थ :

हमें (एकवचन)
हमें सब या हमें सभे या हमें सभ (बहुवचन)।
डॉक्टर (एकवचन)
डॉक्टर लोग, डॉक्टर लोगनी (बहुवचन)।
आदमी (एकवचन)
आदमी सिनी (बहुवचन)।
हमरा (एकवचन)
हमरा आरू, हमारा आरी (बहुवचन)।
तोरा (एकवचन)
तोरा सिनी, तोरा सब (बहुवचन)।
ऊ (एकवचन)
ऊ सब, ऊ लोग (बहुवचन)।

लिंग

अंगिका में दू लिंग छै,

१. पुल्लिंग आरो

२. स्त्रीलिंग।

पुल्लिंग शब्द सिनी कें स्त्रीलिंग में परिणत करै वास्ते 'ई', 'नी', 'इनी', 'इन', इया, 'आइन' प्रत्यय सिनी कें शब्द में लगैलों जाय छै। उदाहरणार्थ :

छौड़ा-छौड़ी, धोबी-धोबिन, पण्डित-पण्डिताइन, कुत्ता-कुतिया, मास्टर-मास्टरनी, सिंह-सिंहिनी, डॉक्टर-डॉक्टरनी।

अंगिका में खाली संज्ञापदे में ही नै, विशेषण पदो में 'ई' प्रत्यय लगाय कें स्त्रीलिंग रूप बनैलों जाय छै; जैसें,

गोलों बाछा—गोली बाछी।

क्रियागत लिंगभेद प्रायः नै पैलों जाय छै। 'मर्द जाय छै', 'औरत जाय छै' ई दोनों वाक्य में 'जाय छै' रूप ही मिलै छै। मतरकि, कृदन्तीय रूपवाली क्रिया सिनी में ई लिंगभेद पैलों जाय छै, जों कर्त्ता के प्रति आदर भाव छै; जैसें,

सीता गेली।

राम गेला।

कारक

कारक यानी संज्ञा आरो क्रिया के मध्य रहै वाला सम्बन्ध। हिन्दी नाँखी अंगिका में भी आठ कारक छै,

१. कर्त्ता
२. कर्म
३. करण
४. सम्प्रदान
५. अपादान
६. सम्बन्ध
७. अधिकरण आरो
८. सम्बोधन।

अंगिका में कारकीय रूपों के रचना लेली विभक्ति-शून्य शब्द सिनी के तथा कारकीय अभिप्राय के अभिव्यक्ति लेली परसर्गों सिनी के

प्रयोग में प्रमुखता मिलै छै। ई कारक सिनी के स्थिति ई प्रकार छै–

कर्त्ता	: ०, एँ
कर्म	: क, कें, के, कै, कैं।
करण	: सँ, सें, सें, लैकें।
सम्प्रदान	: लेलें, लेली, लेल, लेलों, लागि, लैं, वास्तें, खातिर ।
अपादान	: सँ, सें, सें, से।
सम्बन्ध	: क, कें, केरों, केरी, केर, रों, री।
अधिकरण	: म, में, प, पें, पर, ऊपर, उपरोप, दिश, लग, कन ।

सम्बोधनः हे, गे, हेगे, अगे हेग्गे, हेरे, अजी, हे, हो,

विशेषण

संज्ञापद के नाँखी विशेषण के भी तीन रूप अंगिका में मिलै छै,

१. लघु
२. गुरु आरो
३. अनावश्यक।

यथा–छोट, छोटका, छोटकवा। गोर, गोरका, गोरकवा।

विशेषण सिनी के तुलनात्मक श्रेणी सूचित करै लेली 'सें' या 'सें' तथा 'वेशी' प्रयुक्त होय छै। जैसें, 'ओकरा सें अच्छा', 'राम सें बेशी होशियार' आदि। तरबन्त-श्रेणी के विशेषण अंगिका में नै मिलै छै। कभी-कभी 'बीस', 'उनैस' जेन्हों शब्द सिनी के प्रयोग द्वारा तुलनात्मक भाव व्यक्त करलों जाय छै; जैसें, ऊ ओकरों सें बीस छै, उनीस या उनैस छै।

तमबन्त-विशेषण (सुपरलेटिव्व) के भाव कें व्यक्त करै लेली 'सभ में', 'सभ सें' या 'सब सें बढ़ी कें' आरनी लगैलों जाय छै।

'ल' लगाय कें कृदन्तीय विशेषण बनैलों जाय छै; जैसे मरलों आदमी, सड़लों आम।

क्रियावाचक विशेष्य (भर्वल नाउन) 'ल' तथा 'नाय' लगाय कें बनैलों जाय छै; जैसें 'चललों सें', 'सुतनाय', 'पढ़नाय' आरनी।

'ई' प्रत्यय जोड़ी कें विशेषण सिनी के लिंग परिवर्त्तन देखलों जाय चुकलों छै। कहीं-कहीं दोनों लिंगों में विशेषण एक समान रहै छै, जेना, 'ऊ आदमी अच्छा छै', 'ऊ औरत अच्छा छै।'

संख्यावाचक विशेषणों में 'टा', 'गो' ओर 'ठो' जोड़लों जाय छै।

सर्वनाम

जे शब्द सब नामों (संज्ञाओं) के बदला में आवै छै, ऊ सर्वनाम छेकै।

अंगिका में आठ प्रकार के सर्वनाम मिलै छै—

१. पुरुष वाचक
२. निश्चयवाचक
३. सम्बन्ध बोधक
४. नित्यसम्बन्ध बोधक
५. प्रश्नवाचक
६. अनिश्चय वाचक
७. निजवाचक
८. आदरवाचक

१. पुरुष वाचक सर्वनाम :

अंगिका में ई सर्वनाम के केवल उत्तम आरो मध्यम पुरुष के रूप मिलै छै। अन्य पुरुष आपनों स्थिति खोय चुकलों छै।

उत्तमपुरुष :—

कर्त्ता—हम, हमें, हम्में, हमरा
कर्म—हमरा, हमरा कें
करण—हमरा सें
सम्प्रदान—हमरा लें/हमरा ले ली
अपादान—हमरा सें

सम्बन्ध—हमरों, हमरी

अधिकरण—हमरा में/हमरा पर

मध्यम पुरुष :—

कर्त्ता—तें, तो, तोंय

कर्म—तोरा, तोरा कें

करण—तोरा सें

सम्प्रदान—तोरा लें/तोरा लेली

अपादान—तोरा सें

सम्बन्ध—तोरों/तोरी

अधिकरण—तोरा में/तोरा पर

२. निश्चय वाचक सर्वनाम :

निकटवर्त्ती—ई, है   दूरवर्त्ती—ऊ (कम दूर), हौ (बेसी दूर)

कर्त्ता	: ई, यें, यैं, है (हय) इनी, हिनी, (आदर में)	ऊ, हौ हुनी (आदर में)
कर्म	: ऍहिके, ऍकरा कें	ऒंहिके, ऒंकरा कें
करण	: ऍहिसें, यैंसें, ऍकरा सें	ऒंहिसें, ओकरा सें
सम्प्रदान	: ऍहिले, ऍकरा ले	ऒंहिले, ओकरा ले
अपादान	: ऍहिसें, यैंसें ऍकरा सें	ऒंहिसें, ओकरा सें
सम्बन्ध	: ऍहिके, ऍकरों, एकरी	ऒंहिकें, ओकरों
अधिकरण	: ऍहि में, यैं में, ऍकरा में	ऒंहिमें, ऒंकरा में

ऍकरा आरो ऒंकरा के उच्चारण आकृति हेकरा आरो होकरा भी मिलै छै। इनी, हिनी, हुनी, आदरार्थक सर्वनाम, में सिनी, आरनी आदि बहुवचनार्थक प्रत्यय जोड़ी कें विभिन्न कारक सिनी में रूप चलतै ।

अंगिका में दूरवर्त्ती उल्लेख सूचक रूपों में भी विविधता छै। 'ऊ', हौ, 'हुनी', 'हुन्हीं' आरो हुनी सिनी, 'हुनी सब', 'हुनी लोग' आरनी एकरों रूप मिलै छै। संयोगात्मक परसर्गीय रूप—ओकर, होकर, हुन्हकर आरनी अविकारी आरो ओकरा, होकरा, हुन्हकरा जैसनों तिर्यक रूप भी

यहाँ चलै छै।

३. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम :

अंगिका सम्बन्ध वाचक सर्वनाम के रूप में—जे, जेना, जेहिना, जौनी, जेंहि, जेकरा, जेहिकेर, जेते, जेतवाय, जिनका, जिनकरों, जिनकरी प्रचलित छै।

४. नित्य सम्बन्ध बोधक :

सम्बन्धवाचक सर्वनाम रूपों के साथ प्रयुक्त होय वाला सर्वनाम 'से' छेकै। ते, तेना, तेहिना, तौनी, तेहि, तेकरा, तेहकेर, तेते, तेतवाय, तिनकर, तिनकरों, तिनकरी 'से' के विभिन्न आकृति सिनी अंगिका में चलै छै। ई संगतिमूलक अभिप्राय व्यक्त करै छै।

५. प्रश्नवाचक सर्वनाम :

अंगिका में प्रश्न के आशय लेली के, केंहि, केना, केंहिना, कैन्हों, केतै, केतना, केतवाय, केकर, केकरी, किनका, किनकरो, किनकरी आरनी रूपों के रचना होय छै।

'के' रों प्रयोग कोय सजीव पदार्थ लेली होय छै। जबें कि 'केरों' के प्रयोग कोय निर्जीव पदार्थ लेली होय छै।

६. अनिश्चय वाचक सर्वनाम :

अंगिका में अनिश्चय वाचक सर्वनाम लेली 'कोय', 'कै', 'कुछ', 'किछु', 'कथु', 'कौनी', आरनी शब्द मिलै छै।

अंगिका में अनिश्चय के अभिप्राय लेली 'सभ्भे' आरो 'लोग' जैसनों बहुवचन व्यंजक रूप भी चलै छै। यथा—सभ्भे बरतिया लोग बोललै।

'कुछु' अंगिका में निर्जीव पदार्थ सिनी लें व्यवहृत होय छै।

७. निजवाचक सर्वनाम :

अंगिका में निजवाचक सर्वनाम के अभिव्यक्ति लेली 'आपनों'

आरो 'अपने' तथा 'अपन' सर्वनाम चलै छै। यथा—अपने लै आनवै । हम्में अपने पढ़े छी।

८. आदरसूचक सर्वनाम :

अंगिका में आदर वाचक सर्वनाम लेली 'अपनें' आकि 'आपनें' के व्यवहार करलोॅ जाय छै। जैसें—अपनें बोलियै नी। हम्में आपनें कें कहीं देखनें छियै।

अंगिका के आदरसूचक आपनें, अपने अंगिका के प्राकृत आरो अपभ्रंश अप्पाणों, अप्पाणु के विकसित रूप छेकै।

क्रिया

अंगिका के मुख्य सहायक क्रिया सिनी छेकै—छी, छै, छिऐ, छीक, छिकै, छिका, छेलियै, छलै, छलैं, रही, रहिऐ, रहै, रहैं।

सब्भे कालोॅ के क्रियारूप अंगिका में उपलब्ध छै। नीचें 'खाना' क्रिया के सब्भे कालोॅ के रूप प्रस्तुत छै :

सामान्य वर्तमान—हमें खाय छी। तोंय खाय छैं या छोॅ। ऊ खाय छै।
तात्कालिक वर्त्तमान—हमें खाय रहलोॅ छी। तोंय खाय रहलोॅ छोॅ । ऊ खाय रहलोॅ छै।
सन्दिग्ध वर्तमान—ऊ खैतें होतै।

सामान्य भूत—यै में सहायक क्रिया नै लागै छै। उदाहरणार्थ, हमें खैलियै, ऊ खैलकै, तोंय खैलें। मजकि, वैकल्पिक रूप में 'ले ली' लगाय कें यौगिक क्रियारूप बनैलोॅ जाय छै जैसें, हमें खाय लेली, ऊ खाय लेलकै।
आसन्न भूत—ऊ खैतें होतै।
अपूर्ण भूत—हम्में खाय छेलियै। ऊ खाय छेलै। तोंय खाय छेल्हौ। हम्में खायत रहियै। ऊ खायत रहै। तोंय खायत रहौ।
पूर्ण भूत—हम्में खैनें छेलियै। ऊ खैनें छेलै। तोंय खैने छल्हो।

सम्भाव्य अतीत—हमें खैतियै या खैथिहै।

सामान्य भविष्यत—हमें खैबै। ऊ खैतै। तोंय खैभौ।
संभाव्य भविष्यत् काल—जों खुशीलाल खाय
हेतु हेतु मद् भविष्यतकालू—ऊ खाय तें हम्में खाँव।

'खाना' क्रिया सें 'खैनाय' क्रियावाचक विशेष्य पद (भर्बल नाउन) बनै छै। वर्त्तमान कृदन्तीय रूप 'खायत' (य के अल्पश्रुति) तथा अतीत कृदन्तीय रूप 'खायल' बनै छै। 'ब' लगाय कें भी क्रियावाचक विशेष्य बनै छै; जैसें, पढ़ब-लिखब।

अंगिका के क्रियारूपों सें मैथिली आरो अन्य बोली के नाँखी हेकरोॅ संकेत मिलै छै कि जोॅन व्यक्ति के विषय में कोय व्यक्ति मध्यम पुरुष सें कही रहलोॅ छै, ऊ ओकरोॅ आत्मसम्बद्ध छेकै आकि नैं।

उदाहरणार्थ : ऊ खैलखोॅ ? (ऊ जे तोरा सें सम्बद्ध छै, खाय लेलकै ?); ऊ खैथौं ? (तोरा सें सम्बद्ध ऊ खैतै ?); ऊ खाय छौ (तोरा सें सम्बद्ध ऊ खाय छै)। जों व्यक्ति सम्बद्ध नै छै, तें ई प्रयोग होतै—ऊ खैलकै ?, ऊ खैथै ? ऊ खाय छै।

अंगिका के क्रियारूपों में आदर के सूचना के प्रभाव प्रायः नै पड़ै छै। 'हुनी खाय छै' आरो 'ऊ खाय छै' ई दोनों वाक्योॅ में खाय छै' क्रियारूप समान छै। मतरकि कहीं-कहीं आदर के प्रभाव क्रियारूप में भी देखलोॅ जाय छै। जैसें, 'ऊ खैयतै' आरो 'हुन्ही खयताह ।'

बलाघात के द्वारा अंगिका के क्रियारूपों में अर्थ-परिवर्त्तन होय जाय छै। जैसें खैलकै—प्रश्न। खैलकै—सामान्यभूत।

छै आरो छेकै—अंगिका में 'छै' आरो 'छिकै' के विशेष महत्व छै, जेकरोॅ अर्थ में भी भारी अन्तर छै। 'छै' अस्तित्वबोधक छेकै, जबेॅ कि 'छेकै' विकारबोधक छेकै : जैसें, गिलास में पानी छै (गिलास में पानी है) । आरो 'ई पानी छेकै (यह पानी है) यैमें 'छै' जहाँ अस्तित्व बोधक छेकै 'छेकै' विकारबोधक, यानी ऊ पानी ही छेकै, कुछु आरो नै ।

अंगिका में तद्धित आरो कृदन्त बनाय वास्तें बहुतेरे प्रत्यय छै ।

अव्यय

व्याकरण के विचारों सें जोंन शब्दों में कारक, लिंग, वचन या पुरुषों के कारणें कोय विकार/रूपान्तर नै हुएँ ओकरा 'अव्यय' कहलों जाय छै; जेना—आबें, तबें, आरो मुतर, पर इत्यादि।

अव्ययों के अंतर्गत १. क्रिया-विशेषण, २. संबंधसूचक शब्द, ३. समुच्चयबोधक शब्द आरो ४. विस्मयादिबोधक शब्द आवै छै

क्रिया-विशेषण

जोंन शब्दों सें कोनो क्रिया, कोनो विशेषण आकि कोनो दोसरों क्रिया-विशेषण केरों विशेषता बुझावै छै, ऊ 'क्रिया-विशेषण' कहावै छै;

क्रिया-विशेषण चार रकमों के होय छै—

१. कालवाचक,
२. स्थान वाचक,
३. रीतिवाचक आरो
४. परिमाणवाचक।

जोंन क्रिया-विशेषणों (अव्ययों) सें समय के बोध होय छै ऊ **कालवाचक क्रिया-विशेषण** कहावै छै; जेना—अबें, आबें, जबें, तबें, कबें अखनी/एखनी, जखनी, तखनी, कखनी, कहिया, जहिया, तहिया, आय, काल, परसू, तरसू, फरू, फिरू, फेरू, फनू।

अंगिका में अखनी/एखनी, जखनी, तखनी आरो कखनी सें 'समय' केरों, मतुर जहिया, तहिया आरो कहिया सें 'दिन' केरों बोध होय छै। ई अंगिका केरों एक-टा विशेषता छेकै; हिंदी में है विशेषता नैं छै।

जोंन क्रिया-विशेषणों सें स्थानों के बोध होय छे ऊ **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण** कहावै छै; जेना—इहाँ/यहाँ/याहाँ, कहाँ, जहाँ, तहाँ, उहाँ/वहाँ/वाहाँ/

जोंन क्रिया-विशेषण (अव्ययों) से क्रिया केरों रीति (ढंग, तरीका)

केरों बोध होय छै ऊ **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण** कहावै छै; जेना—एना, एनाकें, केना, केनाकें, जेना, जेनाकें, तेना, तेनाकें, ओना, ओनाकें, केन्हों, केन्होंकें, केन्हें, कैन्हें/कैहिनें,

रीतिवाचक क्रिया-विशेषणों में क. एनाकें, केनाकें, ओनाकें —आर खास करी कें 'रीतिसूचक' ख. कैन्हें, काहे कथी लें, वै लेली-आर कारणसूचक

क्रिया-विशेषणों कें जोंन रूपों सें परिमाण यानी मात्रा केरों बोध होय छै ओकरा **परिमाणबोधक क्रिया-विशेषण** कहलों जाय छै; जेना—थोड़ों, बहुत, बेसी, बड्डी, कम, तनी-टा, तनी-मनी, जरी-टा, जरा-जरा, एत्तें, कत्तें, जत्तें, तत्तें, ओत्तें

संबंधसूचक शब्द

जोंन अव्यय कोनो संज्ञा के बादें आवी कें वै संज्ञा केरों संबंध वाक्यों में कोनो दोसरों शब्दों सें दिखावै छै ऊ 'संबंधसूचक शब्द' कहावै छै; जेना—ओकरों बिना काम नै चलतै, तोहीं रात भर जागले रहल्हों; हैसिनी वाक्यों में 'बिना' 'भर' संबंधसूचक शब्द छेकै । यहाँ 'बिना' सें 'ओकरों' आरो 'काम' 'भर' सें 'तोहों' आरो 'रात' कें बीचों में संबंध-बोध होय छै

संबंधसूचक शब्दों कें अनुसर्ग अथवा परसर्गो कहलों जाय छै।

समुच्चयबोधक शब्द

जोंन अव्यय शब्दों सें कोनो शब्द या वाक्य केरों संबंध कोनो आन (दोसरों) शब्द या वाक्यों सें जोड़ै (आकि विलगावै) के बोध होय छै, ऊ 'समुच्चयबोधक शब्द' कहावै छै; जेना—'राम आरो श्याम आवै छै', 'गैया चरै छै, मतुर छगरिया बैठली छै' यै दुहु वाक्यों में पहिलका में 'आरो' शब्दों सें 'राम' आरो 'श्याम' एक-दोसरा सें जोड़लों गेलों छै, जबें कि दोसरका वाक्यों में 'मतुर' शब्दों सें गैया चरै छै' आरो 'छगरिया

बैठली छै' है दुहू वाक्यों कें विलगैलों गेलों छै। यै तरहों सें 'आरो' तथा 'मतुर' समुच्चयबोधक शब्द छेकै। समुच्चयबोधक शब्दों कें कोय-कोय विद्वानें 'संयोजक' कहै छै।

निपात

'निपात' ऐन्हों शब्दों कें कहलों जाय छै, जेकरा में अव्यये नाखी लिंग, वचन, पुरुष आदि के चलतें कोय विकार/परिवर्तन नैं होवै छै आरो जेकरों प्रयोग प्रायः कोनो पदों कें पूरा करै में करलों जाय छै।

अंगिका में निपात प्रयोगों मे खास करी कें आबै छै—तें, नी, नें, -ए/-एँ, -ओ, 'ओं, की ? आदि। उदाहरण लेली,

हम्में तें ई बात नै सुनलें छियै।

उपसर्ग

''उपसर्ग ऐन्हों शब्दांशों कें कहलों जाय छै जेकरों योग/प्रयोग कोनो शब्दों/पदों कें आगू में होला पर वै शब्दों/पदों कें मानै में विकार होय जाय छै। अन्, अनु, अति, अधि, अभि, प्र, परा, कु, सु आदि संस्कृत केरों, अन, उन, आदि हिन्दी केरों आरो बे, बद, ना आदि उर्दू केरों उपसर्ग छेकै। यैसिनी में कुछेकों के प्रयोग अंगिकाओ में, खास करी कें वैसिनी भाषा में ऐलों शब्दसिनी में, होय छै।''

—डॉ. डोमन साहु 'समीर'

नीचें अंगिका में चलित उपसर्ग आरो वैसिनी सें बनलों शब्द देलों जाय छै।

अ	—	अबोला, अभागलों, अजस
अति	—	अतिरिक्त, अत्याचार
अध	—	अधकपारी, अधकचरा, अधबैसू;
अधि	—	अधिकार, अध्यक्ष
अन	—	अनचिन्हार, अनठेकान, अनहिंसकों

अनु	–	अनुशासन, अनुकरण
अब	–	अबजस, अबढंगों
अव	–	अवस्था, अवनति
उन	–	उनचालीस, उनचास
कु	–	कुचलन, कुलच्छन
कम	–	कमसिन
खुश	–	खुशबू, खुशहाल
गेर	–	गैरहाजिरी, गैरसरकारी
दु	–	दुमुहिया, दुतरफी, दुलत्ती;
दुर (दुः)	–	दुरदिन, दुरगंजन;
नि	–	निपुततर, निपत्ता
निर् (निः)	–	निरदोस, निरधन
पर	–	परजात, परघरिया;
स/सु	–	सुवास,
कम	–	कमसिन, कमखौका;
गर	–	गरहाजिर, गरनिसाफ, गरवाजिब (गैर-वाजिब);
भर	–	भरपूर, भरपेट, भरदम (भरीदम)
भरी	–	भरीदम, भरीसक
ना	–	नाकबूल, नासमझ;
बे	–	बेशुमार, बे-मतलब, बेढंगा
बद	–	बदरंग, बदबू,
वि	–	विकास, विज्ञान
सम्	–	संतोष, संस्कार
सु	–	सुयोग, संयश
हर	–	हरदम, हर घड़ी, हरेक

प्रत्यय

उपसर्गे नाँखी प्रत्तयो एक प्रकारों के शब्दांशे छेकै, जेकरों प्रयोग शब्दों के पीछू में होय छै (उपसर्ग नाँखी आगू में नैं)। 'प्रत्यय' केरों माने

छेकै—शब्दों के साथें चलैवाला/लगैवाला (अव्यय); मतुर 'प्रत्यय' शब्दों कें पीछुए में लगै छै, जैं सें शब्दों के पद आरो अर्थ बदली जाय छै; जेना,
नाम (संज्ञा) + ई (प्रत्यय) = नामी (विशेषण),
लाल (विशेषण) + ई (प्रत्यय) = लाली (संज्ञा) आरनी।

प्रत्यय के प्रकार :

१. कृत आरो
२. तद्धित।

कृत् प्रत्यय धातु या क्रिया कें आखरिसों में लागै छै; जेना—बैठ् (धातु)—बैठकी (संज्ञा), कहबों (क्रिया)—कहैवाला, कहनिया/कहनिहार (संज्ञा) आरनी। है ढंगों सें बनलों शब्द 'कृदन्त शब्द' कहावै छै।

तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम आकि विशेषणों के साथें, आखरिसों में लागै छै; जेना—दोस्त (सं0)—दोस्ती (भाववाचक संज्ञा), खराव (वि0)—खराबी (भा0 सं0), आपनों (सर्व0)—अपनैती (भा0 सं0) इत्यादि।

अंगिका में संस्कृत, हिंदी, उर्दू-आर भाषा केरों प्रत्ययसिनी सें बनलों कर्त्तें नी शब्द चलै छै, मजकि वैसिनी केरों सूची इहाँ नैं दै कें खाली अंगिका में चलैवाला सिनी मुख्य-मुख्य कृदन्त आरो तद्धित शब्दों के बारे में, संक्षेपे में, विचार करलों जाय रहलों छै।

कृदन्त

धातु अथवा क्रिया पदों में कृत-प्रत्यय लगला पर

१. कर्तृवाचक
२. कर्मवाचक
३. करणवाचक
४. भाववाचक आरो
५. क्रियाद्योतक (कृदन्तीय विशेषण बनै छै। कुछेक उदाहरण लेलों जाय,

प्रत्यय		कृदन्त शब्द (धातु—बनलों शब्द)
अ	—	मार्—मार, काट्—काट
अककड़	—	बोल्—बोलक्कड़, बुझ्—बुझक्कड़
अन	—	चल्—चलन, मिल्—मिलन, आरनी

तद्धित

''संज्ञा, सर्वनाम आरो विशेषण कें आखरिसों में जोॅन प्रत्यय लागै छै ऊ 'तद्धित प्रत्यय' कहावै छै आरो तद्धित-प्रत्यय लगला पर बनलों शब्दों कें 'तद्धितान्त' शब्द कहलों जाय छै। कयेक-टा कृत्-आरो तद्धित-प्रत्यय एक्के रङ होय छै, मतरकि कृत्-प्रत्यय धातु या क्रिया में लागै छै, जबें कि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम या विशेषणों में लागै छै; दुन्नो में येहें अन्तर छै।''—डॉ0 डोमन साहु 'समीर'

तद्धित-प्रत्ययों कें योगों सें बनलों कुछेक उदाहरण नीचें देलों जाय रहलों छै,

१. कर्तृवाचक
२. भाववाचक
३. संबंधवाचक
४. ऊनार्थक आरो
५. विशेषण।

प्रत्यय		तद्धित शब्द (संज्ञा, सर्वनाम विशेषण--बनलों शब्द)
		(क) कर्तृवाचक
आड़ी	—	खेल—खेलाड़ी, जूआ—जुआड़ी
आर	—	सोना—सोनार, लोहा—लोहार
		(ख) भाववाचक
आड़	—	आगू—अगुवाड़, पीछू—पिछवाड़
आड़ी	—	आगू—अगाड़ी, पीछू—पिछाड़ी;
		(ग) संबंधवाचक
आर/आल	—	ससुर—ससुरार/सौसरार, ससुराल
इया	—	दादा—ददिया, नाना—ननिया
		(घ) ऊनार्थक/स्त्रीलिंगबोधक
इया	—	खाट—खटिया, हाट—हटिया
ई	—	मटका—मटकी, सिक्कड़—सिकड़ी

(ङ) विशेषण

अक्कड़ – बात–बतक्कड़, कथा–कथक्कड़,

आ – चैत–चैता, वैसाख–वैसाखा

समास

दू अथवा दू सें बेसी शब्द (पद) जबें आपनों-आपनों विभक्ति, प्रत्यय, कारक-चिन्ह-आर छोड़ी कें मिली जाय छै, तबें वै तरहों के मेलों कें 'समास' कहलों जाय छै। 'समास' केरों माने छेकै–'संक्षेप'।

समास केरों भेद (प्रकार)

समास मुख्य रूपें छों रकमों के होय छै–

१. द्वन्द्व
२. द्विगु
३. कर्मधारय
४. तत्पुरुष
५. बहुब्रीहि आरो
६. अव्ययीभाव समास।

द्वन्द्व समास

जहाँ दू या दू सें बेसी शब्दों के बीचें 'आरो' आकि 'अथवा' शब्द अनुक्त (छिपलों) रहै छै वहाँ 'द्वन्द्व समास' होय छै। उदाहरण–मूँ-कान, आय-काल

द्विगु समास

जोंन सामासिक पद केरों पहिलका पद संख्यावाचक रहै छै ओकरा 'द्विगु समास' कहलों जाय छै; जेना–तिरंगा, सतमासू, नौलक्खा ।

कर्मधारय समास

कर्मधारय समासों में विशेष्य-विशेषण अथवा उपमेय-उपमान केरों संहिता (मेल) रहै छै; जेना—चंद्रमुखी

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में जोंन सिनी शब्दों (पदों) के मेल (संहिता) होय छै, वैसिनी कें बीच केरों कारक-चिन्ह लुप्त रहै छै। उदाहरण—राजकुमार, लतगंजन, गछटपका, करमजरू।

बहुब्रीहि समास

जहाँ सामासिक पदों में ऐलों शब्दों के मुख्य अर्थ छोड़ी कें कोनो आन अर्थो के बोध होय छै वहाँ 'बहुब्रीहि समास' रहै छै; जेना—जलखै = पानी 'खैबों' (=पीबों), मतरकि 'जलखै केरों आन (खास) अर्थ होय छै—'अल्पाहार'

अव्ययीभाव समास

जोंन सामासिक पद केरों पहिलका पद 'अव्यय' रहै छै ओकरा 'अव्ययीभाव' समासों के अंतर्गत राखलों जाय छै। उदाहरण—भरसक, भरदम

विराम चिन्ह आरो एकरों प्रयोग

'हिन्दी व्याकरण' में कामता प्रसाद नें विराम चिन्ह कें स्पष्ट करतें लिखै छोंत कि शब्द आरो वाक्य के आपसी संबंध बतावै लें आरो पढ़े में यथास्थान रुकै लेली लेखन में जोंन चिन्हों के प्रयोग करलों जाय छै, ओकरे विराम चिन्ह कहलों जाय छै। बात साफ छै कि आपनों बात कें साफ-साफ बतावै लेली ओकरा स्पष्टता के साथ दुसरा तांय पहुँचाय लेली जे चिन्ह के जरूरत होय छै, वहें विराम चिन्ह छेकै। जों विराम चिन्ह के ठीक-ठीक प्रयोग नै करलों जाय तें अर्थ के अनर्थ हुएँ पारें। ई विराम

चिन्ह ही छेकै जेकरों कारण हम्में आदमी के हृदय के विभिन्न भाव कें ठीक-ठीक समझें पारै छियै।

बहुत प्राचीन काल यानी संस्कृत युगों में ओत्तें-ओत्तें विराम चिन्ह के प्रयोग नै होय छेलै, जत्तें आयकल अंगिका में पैलों जाय छै। जों बड़ों मोंन सें कहलों जाय तें अंगिका आकि हिन्दी में एत्तें-एत्तें विराम चिन्ह के प्रयोग अंग्रेजी भाषा के विराम चिन्ह के स्वीकार ही छेकै।

'अंगिका भाषा आरो व्याकरण में ई विराम चिन्ह पर विस्तार सें विचार करलों गेलों छै जेकरों अनुसार अंगिका में जे विराम चिन्ह प्रयोग में आय छै, ऊ निम्नलिखित छै,

१. पूर्ण विराम (।)
२. अर्द्ध विराम (;)
३. अल्प विराम (,)
४. विस्मयाधिवाचक (!)
५. प्रश्नवाचक (?)
६. निदेशक चिन्ह (–)
७. कोष्ठक ( )
८. विविरण चिन्ह :-
९. अवतरण चिन्ह (" ")
१०. योजक चिन्ह (-)

पूर्ण विराम–पूर्ण वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम के प्रयोग होय छै। जैसें–कवि अनिल शंकर झा ऐलात। गीतकार राम शर्मा 'अनल' अंगिका के नामी कवि छेकात।

अर्द्ध विराम–अर्द्धविराम के प्रयोग वहाँ होय छै, जहाँ अल्प विराम सें ज्यादा देर रुकै के जरूरत हुऍ। एक तरह सें पूर्ण विराम आरो अल्प विराम के बीच के चिन्ह छेकै। होना कें एकरों प्रयोग कम होय चललों छै। अधिकतर लोगें अल्प विराम सें ही काम चलाय लै छै। तहियो अर्द्ध विराम के प्रयोग-स्थल हमरा सिनी कें जरूरे जानना चाहियों। ई चिन्ह के प्रयोग सामान्यतः

(क) उदाहरणसूचक शब्द 'जेना' शब्द के पहिलें। उदाहरण लें—पड़ला-लिखला कें पंडित कहै के रिवाज छै; जेना, पंडित गोकुल नाथ, पंडित देवकीनन्दन।

(ख) मिश्र आकि संयुक्त वाक्य में विपरीत अर्थ प्रकट करै वाला उपवाक्य के बीचों में एकरों प्रयोग सामान्यतः होय छै; जेना, लोगें ओकरा पत्थर मारतें रहलै; ऊ हाँसतें रहलै।

(ग) जहाँ एक वाक्य या वाक्यांश के साथ दूसरा के दूर सें संबंध बताना रहें, वहाँ अर्द्धविराम के चिन्ह के प्रयोग होय छै; जेना, मंच बनलों छै; कवि ऐलों छै; भीड़ उमड़लों छै; कविता पाठ बन्द छै।

अल्प विराम—ई न्यूनतम विराम के चिन्ह छेकै। ई मानलों जाय छै कि 'एक' के बोलै में जत्तें समय लागै छै, ओतने समय अल्पविराम में। अल्पविरामों के प्रयोग यै सिनी स्थिति में होय छै,

१. समानपदी शब्द सिनी कें अलग करै में; जेना गोविन्द आपनों घर पर किताब, कॉपी, पेंसिल खोजवो करी रहलों छै।

२. पढ़ै वक्ती मूँ जहाँ थोड़ों समय लेली रुकें; जेना, ओकरा वहाँ जाना छेलै, मतरकि भांगठों लागी गेलै।

३. जों संबोधन शब्द वाक्य के शुरू में रहें, तें संबोधन शब्द के बाद आरो जों संबोधन शब्द बीच में रहें, तबें अल्प विराम संबोधन शब्द के आगू आरो पीछू प्रयुक्त होय छै; जेना, गोपाल, तोहें घोंर जा। देखी रहलों छियौ, राम, है की करी रहलों छैं !

४. उद्धरण के चेन्हों के पहिलें; जेना, राही कहलकै, ''हम्में हास्य कविता पढ़वै।''

५. 'हों' आरो 'नै' के बादो अल्प विराम के चेन्हों लागै छै; जेना, हों, ऊ कल्हे गेलों छै। नै, ऊ नै जैतै।

६. वाक्यांश आकि क्रिया विशेषण कें अलग करै वास्तें; जेना, अंगिका के कवि सिनी, समय-समय पर, एकजुट होय कें काम करै छोंत।

७. वाक्यांश आकि शब्द के पुनरावृति पर; जेना, कोयल, मैना, कौआ, सब चुप छै। कवि सिनी, श्रोता सिनी बक्खो बैठलों छेलै।

८. जबें कर्त्ता क्रिया सें दूर होय जाय, तें कर्त्ता के पहिलें अल्प विराम

के चेन्हों लागै छै; जेना, मुरारी मिश्र, जे हास्य रस के कवि छेलात, पढ़लकात।

९. जबें समानाधिकरण वाक्य रों बीच समुच्यबोधक नै रहै छै, तबें ओकरों बीच एकरों प्रयोग होय छै; जेना, कवियो गेलै, श्रोताओ गेलै, मंचो उठलै, चर्चाओ बंद होय गेलै।

विष्मयाधिबोधक चिन्ह—ई चिन्ह के प्रयोग नीचें लिखलों हालातों में होय छै,

१. दुख, खुशी, भय, आश्चर्य आरनी मनोवेग सूचक वाक्य, उपवाक्य, शब्द आरनी के आखरी में ई चिन्ह आवै छै; जेना, हाय ! मेला तें उजड़ी गेलै।

२. संज्ञा संबोधन रों संकेत रहें; जेना, रे छौड़ा !

३. प्रश्ववाचक वाक्य के आखरी में जहाँ मनोवेग लक्षित हुएँ; जेना, देखै में नै आवै छौं ! सुनै नैं छैं की !

प्रश्नवाचक—प्रश्नवाचक चिन्ह के प्रयोग निम्नांकित दशा में होय छै,

१. सब तरह के प्रश्नवाचक वाक्य के आखरी में ई आवै छै; जेना, तोहें कन्नें चललैं ? बुधुआ की-की खैलकै ?

२. जों वाक्य में कहीं संदेहात्मक या व्यंग्यात्मक वाक्य रहें, तें वहाँ ई चिन्ह के प्रयोग होय छै; जेना, हुनी बड़का विद्वान ?

यहाँ याद रखना चाहियों कि जहाँ ढेर सिनी उपवाक्य रहें आरो ऊ सिनी एक्के प्रधान वाक्य पर निर्भर रहें तें उपवाक्य के आखरी में अल्पविराम आरो सबसें आखरी में एक प्रश्नवाचक चिन्ह राखलों जाय छै; जेना, तोहें वहाँ कैन्हें नी गेलैं, कैन्हें नी मदद करलैं, कैन्हें नी ढ़ाढ़स देलैं, कैन्हें नी घोंर लै ऐलैं ?

निदेशक—सामान्यतः निदेशक चिन्ह के प्रयोग ई हालतों में होय छै,

१. जों वाक्य में कोय भाव के प्रवाह में गतिरोध उत्पन्न होय जाय; जेना, हम्में ओकरा लें की नै करलियै, पढ़ैलियै, लिखैलियै—मतरकि सब बेरथ।

२. सामानाधिकरण शब्द, वाक्य आरो वाक्यांश के बीचों में; जेना, साहित्य

सें जीवन मूल्य–प्रेम, दया, उत्सर्ग आरनी– के प्रेरणा मिलै छै ।
३. प्रायः 'निम्नांकित' आकि 'निम्नलिखित' के बाद ई चिन्ह के प्रयोग देखलों जाय छै; जेना, मंच पर कवि के मात खाय के निम्नांकित कारण छै–आपनों कविता के मानें बतावें लागै छै।
४. भगवानें सब्भे कुछ दै छै–दौलत, सन्तान, सुख-शांति।
५. वक्ता सहित वाक्य उद्धृत करै में; जेना, भीड़–हमरा सिनी उमताय गेलों छी।
६. कोय अवतरण के बाद आरो लेख के पहिलें; जेना,

धानों के कियारी-आरी झूमै छै किसनमां
से झूमी-झूमी ना, हो झूमी-झूमी ना।

–रामधारी सिंह 'काव्यतीर्थ'

कोष्ठक–कोष्ठक चिन्ह के जरूरत निम्नांकित दशा में होय छै–
१. कोय रचना कें रूपान्तर करै के क्रम में बाहर सें आनलों शब्द के साथें; जेना, पराधीन (को) सपनहु सुख नांही।
२. क्रमसूचक अंक या अक्षर साथें; जेना, (क), (ख), (१), (२)
३. समानार्थी वाक्य के साथें; जेना, हब्शी (नीग्रो) अफ्रिका देश के जाति छेकै।
४. नाटक आरनी के बीच में भेष-भूषा कें बतावै लेली ई चिन्ह के जरूरत पड़ै छै; जेना, गोसांय–है ले, (हाथ नीचें करतें) नीचें राखलियौ ।

विवरण चिन्ह–केकरों कथन उद्धृत करै में ई चिन्ह के जरूरत होय छै; जेना, उपदेश देतें छोटे लाल मंडल 'काव्यतीर्थ' बोललात, ''ई संसार तें पानी, नै जानौं कखनी सूखी जाय।''
२. बातों आकि विषय कें समझाय लेली विवरण चिन्ह के प्रयोग होय छै, हांलाकि एकरों प्रयोग आबें क्षीण होय रहलों छै; जेना, नारी के तीन रूप मानलों गेलों छै–'हस्तिनी', 'शंखनी', 'पद्मिनी'।

योजक चिन्ह–योजक चिन्ह के प्रयोग बहुत स्थलों पर बहुत रङ होय छै, जे निम्नांकित छै,

१. तत्पुरुष आरो द्वन्द्व समास में; जेना, रात-रानी, राज-पुरुष, लोटा-डोरी, बेटा-बेटी।

२. जों मध्य के बोध हुएँ,

राम-लखन-संवाद। मुरारी-राही-संवाद।

३. जहाँ द्वित्व होय छै वहाँ एकरों प्रयोग होय छै; जेना, देखी-देखी। हाँसी-हाँसी।

४. जों लिखतें वक्ती कोय शब्द पंक्ति के आखिर में पूरा नै होय छै, तें ऊ शब्द के आखिर में ई चिन्ह लगैलों जाय छै; जेना,

कठोर काम करै में त्रिलो-

की नाथ दिवाकर रों मोंन नै लागै छै।

आरो-आरो विराम चिन्ह :

१. वर्जन चिन्ह (.....)—जबें वाक्य में कोय बात कें गोपनीय राखै लें चाहै छै तें हेनों चिन्ह के प्रयोग होय छै; जेना, जानै छौ, वें गाली लगाय कें की बोललौं.....छोड़ों की कहबौं।

२. लाघव चिन्ह (.)—नामी शब्द आकि जे शब्द कें बार-बार लिखै लें पड़ै छै, वहाँ प्रायः ओकरों पहिलों अक्षर लिखी कें लाघव चिन्ह लगाय देलों जाय छै; जेना, ऊ ति. ४.८ कें ऐतै।

३. हंस पद (ˆ)—लिखै वक्ती जबें वाक्य में कोय अंश छूटी जाय छै, तबें ठीक वहें स्थानों पर हंसपद चिन्ह लगाय कें छुटलों शब्द या वाक्यांश लिखी देलों जाय छै; जेना,

जरूरी

कविता करै वास्तें यहू ˆ छै कि छंद के ज्ञान हुएँ।

कहवी

- अमीरों के बिगाड़लों गाँव
  आरो बापों के बिगड़लों बेटा कहीं सुधरै छै।
- अगहनों में मूसाहौ के सात बहू।
- आपनों हारलों, बहुओं के मारलों के बोलै छै।
- आगू नाथ नञ पाछूं पगहा।
- आप रूप भोजन, पर रूप सिंगार।
- आमों के आम, गुठली के दाम।
- एक्के नरैना–लेलकै सौंसे घरैना।
- कालकों लठैत, आयकों डकैत।
- काठों के हड़िया एक्के बार।
- कुटनी घोंर चललों जैतै, सास-पुतोहू एक्के होतै।
- कदुवा पर सितुवा चोखों।
- कानी गाय के अलगे बथान।
- कौआ रे कक्का आम दे पक्का।
- खाय कें पसरियों, मारी कें ससरियों।
- खुट्टा अगोरनी माय-बाप चोरनी।
- गप्पी मरलक बेंग।
- छों-छों पसेरी कें एके टेङ।
- गिरस्थ गेलों घोंर, दहिनें बामें होंर।
- गोनू कें गाय नञ बलाय।
- घोंर फुटै, जवार लूटै।
- घैलों भरी पानी, बटेसर रानी।
- चट लगन, पट बीहा।
- चमड़ी जाय पर दमड़ी नै जाय।
- चोर-चोर मौसेरों भाय।
- चौबे गेलों छब्बे बनै, दुब्बे भैके ऐलों।
- छछून्दर के माथा चमेली के तेल।

- छौनी पर फूस नञ ड्योढ़ी पर नाच।
- छोटों मूं, बड़ों बात।
- जब तलुक साँस, जब तलुक आस।
- जबें नाचने छै तें घोघो की ?
- जहाँ गाछ नञ बिरिछ, तहाँ रेंड़ परधान।
- जहाँ नै जाय रवि, तहाँ जाय कवि।
- जागै सें पावै, सूतै सें खोवै।
- जेकरों लाठी, ओकरे भैंस।
- जांतों जनरो आरो मचान
- भादवों में राखै तीन्हीं परान।
- जेकरों बनरी वहें नचावै।
- जैसनों देश वैसनों भेष।
- जोरू, जमाय, भैगिना—तीन नै अपना।
- जोरू न जांतों खाय-पीबी मोटों।
- झरकलों मूँ झाँपलै निक्कों।
- झटपट की घानी; आधों घी, आधों पानी।
- डायनी के जी ढकनी में।
- ढाक के तीन पात।
- तीन में न तेरों में।
- तीन कनौजिया तेरों चुल्हों।
- थूकों सें सत्तू नै सनथौं।
- थूकी कें चाटबों।
- दाल-भात में मूसर चन्द।
- दही में मसुर।
- दसो कें लाठी एकों कें बोझों।
- दिनें मेघ, राती तारा
  होबे करतै अबकी मारा।
- न बासी बचै, न कुत्ता खाय।
- न रहतै बाँस, न बजतै बाँसुरी।
- न नौ मन तेल होतै, न राधा नाचतै।

- नाच गे मैना भतारें देतौ ऐना।
- नाच बनरी नाच गे, पैसा देबौ पाँच गे।
- पहिनें भीतर, तबें देवता-पीतर।
- पीभें मांड़ तें बनभें सांढ़।
- पेट भेलों भारी—खटिया दें पारी।
- पोथी नै पतरा, अनमुन जतरा।
- पोसले कुत्ता काटै छै।
- पूसों के खेती—नदी के रेती।
- फरले गाछ झुकै छै।
- भौजी के भाय बड्डी अताय।
- बेटी आरो धरती कहीं परती रहलों छै।
- बरे बुड़लैलों तें दहेज के लेतै।
- बनैला पर बरियो में टांग होय छै।
- बिलाय के भागें सीका टुटै।
- बानर की जानै आदी के सवाद।
- बानरों के मूं में नारियल।
- भला लोग जाड़ा सें मरै आरो गीदड़ें बांधै गाँती।
- मान न मान हमें तोरों मेहमान।
- मोंन चंगा तें कठौती में गंगा।
- रानियो-पानियो कहीं छुतावै छै।
- लुक्खी बिलैया दाल-भागत खो
  सैयां बोलैलकौ पटना जो।
- सुअरी के गू—नै नीपै लायक, नै पोतै लायक।
- सौकीन बुढ़िया, चटाय कें लहङों।
- हाथों में अगुवा सीथीं सिनूर
  मौगी नाचै सांय हुजूर।
- हथिया के झोंर धान भरी घोंर।
- हंसुवा के बीहा में खुरपी के गीत।

मुहावरा

- आँख चुरैवोॅ—सामना नै ऐवोॅ
- आँख दिखैवोॅ—गुस्सा दिखैवोॅ
- आँख रोॅ काँटा होवोॅ—दुश्मन होवोॅ
- आग में घी डालवोॅ—गुस्सा भड़कैवोॅ
- आँसू पोछवोॅ—सान्त्वना देवोॅ
- ईंट सें ईंट बजैवोॅ—तबाह करी देवोॅ
- ऊँगली उठैवोॅ—दोष मढ़वोॅ
- ओखली में मूड़ी देवोॅ—मुसीबत मोल लेवोॅ
- कमर टूटवोॅ—खूब नुकसान होवोॅ
- कलेजा रोॅ टुकड़ा—खूब प्यारा
- गाल बजैवोॅ—बढ़ाय-चढ़ाय कें प्रशंसा करवोॅ
- गुड़-गोबर करवोॅ—काम बिगाड़वोॅ
- छठी रोॅ दूध याद ऐवोॅ—परेशानी महसूस करवोॅ
- छोटोॅ मुँह बड़ोॅ बात—आपनोॅ सीमा सें बड़ी कें बोलवोॅ
- पहाड़ टूटवोॅ—घोर विपत्ति में पड़वोॅ
- पानी-पानी होय जैवोॅ—घोर लज्जा आवोॅ
- हाथ फैलैवोॅ—केकरो सें कुच्छु माँगवोॅ
- होश उड़वोॅ—डरी जैवोॅ

वाक्यरूप

वाक्य-रचना

वाक्य के परिभाषा :

एक पूर्ण विचार प्रकट करै वाला शब्द-समूह वाक्य कहावै छै ।

—कामता प्रसाद गुरू

आरो जब तांय शब्द खास परिपाटी सें नै सजैलोॅ जाय, तब तांय

एक पूर्ण विचार ऊ समूह सें पैलों नै जावें सकै छै। यै लेली जबें ई कहलों जाय छै कि वाक्य खास परिपाटी सें सजैलों गेलों सार्थक शब्दों के समूह छेकै, तें एकरों मतलब छेकै कि वै में योग्यता, आकांक्षा आरो आसक्ति के गुण विद्यमान छै।

—डॉ. अमरेन्द्र (अंगिका भाषा आरो व्याकरण)

योग्यता आकांक्षा आसक्त संबंध में 'अंगिका भाषा आरो व्याकरण' के विचार ई तरह सें छै—

योग्यता—दू के बीच में संबंध-स्थापन में जहाँ कोय अड़चन नै आवें, वही योग्यता छेकै। जों कहलों जाय कि 'गाय उड़ी गेलै', तें यहाँ ई अड़चन पैदा होय जाय छै कि गाय उड़ें केना पारै छै। यै कारण सें ई वाक्य योग्यताविहीन कहलैलों जैतै। योग्यता के दृष्टि सें शुद्ध वाक्य होतै—गाय दौड़ी रहलों छै।

आकांक्षा—भाषाविद् डॉ0 भोलानाथ तिवारी नें आपनों पुस्तक 'हिन्दी भाषा का सरल अध्ययन' में आकांक्षा कें स्पष्ट करतें हुएँ लिखलें छै कि आकांक्षा के शाब्दिक अर्थ छेकै—इच्छा। वाक्य कें भाव के दृष्टि सें एत्तें पूर्ण होना चाहियों कि भाव कें समझै लें आरो जानै के इच्छा या आवश्यकते नै रही जाय। दूसरों शब्द में कोय हेनों शब्द आकि शब्द-समूह के कमी नै होय के चाही कि जैसें अर्थे नै स्पष्ट हुएँ ।

वाक्य के वाक्यार्थ कें समझै लेली जिज्ञासा भाव के बनलों रहवों आकांक्षा छेकै। जों ई कहलों जाय कि 'कविता कविउंडन पटकी छै सुन्नर' तें हेनों असंबंद्ध शब्दसमूह सें नै तें कोय अर्थ निकलै छै, नै हेनों वाक्य कें सुनै में होय रुचिये पैदा हुएँ पारें।

आसक्ति (सन्धि)—आसक्ति के मतलब होय छै—निकटता। कहै के मतलब ई छेकै कि एक वाक्य में जत्तें शब्द-समूह छै, ओकरों उच्चारण एक्के समय में हुएँ पारें। जों वाक्य हेना छै, 'डॉ0 कुशवाहा जी.....परसूं. .....गीत संध्या में.....भाग.....नै.....लेतात।' तें यै में योग्यता, आकांक्षा के होला के बादो आसक्ति के अभाव में आदर्श वाक्य नै मानलों जैतै।

जाहिर छै कि एक आदर्श वाक्य लेली वै में योग्यता, आकांक्षा आरो आसक्ति के गुण के होना एकदम जरूरी छै।

अर्थ केरों दृष्टि सें वाक्य रचना भेद

अर्थ केरों दृष्टि सें वाक्य आठ तरहों के होय छै; जेना–

विधानार्थक–जेकरा सें कोनो बात (काम) होबों बुझलों जाय; जेना–'रामलाल ऐलै' (सरल वाक्य), 'हम्में सुनलियै कि रामलाल आवी रहलों छै' (मिश्र वाक्य), 'ऊ ऐलै, मजकि बड्डी देरी करी देलकै' (संयुक्त वाक्य) आरनी।

निषेधार्थक–जेकरा सें कोनो बात (काम) नै होबों बुझलों जाय; जेना–'रामलाल नैं ऐलै' (सरल वाक्य), 'हम्में नै सुनलियै कि रामलाल आवी रहलों छै' (मिश्र वाक्य), 'ऊ ऐलै तें नहियें, कोनो खभरो नै देलकै' (संयुक्त वाक्य) आरनी।

आज्ञार्थक–जेकरा सें कोनो तरहों के आज्ञा (हुकुम) देवों बुझलों जाय; जेना–'तों जो, है काम करें, बैठलों नै रहें' आरनी।

प्रश्नार्थक–जेकरा सें कोनो प्रश्न (सवाल) पूछबों बुझलों जाय; जेना–'तों की करै छैं ?', 'वहाँ के-के छै ?', 'ई केकरों कहलों छेकै ?' आरनी।

निर्देशार्थक–जेकरा सें कोनो तरह के निवेदन, निर्देश आकि उपदेश केरों भाव बुझलों जाय; जेना–'है काम करलों जाय', 'हौ काम होय जाना चाहियों', 'सभै कें मिली-जुली कें रहना चाहियों' आरनी।

इच्छार्थक–जेकरा सें कोनो तरह के इच्छा अथवा शुभकामना बुझलों जाय; जेना–'देश आगू बढ़ै', 'सब्भै कें सुमति होवें' आरनी।

विस्मयार्थक—जेकरा सें कोनो बातों पर खुशी, अफसोस, अचरज आरनी केरों भाव बुझलों जाय; जेना—'वाह, ई तें खूब भेलै'; 'हाय-हाय, बेचारा बड्डी दुक्खों में छै', 'अरे, ऊ फेल होय गेलै !' आरनी।

संदेहार्थक—जेकरा सें कोनो बातों के बारे में कोय संदेह केरों भाव निकलें; जेना—'किसुन ऐलों होतै', 'तोहें सुनलें होभैं', 'ऊ आबी रहलों होतै' आरनी।

संकेतार्थक—जेकरा सें कोनो बातों के संकेत मिलें; जेना—'बरखा होय जैतियै तें धान नै मरतियै', 'तोहें चलों तें हम्हूँ जाँव' आरनी ।

रचना के अनुसार वाक्य-भेद

(क) सरल वाक्य
(ख) जटिल वाक्य यानी मिश्र वाक्य आरो
(ग) संयुक्त वाक्य

साधारण वाक्य—व्याकरणाचार्य कामता प्रसाद गुरू नें लिखलें छै कि जोंन वाक्य में एक उद्देश्य आरो एक विधेह रहें, ओकरै साधारण या सरल वाक्य कहलों जाय छै; जेना—'त्रिलोकी नाथ दिवाकर कवि छेकात', 'अंजनी कुमार शर्मा ऐलात', 'सोहन प्रसाद चौबे आवै छोंत ।'

मिश्र वाक्य—जोंन वाक्य में एक मुख्य उद्देश्य आरो विधेय के अतिरिक्त दू या दू सें अधिक समापिका क्रिया रहें, वहें मिश्र या जटिल वाक्य छेकै। कहै के मतलब ई छेकै कि हेनों वाक्य में कै उद्देश्य आरो कै विधेय होय छै। मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तें होल्हैं छै, ओकरों बादो ओकरा सें अधिक ओकरों आश्रित उपवाक्य होय छै; जेना—

१. हेनों के छै, जे महाकवि सुमन सूरो कें नै जानै छै !
२. हम्में ओकरा कहलियै कि तोहें वहाँ नै जा।

संयुक्त वाक्य—भाषाविद् कामता प्रसाद गुरू के अनुसार जौंन वाक्य में साधारण आकि मिश्र वाक्य के मेल रहै छै, ओकरै संयुक्त वाक्य कहलौं जाय छै। संयुक्त वाक्य के मुख्य वाक्यों कें समानाधिकरण उपवाक्य कहलौं जाय छै, कैन्हें कि ऊ सब एक-दूसरा पर आश्रित नै रहै छै। उदाहरण लेली—सौंसे प्रजा आबें शांतिपूर्वक एक-दूसरा सें व्यवहार करै छै आरो जाति-द्वेष क्रम सें घटलौं जाय छै। (दू साधारण वाक्य), सिंह में सूंघै के शक्ति नै होय छै; यही लें जबें कोय शिकार ओकरौं नजरी सें ओझल होय जाय छै, तबें ऊ आपनौं जग्घा पर लौटी आवै छै। (एक साधारण, आरो एक मिश्र वाक्य)

जबें भाप जमीन के नगीच एकट्ठा दिखाय दै छै; तबें ओकरा कुहरा कहै छै; आरो जबें ऊ हवा में कुछ ऊपर दिखाय दै छै; तबें ओकरा मेघ आकि बादल कहलौं जाय छै। (कामता प्रसाद गुरू—हिन्दी व्याकरण, पृ. ५१०)

उद्देश्य आरो विधेय

उद्देश्य—जौंन वस्तु के विषय में कुछ कहलौं जाय छै, ओकरा सूचित करै वाला शब्द-समूह कें उद्देश्य कहलौं जाय छै, जेना, आत्मा अमर छै, घोड़ा दौड़ी रहलौं छै, राम नें रावण कें मारलकै। है सिनी वाक्यों में 'आत्मा', 'घोड़ा' आरो 'राम नें' उद्देश्य छेकै, कैन्हें कि यै सब के विषय में कुछ कहलौं गेलौं छै अर्थात विधान करलौं गेलौं छै।

—कामता प्रसाद गुरू, हिन्दी व्याकरण, पृ. ५०६

विधेय—उद्देश्य के विषय में जे विधान करलौं जाय छै, ओकरा सूचित करै वाला शब्द सिनी कें विधेय कहलौं जाय छै, जेना ऊपर लिखलौं गेलौं वाक्य सिनी में (अर्थात आत्मा अमर छै, घोड़ा दौड़ी रहलौं छै, राम नें रावण कें मारलकै) आत्मा, घोड़ा, राम नें, ई उद्देश्य सिनी के विषय में क्रमशः 'अमर छै', 'दौड़ी रहलौं छै', 'रावण कें मारलकै', ई विधान करलौं गेलौं छै, यै लेली ई सिनी विधेय कहलैतै ।

—कामता प्रसाद गुरू, हिन्दी व्याकरण, पृ. ५०६

उद्देश्य के विस्तार :

उद्देश्य के विशेषता बतलावै वाला शब्द आकि शब्द-समूह उद्देश्य के विस्तार कहलावै छै, जेना, बढ़िया कवि मुग्ध करै छै, यै में 'बढ़िया' उद्देश्य के विस्तार छेकै।

विधेय के विस्तार :

विधेय के विशेषता बतलावैवाला शब्द या शब्द-समूह कें विधेय के विस्तार कहलों जाय छै, जेना—दिनेश तपन जी झटकी-झटकी चलै छोंत। यहाँ 'झटकी-झटकी' विधेय 'चलै छै' के विशेषता बतलावै छै, यै लेली ई विधेय के विस्तार छेकै।

वाक्य विश्लेषण

वाक्य-विश्लेषण में पद आकि पदबन्ध कें ओकरों व्याकरणिक सम्बन्ध के आगू रखी कें अलगैलों जाय छै; जेना, बग-बग कुरता पहिनलें अंजनी जी रेघाय-रेघाय कविता पढ़ी रहलों छोंत। यै में 'बग-बग कुरता' उद्देश्य (अंजनी जी) के विस्तार आरो 'रेघाय-रेघाय' विधेय के विस्तार छेकै—ई आरनी कें बतैवों ही वाक्य-विश्लेषण छेकै । वाक्य-विश्लेषण में सरल, मिश्र, संयुक्त वाक्य-भेद पर भी विचार करलों जाय छै।

वाक्य-संश्लेषण

कै-एक सरल वाक्य कें मिश्र आकि संयुक्त वाक्य में रखबों ही वाक्य-संश्लेषण कहावै छै। उदाहरण लें—

मैदान में मंच छै। मंच पर कवि छै। कवि कविता पढ़ी रहलों छै।

ई छोटों-छोटों सरल वाक्य कें संश्लेषित रूपों में हेना कें राखलों जावें सकै छै—मैदान में बनलों मंच पर कवि कविता पढ़ी रहलों छै।

अर्थतत्व

अर्थविज्ञान

अर्थ शब्द रूपी वृक्ष के फूल-फल छेकै। ऋषि यास्क के ई कथन सें ही समझलों जावें सकै छै कि शब्द रों सार्थकता अर्थे में निहित छै, अर्थ के बिना शब्द ठूंठ छै, निष्प्राण छै।

प्रमुख रूपों सें यहाँ प्रश्न उठै छै कि अर्थ के ज्ञान केना होय छै। यैपर भारतीय विद्वानों साथें विदेशी भाषाविद नें खूब विचार करलें छै। जों सब मत मिलाय कें विचारलो जाय, तें ई ज्ञात होय छै कि अर्थज्ञान के दू प्रमुख साधन छै, (१) आत्म-प्रत्यक्ष (२) पर-प्रत्यक्ष।

(१) अपनों देखलों, अपनों अनुभव ही आत्म-प्रत्यक्ष छेकै आरो हेनों ज्ञान बेसी प्रमाणिक मानलों जाय छै। जना—हाथी, कदीमा, आता, आरनी देखी कें ओकरों बारे में अनुभव प्राप्त करवों। आत्म-प्रत्यक्ष के भी दू भेद मानलों गेलों छै—(१) बाह्य इन्द्रिय-जन्य (२) अन्तरिन्द्रिय-जन्य।

शब्द-अर्थ-संबंध

शब्द आरो अर्थ के संबंध स्थापित करावै में संकेतग्रह, आवाय-उद्वाय आरो बिम्ब-निर्माण के मुख्य भूमिका होय छै। ई पारिभाषिक शब्द सिनी के समझी लेनाहौ जरूरी छै :

(१) संकेतग्रह :

सब भाषा में प्रत्येक शब्द केरों कोय निश्चित अर्थ होय छै। तें कोय शब्द सें कोय अर्थ के संबंध स्थापित करवों 'संकेतग्रह' कहावै छै। कोइयो भाषा के शब्द के जे अर्थ होय छै, ऊ संकेतित हुऐ छै; ई संकेतित अर्थ स्वेच्छा-जन्य भी हुएँ पारें आरो यादृच्छिक भी। कोय-कोय व्यक्ति अपनों इच्छा सें कोय अर्थ लें कोय शब्द के प्रयोग करै छै, मतुर ज्यादातर

यहा होय छै कि कोय विशेष अर्थ लें ही कोय शब्द के प्रयोग लोक में हुऐ छै।

(२) आवाय-उद्‌वाय :

कोय शब्द के बनलों रहलै पर कोय अर्थ बनलों रहें, ऊ आवाय (अन्वय) छेकै आरो जे शब्द के नै होला पर अर्थो नै रहें, ऊ उद्‌वाय कहैतै। आवाय-उद्‌वाय पद्धत्ति सें ही बालक कोय शब्द के अर्थज्ञान प्राप्त करै छै।

(३) बिम्बनिर्माण :

मनोवैज्ञानिक के मोताबिक प्रत्येक शब्द के चित्र मनुष्य के मस्तिष्क में सुरक्षित रहै छै, जे चित्र ऊ शब्द के साथें जागृत होय जाय छै। कोय शब्द के अर्थज्ञान के पीछू यही बिम्बनिर्माण काम करै छै।

संकेतग्रह के साधन

संकेतग्रह के निम्नांकित आठ साधन मानलों गेलों छै—(१) व्याकरण, (२) उपमान, (३) कोश, (४) आप्त वाक्य, (५) व्यवहार, (६) व्याख्या, (७) विवृत्ति, (८) प्रसिद्ध पद रों सानिध्य।

यै सब में व्याकरण-कोश के महत्व तें सर्वविदित छै; अर्थज्ञान करावै में उपमान आरो आप्त वाक्य भी कम भूमिका नै निभावै छै। उपमान सादृश्य विधान छेकै, जबें कि आप्त के मतलब यथार्थवक्ता होय छै। गुरु, वेद आरनी यही कोटि में ऐतै।

हेन्है कें लोक व्यवहार सें ही अधिक-सें-अधिक शब्द के अर्थ ज्ञान प्राप्त करै छियै, मतुर वाक्यशेष यानी प्रसंग या प्रकरण से भी कोय शब्द के अर्थज्ञान होय छै, है निर्विवाद छै।

व्याख्या सें तें अर्थज्ञान होवे करै छै, प्रसिद्ध पद के सानिध्य सें भी अर्थ के ज्ञान होय छै; जेना—सुधा के अर्थ अमृत होय छै, तें चूना भी होय छै। जबें भवन के साथें सुधा के प्रयोग होतै, तें ऊ चुनाहै के संबंध में होतै।

शब्दशक्ति

शब्द के अर्थ बताय में शब्दशक्ति के भी प्रमुख भूमिका होय छै।

तें शब्द की छेकै? ई ध्वनि समूह के योग छेकै आरो ई योग सें हम्में जे समझै छियै, वही अर्थ छेकै। काव्यशास्त्र में शब्द के बोधक आरो अर्थ के बोध्य नामों सें जानलों जाय छै। बोध्य यानी जेकरों बोध हुऍ। तें, प्रश्न उठै छै कि कोय शब्द के अर्थ केना प्राप्त होय छै। ई भाषाविज्ञान के भी विषय छेकै। तें सबसें पहलें हमरा ई जानी लेना चाहीं कि ई कोय जरूरी नै छै कि कोय शब्द एक्के मानी दै छै। एक शब्द के ढेर अर्थ हुऍ पारें। ओकरों सही अर्थ पावै के कै आधार होय छै। जेना : के बोलै छै? केकरा बोलै छै? कखनी बोली रहलो छै? कहाँ बोली रहलो छै? आरनी-आरनी।

उदाहरण लेली एक शब्द 'गधा' ही लेलों जाय। एकरों सीधा-सीधा अर्थ पशु विशेष होय छै। मतर कोय आदमी के गधा कहला पर एकरों सीधावाला अर्थ बदली कें मूर्ख होय जाय छै। तें, एकरा सें स्पष्ट होय छै कि एक शब्द के एक्के मानी नै होय छै, ढेरे मानी होय छै। तें कोय शब्द के कोय विशेष अर्थ केना कें प्राप्त होय छै। ऊ प्राप्त होय छै शब्द केरों शक्ति सें, जे शब्द-शक्ति कहावै छै। ई शब्द शक्ति तीन किसिम के होय छै :

१. अभिधा
२. लक्षणा
३. व्यंजना

आरो यहा तीन शक्ति के कारण शब्द भी तीन किसिम के होय जाय छै :

१. वाचक
२. लक्षक
३. व्यंजक

शब्दशक्ति से प्राप्त तीनो किसिम के अर्थ कें :

१. वाच्य

२. लक्ष्य
३. व्यंग्य
कहलों जाय छै।

अभिधा शब्दशक्ति : शब्द के जोन शक्ति सें शब्द के प्रसिद्ध अर्थ मिलै छै, ऊ अभिधा कहावै छै आरो ई तें जानले बात छेकै कि प्रत्येक शब्द के कोय-न-कोय प्रसिद्ध अर्थ होय छै जे शब्द सुनथैं ऊ प्रसिद्ध अर्थ हमरों सामना प्रकट होय जाय छै, जेना बाघ कहला से एक पशु विशेष के अर्थ हमरा मिलै छै, तें यैमें प्राप्त प्रसिद्ध अर्थ दैवाला शब्द वाचक छेकै, प्राप्त अर्थ वाच्य आरो ई अर्थ प्राप्त करावैवाला शक्ति अभिधा कहावै छै।

लक्षणा शब्दशक्ति : मुख्य अर्थ के बोध होला पर रूढ़ि या प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ वाच्य सें भिन्न अर्थ के बोध करावैवाला शब्द-शक्ति कें लक्षणा कहलों जाय छै। तें एकरा सें प्रकट होय छै कि लक्षणा में चार बात प्रमुख होय छै :
१. मुख्यार्थ में बाधा
२. मुख्य अर्थ से अलग कोय अलग अर्थ के ज्ञान
३. अन्य अर्थ के मुख्य अर्थ सें संबद्धता
४. भिन्न अर्थ के प्रतीति में रूढ़ी या प्रयोजन के सक्रियता।

चाहे रूढ़ी रहे आकि प्रयोजन, मुख्यार्थ सें ओकरों संबंध केन्हौ कें नै कटें पारें; नै तें प्रयोजन के आधार पर आकाश के अर्थ पाताल लगावें लगतै। मुख्यार्थ आरो गौणार्थ में अन्तरसंबंध होना जरूरी छै। रूढ़ आरो प्रयोजन के आधार पर लक्षणा के दू भेद होय छै :
१. प्रयोजनवती लक्षणा
२ रूढ़ा लक्षणा

आगू चली कें प्रयोजनवती लक्षणा के भी दू भेद मानलों गेलों छै :
१. गौणी
२. शुद्धा

सादृश्य संबंध में जहाँ गौणी लक्षणा होय छै, वहाँ अन्य संबंध

के कारण शुद्धा लक्षणा। ई दोनो के एक-एक उदाहरण नीचें छै :
१. ओकरों मुंह चाँद छेकै—यहाँ सादृश्य-संबंध छै।
२. वैं हाथों सें लिखलकै—यैठां सादृश्य सें अलग आधाराधेय भाव छै। हाथ लिखें नै पारें, कलम हाथों में रहै छै तें एकरों प्रयोजनार्थ कलम सें लिखलकै ही होलै।
३. सारोपा लक्षणा
४. साध्यवासना लक्षणा

जहाँ उपमेय-अपमान के आरोप रहें वहाँ सारोपा लक्षणा होय छै आरो जहाँ साध्य के लोप रहें वहाँ साध्यवासना लक्षणा होय छै।
दोनो के उदाहरण निम्नांकित छै :
१. 'ऊ ते गौ छेकै।' यै ठां गौ के सीधापन आरोपित छै
२. जो केकरौ देखी कें ई कहलों जाय, 'आवों नारद जी' तें यैठां प्रस्तुत उपमेय नै रहला के कारण साध्यवासना लक्षणा छै।

लक्षणा के आरो भेद हुऍ पारें, जेना, उपादान लक्षणा आरो लक्षण लक्षणा। कहै के तें ढेरे भेद आचार्य नें बतैलें छै।

व्यंजना शब्दशक्ति : अभिधा आरो लक्षणा शक्ति सें बाहर के अर्थ जो शक्ति खोजी निकालै छै, वही व्यंजना शक्ति छेकै। व्यंजना शक्ति सें प्राप्त होयवाला अर्थ कें व्यंजक कहलों जाय छै। एकरा एक उदाहरण सें समझलों जावें सकै छै। जों ई कहलों जाय कि साँझ होय चललै, तें व्यंजना शक्ति सें एकरो अर्थ निकलतै कि सँझवाती दै के समय होय गेलै।
व्यंजन शक्ति के भी दू भेद होय छै :
१. शाब्दी व्यंजना
२. आर्थी व्यंजना

शाब्दी व्यंजना वैठां होय छै, जैठां अनेकार्थी शब्द रहें आरो आर्थी व्यंजना वैठां होय छै, जैठां एकार्थी शब्द रहें।
शाब्दी व्यंजना के उदाहरण प्रस्तुत छै :

सोहत नाग न मद बिना तान बिना नहीं राग।

यैंठां नाग आरो राग के कै एक अर्थ हुऍ पारें मतुर जे मद आरो तान सें निमंत्रित छै।

आर्थी व्यंजना में शब्द विशेष के कोनो चमत्कार नै रहै छै। प्रसंग सें ई व्यंजना उभरै छै जेना कोय स्त्री सें ओकरों पति के बारे में कोय आरो जनानी संबंध जानै लें चाहै आरो पति के साथ जनानी खाली मुस्काय दै, तें ई मुस्कान सें ही ई व्यंग्यार्थ निकलै छै कि हिनी हमरों पति छेकै। यहाँ व्यंजक शब्द पर निर्भर नै छै।

रचना कला

जों रसोनुकूल शैली (वर्ण-विन्यास) नै हुएँ आरो नै तत्व, तें रचना आपनों अपेक्षित प्रभाव नै छोड़ें पारै छै, यै लेली यहाँ डॉ. अमरेन्द्र के अप्रकाशित 'काव्यशास्त्र' सें रस-विवेचन के अंश प्रस्तुत करलों जाय छै, यैसें काव्य-लेखन में विशेष करी कें मदद मिलें पारें।

रस के वर्गीकरण

शृंगार रस :

'दशरूपकम्' के लेखक आचार्य धनंजय के अनुसार शृंगार रस के स्थायी भाव रति होय छै आरो नायक-नायिका एकरों आलंबन विभाव के अंतर्गत आवै छै। आलंबन विभाव के शृंगारिक चेष्टा, प्राकृतिक सौन्दर्य आरनी ई रस के उद्दीपन विभाव छेकै, जबेंकि आलिगन-चुंबन आरनी अनुभाव होय छै। लज्जा, हर्ष, चिंता, उत्सुकता आरती एकरों संचारी भाव छेकै।

शृंगार रस के एक उदाहरण नीचें छै :

सच तोहरे बात लेली
हम्में एक असकल्ली लड़की
रात के ई सुन्नों बियाबान बेरा में
चानन नद्दी पार करी कें
डोर, लाज आरो भय कें कोची में समेटी कें
ई पीपरो गाछी ठियां ऐलों छी
की कहियौं पिया
कोस भर नद्दी के बालू
वहा रं उमतैली हम्में पार होय गेलियै

जेना हिरनी
अपनों कस्तूरी गंध सें मतैली
बाघों के आगू सें पार होय जाय है।

—अनिरुद्ध प्रसाद विमल

करुण रस

आचार्य धनंजय के ही मोताबिक करुण रस के स्थायी भाव शोक छेकै आरो जेकरों लें शोक हुए ऊ आलंबन छेकै। जेकरों लें शोक होय है, ओकरा सें जुड़लों चीज सिनी ही उद्दीपन कहावै है आरो अनुभाव होय है—छाती पीटवों, हँकरवों, मूर्छित होवों आरनी। संचारी होय है—एकरों स्मृति, चिंता, आवेग आरनी।

बाबू के मरथैं मय्यो रों हालत बड़ी विचित्र
घंटा-घंटा भर भीती पर लिखलों लागै चित्र
कभी कहै छै,'दौड़ें बेटा, बाघ उतरलों छौ रे
जो-जो रे बीजुवन बेटा, बाप गेलों छौ भोरे
'तोहरों बाबू रे बेटा नेहों रों अजगुत खान
हमरों सुख नै देखलों गेलै, दुष्ट भेलौ भगवान''
कुछ-सेँ-कुछ फदकै, बोलै छै, हालत बड़ी विचित्र
घंटा-घंटा भर भीती पर लिखलों लागै चित्र
ठाँय-ठाँय ठोकै चोखटी सेँ घुरी-घुरी माथों कें
लपकीं छाती पर पटकै छै पीटनैं रँ हाथों कें
दौड़ी कें गेना रों गल्ला सेँ लिपटै छै माय
दुख सेँ चीखै रही-रही कें; जों, रम्भाबै गाय
गुदड़ी-गुदड़ी करी लेलें छै चेथरी-चेथरी साड़ी
चूल नोची कें धामिन लागै; आँख निरासै फाड़ी
सौ विधवा रँ असकल्ले ही माय कानै छै, कुहरै

—'गेना' सें

हास्य रस

हास्य रस स्थायी भाव : हास छेकै आरो विचित्रतापूर्ण वस्तु, जेकरा देखल्हैं हँसी आवें ऊ आलंबन कहावै है। एकरों बेढंगों कार्य, संवाद, आवाज आरनी उद्दीपन होय है आरो अनुभाव होय है—ठोरों के

फैलवों, आँखों के छोटों पड़वों आरनी। ई रस के संचारी भाव छेकै : हँसी, जिज्ञासा आरनी

हास्य रस रों उदाहरण :

जीवों में प्रधान, बुद्धिमान, शक्तिमान, रक्तबीज खानदान
तोरा डरें काँपवै-जहान, जै हो मच्छड़ भगवान !
सब्भै जीवों कें तोहें एक्के रं देखै छों
सब्भै जग्घा में तोहें एक्के रं घूमै छों
सर्वव्यापी आरो समदर्शी महान ! जै हो....
राग-रागिनी के तों ज्ञाता बेजोड़ छों
लोकगीत, गजलो सुनावै निन्द-तोड़ छों
लहुवे टा श्रोता सें लै छों तों दान ! जै हो....
गावी-गावी कीर्त्तन दिलवावै छों ताली
आठो आङ्गे ताली दै छौ पढ़ी-पढ़ी गाली
महिमा तोरों लीला के, करें बखान ! जै हो....
भरमाय छों हीरो रं दै-दै सीटी-नारा
हर दिन एक चुम्मा में गिनवावै छों तारा
गिनथैं-गिनथैं तारा, होय जाय छै विहान ! जै हो....
डाक्टर धुरंधर धन्वत्रिहो के बाप छों
रोगी-निरोगी के इलाज करै छाथ छों
सुइया चुभाय खून खीचै छों दोनों में समान ! जै हो....
वही जनम सें आगा या सूदखोर सेठ छों
लहुवे टा चुसी-चुसी आपनों भरै पेट छों
जत्तें छिटै फिल्ट डीडीटी ओत्तें बढ़ें प्राण। जै हो....
मच्छड़ प्रभु ! देश में तोरे भरमार छै
शोषण-व्याभिचार के सजलों बाजार छै
'मधुकर' छै मुक्ति लेली लोग परेशान ! जै हो....

—श्री जगदीश पाठक 'मधुकर'

अद्भुत रस

अद्भुत रस रों स्थायी भाव विष्मय आरो आलंबन कोय अलौकिक आकि आश्चर्यजनक वस्तु या कार्य होय छै। अलौकिक वस्तु के विविधते

अद्भुत रस के उद्दीपन कहावै छै आरो रोमांच, आँख फाड़ी या टकटकी लगाय कें देखवों अनुभाव छेकै, वहीं उत्सुकता, हर्ष आरनी संचारी भाव छेकै। एक उदाहरण :

बहै छै हवा रेशमी गुदगुदाबै
कली कें दै किलकारी-चुटकी खिलाबै
खिली गेलों फूलों कें चूमै-हँसाबै
बिना झूला के ही दै धक्का झुलाबै
हिलाबै छै झोली कें आमों रों ठारी
कभी देखी आबै छै सरसों रों क्यारी
छुवै फूल हौले बड़ी डरलों-डरलों
कहीं हरदियानों रँ बिरनी ही अड़लों

डरी कें उड़ै, तें ऊ तितली तक पहुँचै
बड़ी गुदगुदों देह पाबी कें हुमचै
कहीं जोगबारिन रों आँचल कें छूवी
कभी ओकरों गालों रों गड्ढा मे ँ डूबी
बढ़ावै छै विरहा रों आगिन कें आरू

—'गेना' सें

रौद्र रस

रौद्र रस के स्थायी भाव क्रोध छेकै आरो जेकरा पर क्रोध हुऍ, ऊ एकरों आलंबन छेकै, जबेंकि हेनों पात्र के अनटेटलों बोली, व्यवहार ही उद्दीपन कहैतै। दाँत के पिसबों, आँख के लाल होवों आरनी अनुभाव छेकै आरो गर्व, उग्रता आरनी संचारी भाव। रौद्र रस के एक उदाहरण प्रस्तुत छै :

जों जालों सें शेर दहाड़ै
काँपी जाय छै गाँव-जवार,
बेहोशी में गरजी जाय छै
होने गोपो कभी-कभार।

जे दहाड़ सुनथैं बाँका में

लागी गेलै भीषण आग,
जहाँ-जहाँ भी राग विलावल
वहाँ-वहाँ ही भैरव राग।

अंगरेजी सत्ता के जेना
रहतै कहीं नै नामो लेश,
सुनथैं खबर गोप छै बंदी
खौली उठलै अंग प्रदेश।

—'शहीद सम्राट महेन्द्र गोप' सें

वीभत्स रस

जुगुप्सा यानी घृणा वीभत्स रस के स्थायी भाव छेकै, आरो दुर्गन्धयुक्त वस्तु आकि घृणायोग्य कोइयो चीज एकरोॅ आलंबन छेकै, वहीं हेनोॅ वस्तु पर मक्खी आकि गिद्ध आरनी के झपटवोॅ उद्दीपन विभाव कहैतै, तेॅ नाक-मूँ सिकोड़वोॅ, थूकवोॅ आरनी अनुभाव कहैतै, जबेॅ कि आवेग, निर्वेद आरनी संचारी भाव। वीभत्स रस के एक उदाहरण प्रस्तुत छै :

बहै छै कहीं पेॅ धार लेहू केरोॅ; जोरी हेनोॅ
वही ठां दिखावै कत्तेॅ सैनिकोॅ के लाश छै
केकरो तेॅ हाथे गैब, केकरो तेॅ मुंडिये छै
जहाँ-जहाँ आदमी छै, भेड़ियो ठो पास छै
मोॅन करै तेजी चलौं—घरे के की, दुनियौ के
जहाँ गिद्ध-कुत्ता केरोॅ, रुधिरे के रास छै
घाव सेॅ घवैलोॅ देह, की जकां दुर्गन्ध करै
जीत्तो रं आदमी ही कागा केरोॅ ग्रास छै।

—स्वरचित

भयानक रस

भय ही भयानक रस के स्थायी भाव होय छै आरो जेकरा सेॅ भय हुएँ, ऊ प्राणी आकि कोइयो वस्तु एकरोॅ आलंबन कहैतै। डरावना जग्घोॅ, डरावना प्राणी के हाव-भाव उद्दीपन छेकै, थरथरैवोॅ, चीखवोॅ आरनी अनुभाव होतै, वहीं पर आवेग, चिंता, मोह आरनी एकरोॅ संचारी भाव

छेकै। एक उदाहरण :

आँधी कें देखै लें आरो परहेज लें,
आबें जरूरी छै—खिड़की पर काँच लगें ।

की रँ लहरावै छै बाहर में बिन्डोबों
धरतीं उड़ावै छै—धुरदा—कोबों-कोबों,
एकदम तपासलों लू देह-मुँह झौंसै छै
बुतरू कें जेना कोय अंगुलीमाल धौंसै छै
निर्दय-निर्मोही समय भेलै हेने कसाय,
बाँही पर कड़कड़ाय जेना कि पाँच लगें ।

है रँ बतासों में गिद्धा रों मौज छै
भाँड़ी में हकहक कबूतर रों फौज छै
काठों रँ मोंन, दीया दुक्खों रों चाटै छै
तहियो करेजों नै देवों रों फाटै छै
हेनों समाजों कें, धरम-धर्मराजों कें
कथी लें जीत्तों छै ? आँच लगें ।

—'कुइयाँ में काँटों' सें

शांत रस

शांत रस के स्थायी भाव निवेद छेकै, आरो वस्तु के क्षणभंगुरता, निःसारता आरनी एकरों आलंबन। सत्संग, संन्यास, तीर्थाटन आरनी जों एकरों उद्दीपन छेकै, तें सांसारिक वस्तु के ओरी सें विराग, चिताग्रस्त रहवों अनुभाव के अन्तर्गत ऐतै। वहीं पर स्मृति, धृति आरनी संचारी भाव। कोय पूर्व विषय कें याद करवों ही स्मृति छेकै, जबेंकि चित्त के चंचलता के अभाव धृति कहावै छै। शांत रस के एक उदाहरण प्रस्तुत छैः

खसलों जाय जिनगी रों होने सब साल
जेना ओहारी सें बरसा रों बुन।

कत्तें सजैलाँ ऊ नीनों के सपना
मुट्ठी में सौंसे समुन्दर के अँटना

लोॅर-जोॅर, आपनोॅ-पराया—परैलै
हाथोॅ मेॅ चुरूवे भर पानी-टा ऐलै।

आँखी मेॅ आवै छै एक्के टा फोटू
विलखै अयभाती—नै पावी सगुन।

जोड़ी-जोड़ी केनखोॅ जे घोसला बनैलाँ,
आरो ओघरावै लेॅ सँझकी जे ऐलाँ,
जिनगी रोॅ सुख-दुख केॅ जेन्है मोॅन थाहै
तिनका मेॅ फाँसी कोय पकड़ै लेॅ चाहै।

बीछी-बीछी दावै छी किंछा रोॅ ठोठोॅ,
सोरी-घोॅर चिलका चटावै छी नुन।

—'कुइयाँ मेॅ काँटोॅ' सें

आधुनिक समय मेॅ 'वात्सल्य' आरो 'भक्ति' नाम के दू आरो रस केॅ रस के अन्तर्गत मानी लेलोॅ गेलोॅ छै, एकरोॅ उदाहरग नीचेॅ छै,

<u>वात्सल्य</u>

पूर्ववर्ती आचार्यें वात्सल्य के शृंगार रस के भीतरे मानलेॅ छै, मतर बाद में भोज, विश्वनाथ हेनोॅ आचार्यें वात्सल्य केॅ अलग रस मानतेॅ आरो पुत्र आरनी केॅ आलंबन मानतेॅ हुएॅ, बालचेष्टा के ही उद्दीपन मानलेॅ छै, फेनु सिर चूमना, गल्लोॅ लगैवोॅ केॅ अनुभाव रूपोॅ में देखलेॅ छै। एकरोॅ एक उदाहरण नीचेॅ प्रस्तुत छै :

करका, कच्चा माँटी रोॅ बुतरू रँ बुतरू भेलै
भोज-भात के नेतोॅ-पानी द्वारे-द्वार बिल्हैलै
गोबर केॅ पानी मेॅ घोरी द्वार-भीत पर लीपै
कोय ऐंगन के मिट्टी के धुरमुस सेॅ लै केॅ पीटै

छपरी के छौनी होलोॅ छै नया डमोलोॅ लै केॅ
लपकी रोॅ मरदाना खुश छै बाप पूत रोॅ भै केॅ

करिया-करिया छौड़ी-छौड़ा कादर रों हुलसै छै
देखी कें लपकी रों मरदाना के दुख झुलसै छै

गीत-नाद के कंठों पर की टन-टन टीन टनक्का
काँसा के थरिया पर बाजै झन-झन-झनक झनक्का
बहुत दिनों के बाद कदरसी अजगुत करै छै खेल
टोला भर रों मौगी के माथा पर देखलौं तेल

देखी-देखी गोद रों बच्चा लपकी हेनों विभोर
आशिष दै छै खनै-खनै मेँ; इस्थिर रहै नै ठोर
मूँ कें चूमै, गाल कें चूमे, माथा चूमै लपकी
सुतलों ममता हिरदय के हेनों उठलों छै भभकी

—'गेना' सें

भक्ति

आचार्य भरत मुनि नें वात्सल्य नाँखी भक्ति रस कें भी रस में नै गिनलें छै, मतर आचार्य जगन्नाथ नें भक्ति रस के पक्ष में अपनों समर्थन प्रकट करतें हुएँ भगवत्प्रेम कें ही स्थायी भाव मानलें होलों छै। ई दृष्टि सें भजन, तीर्थस्थल आरनी के आलंबन, घंटानाद कें उद्दीपन आरो रोमांच, तल्लीनता, हर्ष आरनी के अनुभाव मानतें होलें दैन्य, रोमांच आरनी कें संचारी भाव मानलें छै। भक्ति रस के एक उदाहरण नीचें प्रस्तुत छै :

''यहें तें सुनै छियै कि पापी सेँ पापी कें तोहें
तारी देलौ ! तरलै जरा-सा नाम लेथैं नी
बालमीकि तरलै तें तरलै अजामिल भी
तरी गेलै गोड़ों सेँ अहिल्या भी छुवैथैं नी
पातकी-पतित कत्तें पापों सेँ विमुक्त भेलै
याद तोरों एक बार हिरदै मेँ ऐथैं नी
यही सब सुनी आबी गेलों छियौं द्वारी पर
कहै छौं—हाथी के सुनलौ सूँढ़ के उठैथैं नी।

—'गेना' सें

अलंकार

काव्यशास्त्र के मोताबिक वाणी के विभूषण ही अलंकार छेकै जे या तें सुव्यवस्थित शब्द-विधान सें संभव होय छै या फेनु अर्थ के चमत्कार के कारण; यही सें अलंकार के मुख्य दू भेद मानलों गेलों छै :

१ शब्दालंकार

२ अर्थालंकार

आरो जहाँ दोनो के एक साथ अस्तित्व होय छै, वहाँ उभयालंकार के उपस्थिति मानलों जाय छै।

काव्य में शब्दालंकार के ओत्तें महत्व नै मानलों गेलों छै, जत्तें अर्थालंकार के, यही लें शब्दालंकार सें कहीं अधिक अर्थालंकार के भेद पैलों जाय छै।

नीचें शब्दालंकार आरो प्रमुख अर्थालंकार के भेद प्रस्तुत छै।

शब्दालंकार

शब्दालंकार वहाँ होय छै जहाँ अर्थ के सौन्दर्य शब्द-विन्यास पर निर्भर होय छै। ई पाँच प्रकार के मानलों गेलों छै।

१. अनुप्रास

२. यमक

३. श्लेष

४. वक्रोक्ति

५. चित्र

अनुप्रास :

अनुप्रास वर्ण या व्यंजन के सजावट कें कहै छै, जे तीन किसिम सें हुऍ पारें, यही सें अनुप्रास के तीन भेद मानलों गेलों छै :

क. छेकानुप्रास

ख. वृत्त्यानुप्रास

ग. लाटानुप्रास

क. छेकानुप्रास : जैठां वर्ण आकि व्यंजन सिनी के एक्के दाफी दुहराव मिलें, वहाँ छेकानुप्रास हुऍ छै। जेना, खंजन रंजन लेली ऐलै!

यैठां 'ज' आरो 'न' के आवृति एक्के दाफी होलोॅ छै, यै लेली छेकानुप्रास अलंकार छै।

ख. वुत्त्यानुप्रास : छेकानुप्रास नाँखी वृत्त्यानुप्रास में भी कोय वर्ण कै एक दाफी, आकि कै वर्ण के स्वरूपतः कै दाफीवाला आवृत्ति कें वृत्त्यानुप्रास अलंकार कहलोॅ जाय छै। एक गोष्ठी में बोलतें हुए डॉ. अमरेन्द्र नें ई विचार रखलें छेलै कि वृत्त्यानुप्रास कें अलंकार के कोटि में नै राखी कें रीति के अन्तर्गत रखना ठीक होतै, कैन्हें कि यहाँ वृत्ति यानी रस के अनुकूल शब्द-विन्यास रोॅ प्रमुखता होय छै। डॉ. अमरेन्द्र के ई मत में दम छै।

ग. लाटानुप्रास : तात्पर्य केरोॅ भेद सें शब्द आरो अर्थ दोनो के पुनुरुक्ति कें लाटानुप्रास अलंकार कहलोॅ जाय छै। ई अलंकार कभियो लाट प्रदेश (गुजरात) में बहुत लोकप्रिय छेलै, यही सें एकरोॅ नाम लाटानुप्रास पड़लै। एक प्रसिद्ध लोकप्रिय उदाहरण नीचें छै :

तीरथ व्रत साधन कहा जो निसिदिन हरि गान
तीरथ व्रत साधन कहा, बिन निसिदिन हरिगान।

यैठां पहिलोॅ चरण के अर्थ छेकै कि जों रात दिन हरि भजन होय छै तें तीरथ-व्रत के जरूरते की छै, वहीं ठां दोसरोॅ चरण के अर्थ छेकै बिना हरिभजन के तीरथव्रत करलाहै सें की फायदा।

यमकः

यमक कोनो स्वतंत्र अलंकार नै होय कें लाटानुप्रास के भीतरे मानलोॅ जाय, तें अच्छा। यहा काव्यशास्त्रियो के मत छै।

श्लेषः

श्लिष्ट पद सें अनेक अर्थ के कथन जहाँ होय है, वहा श्लेष अलंकार छेकै।

एक उदाहरण :

एत्तें-एत्तें धन की रखवोॅ
जों घर में एक लाल नै छै।

यहाँ 'लाल' शब्द के दू अर्थ छै : कीमती पत्थर आरो पुत्र। फेनु दोनो अर्थ यहाँ मान्य छै।

वक्रोक्ति :

जैठां श्लिष्ट पद के कारण कंठ के विशेष ध्वनि के कारण दोसरोॅ अर्थ के कल्पना करलोॅ जाय, तेॅ वहाँ वक्रोक्ति हुऐ छै। हिन्दी के एक प्रसिद्ध पंक्ति के अनुवाद नीचे छै :

एक कबूतर देखी हाथ मेॅ पूछै कहाँ अपर छै।
तबेॅ कहलकै, अपर कहाँ ऊ, उड़लै छेलै सपर ऊ।

यहाँ 'अपर' अन्य केॅ जानी-बूझी केॅ दोसरोॅ अर्थ परविहीन लेलोॅ गेलोॅ छै।

अर्थालंकार

उपमा :

कोय वस्तु साथेॅ सादृश्य विधान केॅ उपमा अलंकार कहलोॅ जाय छै। उपमा मेॅ उपमेय जेकरोॅ उपमा देलोॅ जाय। उपमान जेकरा सेॅ उपमा देलोॅ जाय, सामान्य गुण आकि धर्म या विशेषता आरो सादृश्यवायक शब्द होय छै। जहाँ ई चारो होय छै वहाँ पूर्णोपमा होय छै। पूर्णोपमा के उदाहरण :

चंचल मन जों पीपर पत्ता।

यहाँ मन :- उपमेय; पीपरपत्ता :- उपमान; चंचलता :- गुण आरो जों :- सादृश्यवाचक शब्द छेकै।

मालोपमा : जहाँ एक उपमेय लेली कै एक उपमान रहेॅ, वहाँ मालोपमा अलंकार होय छै। जेना :

जों बसन्त मेँ गाछी के ठारी सेँ निकलै टूसा
चतुरदशी के बाद सरँग मेँ विहँसै चान समूचा
बितला शैशव पर जों आबै मारलेॅ जोर जुआनी
जेठोॅ के सुखलोॅ चानन मेँ जों भादोॅ के पानी

जिना जुआनी के ऐला पर आबै लाज-शरम छै

लाज-उमिर के ऐथैं युवतीं पाबै पिया परम छै
पिया परम के पैथैं जेना सुध-बुध खोय छै नारी
ढोतें बनै नै केन्हौं ओकरा सुख के बोझों भारी

जेना सौनों में पछिया के उठथैं चलै झकासों
बेली के खिलथैं गंधों रों ठाँव-ठाँव पर बासों
जों समाधि के लगथैं अजगुत सुख कें पाबै तपसी
तपला घरती के बादों में जेना आबै झकसी
आय वहें रँ कादर- पट्टी झूमै झन-झन बाजै
डलिया-सुपती-मौनी-थरिया किसिम-किसिम के साजै
बरस-बरस के बितला पर लपकी बनलों छै माय
सौंसे पट्टी रों मौगी सब गेलों छै उधियाय

—'गेना' सें

स्मरण :

स्पष्ट छै कि कोय वस्तु कें देखी पूर्व अनुभूत वस्तु के याद ऐवों स्मरण अलंकार कहावै छै। जेना :

बड़ी याद आबै छै गेना कें ऊ सब
''इस्कूली के पीछू सें निकली कें झबझब
यहीं आबै देखै लें फूलों पर तितली
मतैली रसों सें, ओंघैली रँ तितली
कभी बाँसबिट्टी सें तोड़ै बँसबिट्टों
झड़ाबै पहाड़ी लतामों कें मीट्ठों''
बड़ी याद आबै छै गेना कें ऊ सब
इस्कूली के पीछू सें निकली कें झबझब

''ऊ भादों रों दिन में सुखनिया रों बोहों
मिलै अच्छा-अच्छा कें जै में नै थाहों
कुदें-धौंस मारै ऊ हेना-में-हेना
कि डाँड़ी में कूदै कोय बड़का ही जेना
बहै नाव नाँखी। कभी तोंर हेनों;

मछलिये रँ। उपलै कभी सोंस जेहनों
हँकाबै, मतुर के सुनै माय केरों
खड़ा देखै टुक-टुक सब साथी के जेरों
बड़ी याद आबै छै गेना कें ऊ सब
ऊ भादों के चानन मे ँ पानी रों लबलब

—'गेना' सें

भ्रांतिमान :

सादृश्य के कारण प्रस्तुत में अप्रस्तुत के भ्रम भ्रांतिमान अलंकार छेकै।

प्रतीप :

प्रतीप के अर्थ उल्टा यानी विपरीत होय छै। यहाँ उपमेय कें उपमान आरो उपमान कें उपमेय रूपों में देखैलों जाय छै।

रूपक :

जैठां उपमेय पर उपमान केरों आरोप होय छै, वहाँ रूपक अलंकार होय छै। यानी उपमेय-उपमान में अभेद के स्थिति देखैवों ही रूपक अलंकार छेकै।

उत्प्रेक्षा :

उपमेय में उत्कृष्ट उपमान कें देखै के उत्कट इच्छा ही उत्प्रेक्षा अलंकार छेकै। एकरों तीन भेद मानलों गेलों छै। वस्तुत्प्रेक्षा, हेतुत्प्रेक्षा आरो फलोत्प्रेक्षा।

अपह्नुति :

जैठां प्रकृत यानी प्रस्तुत के निषेध करी कें अप्रस्तुत के स्थापना करलों जाय, वहाँ अपह्नुति अलंकार होय छै।

उल्लेख :

कोय वस्तु के विभिन्न किसिम सें वर्णन ही उल्लेख अलंकार छेकै।

अतिशयोक्ति :

जैठां प्रस्तुत के लोकमर्यादा कें लाँघतें बढ़ाय-चढ़ाय कें वर्णन हुएँ, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होय छै।

दृष्टान्त :

दृष्टांत दू स्वतंत्र पंक्ति के हेनों अलंकार छेकै जे स्वतंत्र होला के

बादो दोसरों चरण पूर्व बात के समर्थन में उदाहरण-रूप में आवै छै।

व्यतिरेक :

उपमान के अपेक्षा उपमेय केरों विशेष उत्कर्ष-वर्णन अतिरेक अलंकार कहावै छै। नीचे उदाहरण छै :

पावक झर तें मेह झर, दाहक दुसह विसेख
दहै देह वाके प रस, याही दृगन ही देख।

यैठां आग के बरसवों सें मेघ के बरसवों में ज्यादा उत्कर्ष है कैन्टें कि आग तें छूला पर देह जरै छै मतर मेहं कें देखलै सें देह जरें लागै छै।

समासोक्ति :

जैठां प्रस्तुत के वर्णन सें अप्रस्तुतो के वर्णन होय जाय, वहाँ समासोक्ति अलंकार होय छै।

व्याजस्तुति :

जैठां स्तुति में निंदा आरो निंदा में स्तुति रहे, वैठां व्याजस्तुति अलंकार होय छै।

विभावना :

कारण के अभावों में कार्य के होना दिखैवो विभावना अलंकार छेकै।

स्वभावोक्ति :

जैठां वस्तु के स्वाभाविक वर्णन होय छै, वैठां स्वभावोक्ति अलंकार होय छै।

मीलित :

रूप-गुण के कारण जैठां दू वस्तु एक्के रं दिखैलों जाय, वैठां मीलित अलंकार होय छै।

<u>मिश्रित अलंकार</u>

संसृष्टि :

जहाँ एक्के छंद में कैएक अलंकार मिललों रहें, वहाँ संसृष्टि अलंकार होय छै।

संकर :

जैठां कै अलंकार दूध-पानी रं मिललों रहें, वहाँ संकर अलंकार होय छै।

निबंध

लेख आरो निबंध में अंतर होय छै, है बात निबंध लिखै के पहिले समझी लेना चाही। लेख जों मस्तिष्क के संतान होय छै, तें निबंध हृदय आरो बुद्धि दोनों के संयोग सें ही उत्पन्न होय छै। मतलब ई छेकै कि लेख में बस तथ्य के ही प्रमुखता के साथ, साफ-सुथरा भाषा में रखलों जाय छै, यहाँ अलंकार आकि प्रतीक के कोय जरूरत नै होय छै, जबें कि निबंध में अलंकारवाला भाषा भी होय छै, कल्पना रों उड़ान साथें कुछ हँसी-व्यंग्य के बात भी, जेकरों कारण कि लेख में लालित्य आरो मनोरंजन के समावेश होय जाय छै, भले ही साहित्यिक निबंध रहें कि राजनीतिक निबंध आकि धार्मिके निबंध कैन्हें नी रहें।

निबंध में भाषा-शैली सें कम महत्वपूर्ण स्थान उपस्थापन-विधि के नै होय छै। जेन्हों कि साहित्य के सब्भे विधा में कमोवेश पैलों जाय छै कि एकरों आरंभ विषय के पूर्वाभास सें ही हुए, फेनु विषय कें विस्तार देलों जाय आरो आखरी में निष्कर्षों के होना जरूरिये होय जाय छै। ई बात ठीक-ठीक समझी लेला के बाद निश्चित रूप सें निबंध-लेखन बहुत कठिन नै रही जाय छै, तहियो एक अच्छा निबंध लेखन लेली अभ्यास के सबसें बेसी जरूरत होवे करै छै। एक उदाहरण देखियै,

आतंकवाद

मुम्बई सें आसाम तक, गरजै छै आतंक
गिरै गाछ रं आदमी, लोटें लागलै भंक
ई आतंकी वास्तें, दया-मोह नै दीन
ई जीवन पर मौत रं, बरछी रं आसीन।

—धनञ्जय मिश्र

आतंकवाद खाली भारते के बात नैं रही गेलों छै, मतरकि सौंसे दुनियाँ वास्तें ई महाबीमारी बनी गेलों छै। कोन देश छै, जे ई आतंकवाद सें बची गेलों छै ? अमरिका रहें कि रूस, अफगानिस्तान रहें कि ईरान, पाकिस्तान रहें कि लंका, आकि भारतवर्ष सबके आत्मा ई आतंकवाद के

आक्रमण सें लहूलुहान होय रहलोॅ है।

कविवर सोहन प्रसाद चौबे ने आतंकवाद के भयावह रूप के चित्रण करतें लिखलें है—

मुरझैलोॅ हर कलि-कलि है
डार-पात सुखलोॅ है
उग्रवाद के कठिन जहर सें
रग सबके दुखलोॅ है
केकरा की हासिल यैसें है
संतापे टा पाय है
आपनोॅ लालचोॅ के कारणें
अग-जग भरी जलाय है

ई आतंकवाद के कारण की हुवें पारें ? बीसवीं शताब्दी के महान दार्शनिक आचार्य रजनीश (ओशो) नें आतंकवाद के हड़ी में आदमी के हवस कें मानलें है। आदमी के उफनतें जाय रहलोॅ महत्वकांक्षा दिने-दिन बढ़ले जाय रहलोॅ है। सच्चे में हमरोॅ भौतिक कांक्षा एतन्हैं बड़ी गेलोॅ है, भौतिक सम्पदा जमा करै के इच्छा एतन्हैं खूंखार होय गेलोॅ है कि हम्में दूसरा के सुख-सुविधा आरो शांति के कुछ ख्याले ने करी रहलोॅ छियै आरो जेकरे कारणें आय विश्व में आतंकवाद के मूड़ी उच्चोॅ होय गेलोॅ है।

ई आतंकवाद के मूड़ी नीचें करै लें ई बात जरूरी है कि हम्में आपनोॅ भौतिक इच्छा कें उग्र नै हुवें लें दौं। जरूरत भर लें हम्में उद्यम करौं। समस्त मानवता के हित चिन्तित रहौं; तभै ई आतंकवाद के सर नीचें हुएँ पारतै। आय तें जे रं आतंकवाद के आतंक सें अमेरिका हिली गेलोॅ छेलै आरो जे आतंक से भारत के मुम्बई, कश्मीर, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आसाम आरो हैदराबाद हिलतें रहलोॅ है, ओकरा दूर करै वास्तें खाली सरकारे कें नै, भारत के प्रत्येक आदमी कें कटिबद्ध होय लें लागतै।

कविता-लेखन

कविता के संबंध में बहुत बात बहुत किसिम सें कहलोॅ गेलोॅ है कि

कविता लिखलों नै जावें पारें, ऊ तें सीधे उतरै छै। यहाँ कोय मत के समर्थन या काटना हमरों लक्ष्य नै छेकै। एकरा सें अलग ई बातों सें अधिकांश आदमी सहमत होतै कि कविता के मतलब छंद में लिखलों भाव या विचार छकै, जबें कि गद्य में लिखलों भाव या विचार निबंध, कहानी, संस्मरण आरनी–तें छंद ही हौ माध्यम छेकै, जे कविता कें गद्य सें अलग करै छै, जे छंद जानी लै छै, ओकरों लेली कविताहो रचवों आसान होय जाय छै। छंद सीढ़ी छेकै, कविता तक पहुँचै लेली। नीचें कुछ प्रमुख छंद के िवधान प्रस्तुत छै, जे डॉ. अमरेन्द्र रचित 'छंद छौनी' के आधार पर छै।

छंद-विवेचन

वर्ण आरो मात्रा के सुव्यवस्थित रूप ही छंद छेकै, जेकरा सें पद्य के निर्माण होय छै आरो पद्य लयात्मक बनै छै।

यैमें ऐलों वर्ण आरो मात्रा पर सबसें पहिलें विचारना जरूरी छै। मात्रा दू किसिम के होय छै–ह्रस्व आरो दीर्घ। अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व मात्रा छेकै आरो आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ दीर्घ स्वर।

स्वरे नाँखीं व्यंजनो के एकमात्रिक, दूमात्रिक रूप होय छै। कहै के मतलब–जेकरा में ह्रस्व स्वर लगलों रहें, ऊ एकमात्रिक व्यंजन छेकै, आरो जेकरा में दीर्घ स्वर लगलों रहें, ऊ द्विमात्रिक व्यंजन छेकै। एक मात्रिक व्यंजन कें 'लघु' आरो द्विमात्रिक व्यंजन कें 'गुरु' कहलों जाय छै।

मात्रा आरो वर्ण के आधार पर छंद के दू भेद करलों गेलों छै–मात्रिक छंद आरो वार्णिक छंद। मात्रिक छंद में मात्रा के प्रधानता होय छै आरो वार्णिक छंद में वर्ण के।

<u>स्वराघात आरो अनुस्वार</u>

स्वराघात रहित अक्षर एकमात्रिक होय छै आरो अनुस्वार युक्त वर्ण के पूर्व एकमात्रिक वर्ण दूमात्रिक होय जाय छै। जेना संयुक्ताक्षर के पूर्व के एकमात्रिक वर्ण द्विमात्रिक होय जाय छै।

लघु के चिन्ह (।) होय छै आरो द्विमात्रिक के (ऽ)

चरण आरो यति

कविता के एक पंक्ति के एक चरण आरो पंक्ति के बीच या अंत में ठहराव के स्थल यति कहावै छै।

कुछ लोकप्रिय हिन्दी छंद

(१) युग

ई एक चतुष्कल यानी चार मात्रा के मात्रिक छंद छेकै जे चार लघु या दू गुरु, या फेनु एक गुरु दू लघु के हुए पारे। जेना :

कारों
उजरों
ऐलै
बदरा।

—स्वरचित

(२) अखंड

ई दू युग (यानी दू चतुष्कल) के योग छेकै। आठ मात्रा के ई छंद दू चतुराकल के योग से बनै छै। उदाहरण लेली :

कारों-उजरों
ऐलै बदरा

—स्वरचित

(३) शशिवदन

'छंदोदर्पण' में डॉ. गौरी शंकर मिश्र नें एकरा शशिवदना लिखलें छै। अखंड में दू मात्रा कें बढ़ाय देला सें शशिवदन छंद के निर्माण होय जाय छै; जेना :

खाली-खाली छै
खाक, दिवाली छै।

—स्वरचित

(४) अहीर

ग्यारह मात्रिक छंद यानी तीन चतुष्कल के अखिरलका गुरु कें लघु करी देला सें अहीर छंद बनी जाय छै। उदाहरण स्वरूप :

कौनी घर में आग
पानी कन्नें जाय
कुछ करतै तें मेघ,
की करतै ई छाय।

—स्वरचित

(५) महानुभाव

महानुभाव तीन चतुष्कल के मात्रिक छंद होय छै, जेकरोॅ आखिर में दू गुरु, दू लघु या दू लघु-एक गुरु हुऍ पारें; जना :

ठारी में छै मंजर
खूब टिकोला फरतै
गमगम करतै आमो
कुछ होने ही गामो।

—स्वरचित

(६) हाकलि

हाकलि चौदह मात्रा के मात्रिक छंद होय छै। चौपाई छंद के अंतिम दू मात्रा कें घटाय देला सें ई छंद बनी जाय छै। जेना :

सतुआनी के परब निकट
आबैवाला जेठ विकट
अखनी सें जी हड़हड़, हड़
ताड़-डमोलोॅ खड़-खड़, खड़।

—स्वरचित

(७) चौपई

चौपाई के अंतिम गुरु कें लघु करी देला सें चौपई मात्रिक छंद बनी जाय छै। उदाहरण :

बहुत दिनोॅ पर ऐलियै गाँव
तड़तड़िया रौदी में छाँव

—स्वरचित

(८) चौपाई

चौपाई चार चतुष्कल के योग सें बनै छै। अंत में एक गुरु या दू लघु होय

है। उदाहरण :

तोरों रूप; सुधा ज्यों बरसें।

मरुवैलों जतना जे जग में
वै में प्राण अचोके आवै,
दुबड़ी रं जरलों रोआं पर
ओसों सें क्षण-क्षण नहलावै;
मन में गूंजै भौर प्रेम के
खिलै हृदय के कमल हठासी
टटका-टटका भाव लगै सब
एक जरा नै कुछुवो वासी।
हेनों भावों-अनुभव लेली
हमरो जीवन युग-युग तरसें।

—चन्द्रप्रकाश 'जगप्रिय'

(९) दोहा

दोहा चौबीस मात्रा के छंद होय छै, जेकरों विषम (पहिलों आरो तेसरों) चरण में तेरह-तरह आरो सम चरण (दोसरों-चौथों) में ग्यारों-ग्यारों मात्रा होय छै। तुक सम चरणों में होय छै आरो जेकरों अंत गुरु-लघु सें होय छै। जेना :

सबके सहयोगों बिना होथौं नै काम,
बिना कुछ काम करले होथौं नै नाम।

—ई. नंदलाल यादव 'सारस्वत'

(१०) सोरठा

सोरठा छंद में भी चौबीस मात्रा होय छै, मतर एकरों विषम (दोसरों-चौथों) चरणों में ग्यारों-ग्यारों मात्रा आरो सम (पहिलों-तेसरों) चरण में तेरह-तेरह मात्रा होय छै। जेना :

पुरबा बहै वतास, उमड़ै-घुमड़ै मेघ छै
बुझतै धरती-प्यास, सब जानै ई भेद छै।

—ई. नंदलाल यादव 'सारस्वत'

(११) रोला

ई भी मात्रिक वर्ग के ही छंद छेकै, जेकरा में चौबीस मात्रा होय छै। एकरों विषम चरण में ग्यारों-ग्यारों आरो सम चरणों में तेरह-तेरह मात्रा पर यति होय छै। उदाहरण :

आरो कुछ दिन बाँझ, फुलैतै फेनू धरती
हँसतै खूब ठढाय, अधैतै परपट परती।

—ई. नंदलाल यादव 'सारस्वत'

(१२) कुण्डलिया

कुण्डलिया दोहा आरो रोला छंद के योग सें बनै छै। यै में एक दोहा के बाद दू रोला रखलों जाय छै। यथा :

दल के बिन तें जानले-प्रजातंत्र ही शेष
दलगत में पड़लों फिरै-हमरों भारत देश
हमरों भारत देश, कहै छौं बात ई सच-सच
शासन रों कीचड़ में दल रों पिल्लू खच-खच
होतै आरो देश जहाँ पर होतै दू दल
अमरेन्दर अपनों देशों में दल रों दलदल।

—'कुइयाँ में काँटों' सें

(१३) भुजंगप्रयात

ई छंद चार यगण के योग से बनै छै। यगण यानी।ऽऽ
उदाहरण :

कहाँ छों, कहाँ छों, अनाथो के मालिक
बड़ा ही कठिन छै ई जिनगी के ढोवों।

—स्वरचित

(१४) हरिगीतिका छंद

यह छंद चार सप्तकल के ई क्रम से रखला से बनै छै। ऽऽ।ऽ, ऽऽ।ऽ, ऽऽ।ऽ, ऽऽ।ऽ

अजगुत दिरिश सब लोग देखै आय की ई रही-रही
झूमै लता-फल-फूल-कोढ़ी बांही सब रों गही-गही

एक असकललों विरिछ पर अरबौं फुललौ छै फूल-फल
मकरन्द सनलो भौरा लागै, सूर्य। खिललों, नभ, कमल

—'गेना' सें

(१५) कवित्त

कवित्त वार्णिक छंद छेकै, जेकरा में वर्ण के प्रधानता होय छै। एकरों कै प्रकार होय छै। कवित्त भी एक भेद छेकै, जेकरों उदाहरण नीचें छै :

धोलों-धोलों रात लागै, दिन भी नहैलों हेनों
साफ-साफ सरँगो भी कांचे रँ सुहाबै छै
गरदा के नाम नै कहीं पे जरियो टा भी छै
चुनी-चुनी बीछी लेलें रेंहें हेने लागै छै
रेशमी पटोरी रँ माँटी, मोंन होने मोहै
मनों सेँ विराग-जप-जोग कें भगावै छै
धोबी सेँ धुलैलों दगदग धोती हेनों दिन
जोगियो रों निरमल मनों कें लजाबै छै।

—'गेना' सें

(१६) मतगयंद सवैया

सात भगण के क्रम सें रखला पर मतगयंद सवैया के निर्माण होय छै। जना :

की कहियौं सब बात खुली, मन में रखवे सब ठीक लगै
जे कुछुवो बुझना जिकरा बुझते नि रहौ चुपचाप छियै।
पागल पागल पागल होय कहाँ तक जाँव? नै जोग दिखै
ई जिनगी दुख सें बनलों कसला—जिकरा विधि वाम लिखै।

—स्वरचित

कहानी-लेखन

कहानी-लेखन लेली सबसें पहिलें कोय प्रभावी घटना के चयन होना जरूरी छै। ओकरों बादे चरित्र, परिवेश-चित्रण आरनी आवै छै। जहाँ तक चरित्र के बात छै, वहाँ एक प्रभावी मुख्य पात्र के होनै काफी छै,

बाकी बेसी-से-बेसी आरो एक-दू सहायक पात्र। अंत में कहानी के कोय भी अंग हेनो नै लगें कि कहानी सें कटलों हेनों छै। सब अंग हेने लगै कि ऊ सब एक-दूसरा सें जुड़लों छै आरो वहाँ ओकरों बहुत जरूरत छेलै। आखरी में कहानी वास्तें कसावट बहुत जरूरी छै। बिखराव होथैं कहानियो बिखरी जाय छै। नीचें उदाहरणस्वरुप चंद्रप्रकाश जगपिय रों एक कहानी प्रस्तुत छै :

गिरगिट

"देख बुतरू सिनी, जबें हम्में अप्पन लाभ वास्तें नीति के रास्ता छोड़ी, अनीति के रास्ता पर चली पड़ै छियै, तें समाज में अनाचार, दुराचार फैलै छै। अनीति सें हुवें पारें कि हमरा लाभ मिली जाय, मतर एकरा सें समाज के हित नै हुवें पारें, बल्कि एकरा सें समझी लें कि पूरा समाज के अहिते होतै।" मास्टर साहब बड़ी गंभीरता सें पूरा क्लास के छात्र सें कही रहल छेलै—"एकरा सें समाज में जोन व्यवस्था के जन्म होय छै, ओकरा सें आधा समूह के नैतिक पतन होय छै, आरो आधा समूह, जे गरीबों के होय छै, ऊ विवश होय मरै लें मजबूर होय जाय छै। आरो ऐसन समाज सभ्य समाज कहलावै के अधिकारी केन्हौ कें नै हुवें पारें।" पूरा क्लास शिक्षक के बात सें प्रभावित होय रहल छेलै आरो सब छात्रें मने-मन संकल्प लेलकै कि ऊ सब अपन हित वास्तें कभी अनीति के रास्ता नै पकड़तै।

मास्टर साहब घर लौटलै तें आय हुनी आरो गंभीर दिखी रहल छेलै। लेकिन पत्नी के उफनल खुशी देखलकै तें हुनकर गंभीरता जैतें रहलै। हुनी अप्पन पत्नी सें पूछलकै—"की बात छै भागवंती, आय तोहें बड़ी खुश नजर आवी रहल छौ।"

"खुशी के बाते छै, तोहूं सुनवा तें खुशी सें पागल होय जैवौ।" हुनकर जनानी नें कहलकै।

"से की बात छै।"

"ऊ जे अप्पन मकान के पीछू वाला जमीन छेलै नी, ओकरा अप्पन नाम सें लिखवाय लेलें छियै। लाख टका के सम्पत्ति बीसे हजार में हाथ लगी गेलै । जमीन के विधवा मालकिन सें हम्में कही देलियै कि शहर के कुच्छू दबंग लोग तोहर जमीन कें जबरदस्ती अप्पन नाम सें लिखवावै

लेल तैयार छै, आरो तोहीं है समझो कि जमीन तोहर हाथ सें आय गेले छौं। भलाय एकरे में छौं की एकरा हम्मर हाथ लिखी दौ। आखिर छेकियौं तोहर पड़ासिये नी, वक्त-कुवक्त भविष्य में देते रहवौं, आरो जानै छौ, वें डरी कें ऊ जमीन हम्मर नाम करी देलकै । है देखोॅ कागज।''

मास्टर साहब नें कागज हाथ में लेलकै तें जेना सचमुचे खुशी सें नाँची उठलै आरो अप्पन जनानी के पीठ पर दुलार सें हाथ रखतें कहलकै—''हमरा तोरा पर पूरा भरोसा छेलै, आरो तोहें हम्मर आशा कें पूरा करी दिखाय देलौ। शाबास।''

नाटक

नाटक रौं सबसें प्रमुख अंग संवाद होय छै, ओकरोॅ बादे आरो कोय अंग। चूंकि नाटक एक अंक सें लै कें कै अंक के हुए पारें, आरो ओकरोॅ आधारोॅ पर नाटको के कै भेद हुए पारें, मतुर सब्भे भेद में संवाद रीढ़ नाँखी हुवै छै, यै लेली नाटक लेखन लेली संवाद-लेखन पर के अभ्यास बहुत जरूरी छै, एकरै सें नाटक के घटना के भी विकास होय आरो पात्र के चरित्रो के। आरो जहाँ तक नाटक के संवाद के बात छै, ओकरोॅ संबंध में एतने कहलोॅ जावें पारें कि कसावट एकरोॅ प्रमुख पहचान होय छै, यै वास्तें सुक्तिनुमा और मुहावरेदार शैली नाटक के संवाद लेली बहुत आवश्यक छै।

नीचे एक नाटक प्रस्तुत छै :

इलाज

(डॉक्टर कुर्सी पर बैठलोॅ छै, बगले में एकटा छोटोॅ रं अटैची राखलोॅ छै। कुर्सी के दायां दिस बंटा एक छोटोॅ रं कुर्सी पर बैठलोॅ छै।)

डॉक्टर : तें, बोल बंटु, कथी लें ऐलोॅ छैं? की तकलीफ छौ? बाबू के मोॅन केन्होॅ छौ?

बंटा : हुनकोॅ तबीअत तें ठिक्के छै, काका; हों संगतिये के मोॅन

आयकल बेसी खराब रहै छै। बाबूं कहलकै—हाल बताय कें डाक्टर चा के यहाँ सें दबाय लै आनें, तें तोरों लुग आवी गेलियौं।

डॉक्टर : ठीक तें करलैं। आबें तोहें आराम सें बोलें कि संगतिया काका कें होलों की छौ?

बंटा : एक ठो बिमारी होतियै, तें यादो रहतियै। बाबूं एत्तें-एत्तें बीमारी के नाम गिनाय देलकै कि दू, एक नाम छोड़ी कें केकरो नाम याद नै आवै छै। की बोलियौं!

(डॉक्टर खिलखिलाय कें हाँसै छै, फेनु इस्थिर होय कें पूछै छै।)

डॉक्टर : अच्छा, वहा एक, दू रोगों के नाम बतावों। बाकी हम्में पूछलें जैभौं, तोहें 'हों-नै' करलें जइयों।

(बंटा स्वीकृति में मुड़ी हिलावै छै।)

डॉक्टर : तें, हौ एक-दू रोग की छेकै?

बंटा : राती नींद नै आवै छै।

डॉक्टर : ठीक छै।

बंटा : कुछ बोलै छै, तें गोस्सैलों-गोस्सैलों। ई तें हम्मू देखै दियै, काका—से डरों सें हम्मे अलगे सुटियैलों रहै छी।

डॉक्टर : (मुस्कैतें) ठीक छै, आरो?

बंटा : कुछ अच्छो बात बोललों, तें चिकरिये कें बोललों।

डॉक्टर : ठीक छै, आरो कुछु?

बंटा : आरो है कि बात बोलतें-बोलतें मुँह तमतमैलों हेनों लागै छै। आयकल तें एकदम्मे छिमताहा सोभावों के होय गेलों छै।

(डॉक्टर एक क्षण चुप रहै छै, फेनु पूछै छै।)

डॉक्टर : सुतवे नै करै छै कि नीनों में रही-रही कें चौंकी उठै छै?

बंटा : हों, उच्चका रं नीन आवै छै।

डॉक्टर : ठीक-ठाक सुनै तें छै?

बंटा : नै। काका हुनका कुछ कहै छै, तें हुनका चिकरिये कें कहै लें पड़ै छै।

डॉक्टर : आरो वहू केकरो सें चिकरिये कें बोलतें होतै?

बंटा : हों। यहू सहिये कहलौ, काका।

डॉक्टर : तबें तें अच्छो बातों पर हपकै लें ही दौड़तें होतै?

बंटा : हों, यहा सब तें बाबूं तोरा सें कहै लें कहलें छेलै।

डॉक्टर : तोहें देखतें होभौ कि जोरों-जोरों सें बोलै के क्रम में हफसो लागतें होतै?

बंटा : हों। है तोहें केना जानलौ, काका?

डॉक्टर : जानी लेलियै बेटा। एक बात तोहें आरो भूली रहलों छौ, जे तोरों बाबूं हमरा कहै लें कहलें होथौं।

बंटा : की काका?

डॉक्टर : यही कि तोरों संवदिया काका खूब जोर करी कें गाना-बजाना सुनतें होथौं? ओतन्है जोर सें कि घोंर भरी पगलाय जाय?

बंटा : हों। आखरी में यहू कहलें छेलै।

डॉक्टर : तें, बंटू बेटा, तोरों संवदिया काका रों एक्के इलाज छेकै कि ओकरों आदत में केन्हौ कें सुधार लानलों जाय। मतलब कि तेज आवाज के संगीत सुनै सें रोकलों जाय। ओकरा लें यही एकमात्र दवाय छेकै। एकरा में कुछ टको-पैसा खरच करै के जरूरत नै।

बंटा : काका, कुछ बूझें नै पारलियै कि जोर के गाना रुकी जैतै, तें रोग केना रुकी जैतै? लोग तें बोलै छै कि संगीत सें मोन-मिजाज ठीक रहै छै।

डॉक्टर : तोहें ठीक सुनलें छौ, मतर ऊ कत्तें तेज रहें—ओकरो बारे में सुनलें छौ की? ई बेसी-सें-बेसी पचास-साठ डीवी के ही रहें, तें अच्छा।

बंटा : ई डीवी की होलै, काका?

डॉक्टर : डीवी डेसीबल के संक्षिप्त रूप होलै, आरो ई ध्वनि के तीव्रता बतावै छै।

बंटा : ओ (कुछ क्षण चुप रहला के बाद) तें, जों ई डीवी साठ सें बेसी होलै, तें की होतै?

डॉक्टर : वहा सब बीमारी, जे इखनी संवदिया कें घेरी लेलें छै।

बंटा : (हैरत आरो चिंता के मुद्रा में) ओऽऽऽऽ

डॉक्टर : तोहूँ सुनै छौ की?

बंटा : (हथेली हिलतें हुए) नै। हमरा तें हेनों जोर के संगीते सें झरकी पड़ै छै।

डॉक्टर : ठीक करै छों, जों नै सुनै छों। हम्में तें यै लेली पूछी लेलियौं कि जोर-जोर सें गाना बजैवों यही उमरी के बेसी पसंद होय छै, यानी पनरों सें बीस बरसों के छवारिक के, आरो यहा छवारिक सिनी सबसें बेसी हृदय के रोगी साथे-साथे मतिछिमतों मिलथौं।

बंटा : तेज संगीत सें दिल-दिमाग कें भला केना हानि पहुँचै छै, काका?

डॉक्टर : बंटू, हमरों ई देह की छेकै, नसों के जाल बुझों, जेकरा तंत्रिका कहलों जाय छै। जानै छों, खून कें साफ करै के काम एकरै सें होय छै। जबें जोर के संगीत आकि आवाज होय छै नी, तें नसों के ई जाल सिकुड़ें लागै छै, तें लहू के बहवों रुकें लागै छै। दिमाग के छोटों-छोटों नस टूटें-भांगें लागै छै, तें एकरों नतीजा होय छै कि दिल के धड़कनो बढ़ी जाय छै, हृदय रों गति रुकें लागै छै, जैसें कि आदमी मरौ पारें। होनै कें दिमागों रों तंत्रिका सिनी हिन्नें-हुन्नें हुएँ लागै छै, जबें साठ सें बेसी डीबी के आवाज होय छै। नींद नै ऐवों, रक्तचाप बढ़वों, चिड़चिड़ा सोभावों के होवों, चिल्लाय कें बोलवों, बाते बात में गरमाय जैवों, यहा कारणे तें होय छै, बेटा।

बंटा : ओऽऽऽऽ

डाक्टर : आरो यहाँ तेज संगीत आकि शोर के बीच रहला के कारण आदमी बहरो हुएँ लागै छै। कान रों पर्दा फटें पारें। की बुझलौ!

बंटा : बुझी गेलियै, काका।

डॉक्टर : तें, यहू बुझी ला—दुनियां रों आधों आदमी, जे एत्तें गुस्सा में रहै छै, आपनों व्यवहारों सें मतिछिमतों हेनो लागै छै, यहा शोर आरो सत्तर डीबी वाला संगीत के कारणें। दिन

भरी मोटर आरो फटफटिया के आवाज, वै पर कल-करखाना के अलगे शोर! अभी तें दुनियां के आधे आदमी पगलैलों छै, सब्भे ठो पगलाय जैतै, देखियौ।

(अघोरी रों प्रवेश। उम्र : सोलह साल)

अघोरी : (एकदम सें घबड़ैलों होलों) डॉक्टर काका, डॉक्टर काका! बाबू जल्दी सें बोलाय रहलों छौं। संवदिया काका डी.जे. के गाना सुनतें-सुनतें केना-केना नी करें लागलों छै। डी.जे. सें भी बेसी जोरों सें गावें लागलों छै आरो की-की नी बोलें लागलों छै। बाबूं जल्दी सें बोलैलें छौं।

डॉक्टर : (हड़बड़ाय कें उठतें) चलों, चलों!

(डॉक्टर हाथों में अटैची लेलें एक दिस बढ़ै छै, तें बंटा साथें अघोरियो झपटतें डॉक्टर के पीछू-पीछू भागै छै।)

—डॉ. अमरेन्द्र

संस्मरण-लेखन

संस्मरण लिखै के पहिलें आत्मकथा आरो संस्मरण के भेद जानी लेना चाही। आत्मकथा उपन्यास नाँखी बड़ों आकारों में हुएँ पारें कैहिने कि ऊ लेखक के जीवन के लेखा-जोखा होय छै, जबेंकि संस्मरण कोय व्यक्ति आकि स्थल के विशेष प्रवृत्ति या पक्ष कें विशिष्ट ढंग सें चित्रण होय छै, जेकरा सें विषय के कोय विशिष्ट प्रवृत्ति-प्रकृति के उद्घाटन हुएँ पारें। नीचें अनिरुद्ध प्रसाद विमल केरों एक प्रसिद्ध संस्मरण प्रस्तुत छै :

अंगिका केरों वामन : डॉ. माहेश्वरी सिंह महेश

बैसाखों के महिना छेलै। धूप में धरती तपी कें आगिन होय रहलों छेलै। दुपहर के समय छेलै। सूरज सीधे माथा पर कोय आगिन के लहकलों पिंड नाँखी लहकी रहलों छेलै। लू धुइयाँ नाँखी उड़ी रहलों छेलै, हम्में आपनों स्कूल से छुट्टी होला के बाद पुनसिया, समय साहित्य सम्मेलन के कार्यालय से कुछ जरूरी काम सें निबटी कें लौटी रैल्हों

छेलियै। हमरों गाँव मिर्जापुर चंगेरी पुनसिया से एक-डेढ़ कोस सें जादा नै होतै। यही लेलों प्रचण्ड धूप, लू आरों बतास रहला के बादो हमरा ई रोजे के नियम छेलै कि स्कूल सें छुट्टी होला के बाद हम्में ऑफिस जाय कें घंटा भर काम जरूर करै छेलियै। मॉरनिंग स्कूल होला के कारण हमरा एकरा में कोय परेशानी नै बुझाय छेलै।

मई १९८५ के ऊ दिन हम्में कभियो नै भूलें पारौं। १७ मई के मंगलवार दिन। ऊ रोज करीब साढ़े बारह बजी गेलों होतै। जरूरी लिखलों चिट्ठी-पतरी डाकों में दैकें हम्में साईकिल उठैलियै आरों घरों बासतें चली देलियै। भूख तें लागियै गेलों रहै। यै लेली पछिया हवा कें आपनों पूरा जोर पर रहला के बादो हमरों साईकिल आपनों पूरे गति में चलें लागलै। एक तरफें विपरीत दिशा से बही रहलों सनसन करनें पछिया आरो दोसरा तरफें हम्में। नै ते पछिया थक्की रेल्हों छेलै आरो नै तें हम्में। हारना यदि वैं ने सीखले छेलै ते हम्मू जिन्दगी में कहियो हारना नै सीखलें छेलियै। हमरों देहों से छरछर घाम चुवें लागलों छेलै। आभी हम्में आधों रास्ता नै गेलों होवें कि सुनसान रास्ता में दौड़ी रहलों रौदी के बीच छाता तानलें गोरों नाटों एक आदमी कें जैतें देखी कें बड़ी अचरज लागलै। दक-दक खादी के सफेद धोती-कुरता पिन्हलें ई आदमी हमरा वामन के अवतार लागलै, जें आपनों डेग से धरती कें फेरु नापै के संकल्प लेनें मस्ती में झूमलों, धूप के चिन्ता सें निफिकिर चल्लों जाय रहलों छेलै। हमरा मनों में ढेरी सिनी बात उठें लागलै। दुपहरिया रौदी में लू आरो हवा कें रौंदलें सुन्दर, सौम्य आरो सुकुमार देह बाला ई आदमी के हुवें पारै ? वेश-भूषा आरो व्यक्तित्व देखी के हुनी साधारण आदमी नै लागै छेलै।

हमरों साईकिल के गति धीमा होय गेलों छेलै। सोच-विचार में भरलों हमरों माथों हुनका पार करी कें आगू बढ़ें लागलै। उलटी कें हुनका देखलियै भी आरो चीन्है के कोशिश भी करलियै। मतुर कहियो देखलों रहतियै तबें नी चिन्है पारतियै। हमरों साईकिल अपनें आप रुकी गेलै। थोड़े दूर तें बढ़ले छेलियै। जेना दैवी अनजान-अनचिन्हलों शक्ति से कोय अभिभूत होय जाय छै, वहें रं हमरों हाल होय गेलों रहै। तब तांय हुनी हमरा ठियां आबी गेलों छेलै; हुनिये पुछलकै—"चंगेरी मिर्जापुर

जाय के यहेँ रास्ता नी छेकै ?'' हम्में 'हों' कही कें पूछलियै—''आपने के व्यक्तित्व सें अभिभूत होय कें नै चाहतें हुएँ भी रुकी गेलियै। आपनें के की परिचय भेलै? ई रौदी में घाम-पसीना सें भींगलोँ केकरा कन कोन कामोँ सें जाय रहलोँ छियै ?

हुनी हल्का मुस्करैलै। हुनका मुस्करैतें हुनकोँ घनोँ पाकलोँ मूछोँ पर सें पसीना के बूंद थरथराय कें गिरी गेलै। हुनी हांसतें हुएँ कहलकै—''तोंय जरूर कोय कवि साहित्यकार छेकौ। तोरोँ नाम अनिरुद्ध प्रसाद विमल या विद्रोही तेँ नै छेकौ।'' (हम्में पैन्हेँ विद्रोही उपनाम सें ही नाटक कविता लिखेँ छेलियै।) आपनोँ नाम हुनकोँ मुंहोँ सें सुनी कें चकित हम्में फेरू हुनकोँ परिचय जानै लेँ बच्चा नाकी मचली उठलियै। हुनी आगू कदम बढ़ैतें हुएँ कहलकै—''हमरोँ नाम महेश्वरी सिंह 'महेश' छेकै। चलोँ नी। रौद छै। रस्ता में बात करतें चलबै।'' एतना सुनतै हम्में झनझनाय उठलियै आरो श्रद्धा सें हुनकोँ चरण स्पर्श करलियै। चरण छूतें हमरा लागी रहलोँ छेलै कि सचमुच हम्में भगवान वामन के गोड़ छुवी रहलोँ छियै।

हुनी पीठ थपथपाय कें आशीर्वाद देतें फेरू बोललै—''हमरोँ अनुमान सही छै नी। तोंय 'विमल' ही नी छेकौ।''

''आपनें सें तेँ हम्में पैहले दफा मिली रहलोँ छियै। हौं नाम सें तेँ परीचित खूब्बे छियै। आपनें के नाम के नै जानै छै। मतुर अपनें हमरा केनां जानी गेलियै। हम्में सच में 'विमल' ही छेकियै।'' हम्में पूरा शिष्टता सें कहलियै।

आबेँ हम्में दुन्नो जना गप-शप करनें बढ़लेँ जाय रहलोँ छेलियै। हुनी हांसतें हुएँ कहलकै—''जाति जाति कें चिन्ही लै छै। तोरोँ नाम तेँ जानतैं छेलियै।''

ओकरोँ बाद ढेरी सिनी बात करनें दुनोँ आदमी घोँर पहुँचलियै। हुनी हमरे गांव में एक ठो देवघर विद्यापीठ सें स्वीकृति लेली एक आदमी नें हरिजन महाविद्यालय खोलनें छेलै। हुनी ओकरे जांच में ऐलोँ छेलै। हुनी रसतें में पूछी लेलकै हमरा सें—''हम्में जानै छेलियै कि बिना तोरोँ हमरोँ ई जांच कार्य पूरा नै होतै। हम्में झूठ लिखै वाला छियौं नै। तोंय सच-सच बताय देँ कि कालेज सर जमीन पर छै कि झूट्ठे कागज पर दौड़ी रहलोँ

छै।''

सत्य के ऊ मूरत के सामना में हम्में झूठ केनां बोलतियै। यद्यपि ऊ आदमी हमरोॅ बहुत निहोरा करनें छेलै। महाविद्यालय नै चलै छेलै आरो हम्में बिना कोय लाग-लपेट के 'नै' कहि देलियै। हम्में भूलें नै पारौं कि हमरा सही जवाब सें हुनका कतना खुशी होलोॅ छेलै।

मतुर घोॅर ऐला के बाद हुनी काम होतै तुरते लोटे लें चाहै लागलै। हम्में पत्नी कें पुकारलियै—चाहै छेलियै कि ई महापुरुष फेरू कहिया मिलतोॅ कि नै। पत्नी कें भी आशीर्वाद आरो दर्शन के सुख मिली जाय तें अच्छा।

पत्नी ऐलै। परिचय देतें वैं चरण छुवी कें आशीर्वाद लेलकै। हम्में पत्नी सें कहलियै—''मीरा, हमरा बहुत जिद करला पर भी हिनी रुकै लेली तैयार नै होय रहलोॅ छै। खाना खिलाबोॅ। फेरू ई देवता सें...''।

हमरोॅ बात पूरा होय के पैन्हें हुनी बोली उठलै—''नै नै ऐन्होॅ बात नै कहोॅ। आदमी छी आदमिये रहें दें।'' हम्में आगू कुच्छू बोलै के स्थिति में नै छेलियै। मीरा के देलोॅ एक लोटा पानी सें हुनी गोड़ धोतें कहलकै—''तोरोॅ नाम आरो सौभाग्य दुनो अच्छा छौं। बेटी, खाली विमल सें लिखवैतें छोॅ कि कुच्छू लिखतौ छौ। तीस-पैंतीस बरस के उम्र में ही विमल नें अच्छा नाम करी लेनें छौं। हिनका सें भेंट तें नै होलोॅ छेलै मतुर डाक सें हिनकोॅ सबटा लिखलोॅ किताब मिलतें रहलोॅ छै।''

''लिखै तें नै छियै बाबू जी मतुर जहाँ तांय होय छै लिखै में हिनका मदद जरूर करै छियै। हिनी लिखी पढ़ी कें आपनोॅ लक्ष्य पावै में सफल हुऍ, यहे हमरोॅ इच्छा छै। भगवानोॅ सें यहें हरदम मनैतें रहै छियै।'' मीरा शरमैतें हुऍ कहलकै।

''हमरोॅ आशीर्वाद छै। तोरोॅ इच्छा जरूर पूरा होतै।'' पलंग पर बैठतें हुऍ हुनी कहलकै। ''आरो सुनोॅ हम्में जे कामोॅ सें ऐलोॅ छेलियै ऊ होय गेलै। हमरा जिम्मा समय बहुत कम छै। हम्में आबें जैभौं।''

खाना तैयार छेलै। बहुत जिद करला पर भी हुनी भोजन लेली तैयार नै होलै। पत्नी के अनुरोध पर हुनी कहलकै—''उमर नै देखै छौ। आबें पचतै नै छौं। खाय कें चलले छियै। कत्तें खैबै। बुरा नै मानिहोॅ। धोर बुझै छौं। मट्ठा हुऍ तें एक गिलास वहें पिलावोॅ। चीनी नै, नमक

दैकें।''

मीरां मट्ठा तैयार करतें हुएँ कहलकै—''बाबूजी, बाबाधाम के चढ़ौवा प्रसाद छै। ऊ टा तें जरूरे पावियै।''

बाबाधामों के प्रसादों के नामों सें हुनी बहुत खुश होलै। प्रसाद पावी कें हुनी एक गिलास मट्ठा पिलकै। चार बजी रहलों छेलै। बाहर आभियो पछिया रों ताव खतम नै होलों छेलै। मतुर महेश जी कें पछिया के की परवाय। ताव में पछिया सें कोय भी मायना में कम थोड़ो छेलै हुनी। हवा गैर बतासों के चिन्ता कहियो नै करै वाला ऊ वामन जेना ऐलों छेलै होने चली देलकै बिना कोय सवारी रों, पैदले। हम्में पुनसिया तक गाड़ी पर चढ़ाय लें हुनका ऐलों छेलियै।

रस्ता में अंगिका साहित्य पर कत्तें नी बात करलकै। हुनी अंगिका के इकलौता साहित्यकार छेलै, जे लंदन तांय अपना माय के गोदी रों भाषा अंगिका में ही बोलतें रहलै। हुनकों बोली में शहद के मिठास छेलै। हुनकों कहलों ई बात आभियो तांय हमरा कानों में गूंजै छै कि, ''साहित्य रों सेवा भगवान के सेवा छेकै। एकरा सें बढ़ी कें कोय तपस्या नै।''

ललित निबंध

ललित निबंध वास्तव में निबंध ही छेकै। निबंध के जे अपनों विशेषता छेकै, जों ऊ सब में कल्पना आरो लालित्य के मात्रा कें गाढ़ों करी देलों जाय, तें ललित निबंध के रचना होय जाय छै। यहाँ ललित के प्रमुखता होय छै। ललित के मानी होय छै सुंदर, रोचक आरो ई तत्व निबंध में कल्पना सें आवै छै, तें कहलों जावें सकै छै कि ललित निबंध में कल्पना के उड़ान खूब देखलों जाय छै। नीचें अनिल शंकर झा के एक ललित निबंध उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत छै :

ऐलै होली

ऐलै होली, सब साल आवै छै तोहें चाहों या नै चाहों, ई ऐवे

करतै, कोय तें एकरों इन्तजार में पलक बिछैनें रहै छै आरो कोय एकरों धमक सुनी कें अचरा के ओट खोजै छै। होली ऐलै आरो किस्मत के करिश्मा कहिये कि पास में खाली झोली छै, पॉकेट में छै छोटों-बड़ों मुड़लों-तुड़लों कागज के टुकड़ा, केकरौ पर दू पंक्ति कविता लिखलों छै तें कोय कागज में गोष्ठी में पहुँचै के आमंत्रण। से पॉकेट में खाली कागज छै आरो यादों में अनुराग आरो तीक्खों बोली, लेकिन ऐहनो सब दिन तें नहियें नी रहै, जबें जवानी के देहरी पर गोड़ राखलियै तबें दिमाग सही नैं रहै, विज्ञान के पथरैलों डगर देखी कें साहित्य के रपटैलों रस्ता पर मुड़ी गेलियै, नतीजा भोगी रहलों छी, जबें भी दिमाग सें काम करै के मौका आवै छै दिल उड़नपरी बनी कें उड़ान भरें लागै छै ''सिंह सें नजरें मिला जो खेल सकता है फूल के आगे वही निरूपाय होता है'' दिनकर नें गलत थोड़े ही कहलकै।

एक शुभ चिन्तक नें हमरा सलाह देलकै—''मियाँ, सुखी रहना छौ, तें दिलों कें दीवार में चुनवाय दें आरो दिमाग सें आंख मटक्का खेल।''

लेकिन भीतरों सें आवाज ऐलै—''अरे, तों आदमी छेकैं, जों दिल नै रहलौ तें मशीन आरो आदमी में की फर्क ? बिना दिल वाला मशीनी आदमी इन्सान बनाय चुकलों छै। की वहें बनै लें चाहै छों ?''

लिहाजा दिल के ईशारा पर दिलदार बनी गेलां आरो वही समय सें दुनिया के नजरों में बेकार होय गेलां।

हमरा पीछू-पीछू घिसटैवाला शख्स क्लर्की के नौकरी पावी कें मालदार होय गेलै आरो हम्में दिल के वफादार एक दफा नै बनें सकलौं। घर के एक कोना में बैठी कें तुक्का भिड़ावै छी, गोष्ठी में धुरछट गप लड़ावै छी आरो आपनों पीठ खुद आपन्हैं थपथपावै छी, सोचै छी—रचनाकार छेकां, ई की कम छै ? ब्रह्मा जी संसार रचलकै आरो लोग वाग हुनकों पूजा करतें रहलै, आय नै तें कल लोग हमरो माथा पर फूल, अक्षत चढ़ैतै आरो आँखी के आगू दीपक नचैतै ।

है सब होतै-लेकिन पता नै कबें होतै। अखनी तें धर्मपत्नी एहनों हाथ नचाय छै कि डरों सें घरों सें बाहर अपने रंग कवि-साहित्यकारों में दिन बिताय लें पड़ै छै। जबें आपना रं बुद्धिजीवी के बीच बैठै छी तें

समय चीता रं तेजी सें भागै छै, घरवाला हेडेक, फालतू, बेवकूफ सब विशेषणों सें विभूषित करै छै। लाख समझावै छियै कि साहित्यकार सबके हितों के ध्यान रखै वाला होय छै, लेकिन कोय नै समझै छै। कहै छै—"अरे, आपनों हित तें समझै नै, सबके हित साधतै ? चार पैसा कमाव, आपनों बाल-बच्चा पढ़ाव, बूढ़ों माय-बाप कें देखों।' आबें हुनका की समझावौं, साहित्यकार जों पैसा पर गिरें तें साहित्य सें सढ़ांध नै आबै ? ओना दिल-ही-दिल पैसा पावै के इच्छा जरूर रहै छै, लेकिन लक्ष्मी कें तें साहित्यकारों सें पूरे वैर छै। भूलो सें एकरा तरफ नै ताकै छै। लेखन के कठिनाई के समझै छै। अच्छा सें अच्छा लेखक प्रकाशक नै खोजें पारै छै। प्रकाशक ढूँढों, ओकरा खुश करों, किताब बिकें—एकरा लेली ग्राहक पटाबों, विज्ञापन करों, कुछ एहनों षडयंत्र कि तों वाद-विवाद में घिरी जा, चाहे अश्लीलता के दोष तोरा पर लगौं, चाहे ब्राह्मणवाद के या मनुवाद के, अथवा देश द्रोह के ही। फेनू तें तोरों किताब हाथो-हाथ बिकतौं, चाहे ओकरा में कुछ भी कैहनें नी लिखलें रहौ।

आदिकाल में व्यास जी नें महान ग्रन्थ लिखै लेली एक स्टेनोग्राफर रखनें रहै—गणेश जी कें, तभी तें हुनी एत्तें बड़ों ग्रन्थ लिखें पारलकै। हुनकों प्रवेश भी राजघराना तक बेवाक, बेरोक-टोक रहै। लोग नियोग लेली हुनका बुलावै रहै। एक नै तीन-तीन औरत कें हुनी पुत्र प्रदान करनें रहै। जों हुनका औरत के एतना गहरा अध्ययन नै रहतियै तें भला एतना बड़ों ग्रन्थ लिखें पारतियै ? पर आय तें समय्ये विपरीत होय गेलों छै, कोय महिला के तरफ देखों तें चप्पल-जूता सें कुटाय के खतरा तुरत खड़ा होय जैथौं।

हम्में सोचलाँ—चलों, कोय नया विषय खोजी कें लिखलों जाय। हमरा मुहल्ला में एक नया लीडर होलों रहै। वें गली-कूची मं जोर-जोर सें भाषण झाड़ै रहै, कैक दिन तें ओकरों कार्यकलापों के सूक्ष्म अध्ययन करलौं आरो एक नेता चालीसा लिखी कें अखबारों में छपै लें भेजी देलाँ। आबें की बतैहियौं ? अगला दिन भोरे-भोर दुआरी पर तूफान खड़ा होय गेलौं, ऊ नेता आरो ओकरा साथें आठ-दस मुसटंडा, नेता के हाथ में अखबार के प्रति रहौं आरो मुँहों सें गारी वहीना ध्वनित होय रहलों रहौं

जेना काशी के पंडित वेदाभ्यास करतें रहै। मुसटंडा के हाथों के डंटा केबाड़ी पर धड़ाधड़ बरसै, जेना टीना के छत पर बरसा के बूंद पड़ै छै। हम्में तें डरी कें घरों में नुकाय गेलिहौं। पत्नीये कोय तरह सें कही-सुनी कें माफी मांगी कें हुनका सबकें वापस करल्हकौं। ओकरों बाद पत्नी के जे कहर हमरा पर टुटलै तें लागै—हे धरती, तों फटी जा आरो हम्में सीता जकां तोरा में समाय जैहौं। लेकिन नै धरती फाटलै आरो नै हमरा हौ रं धरती में समाय के सौभाग्य मिललों। वें दिन पत्नी कें छूवी कें कसम खैलौं कि चाहे जे भी हुवें, कोय नेता के बारे में कभियो कुछ नै लिखबै।

लेकिन बिना लिखलें तें रहले नै जाय छै। हम्में सोचै लें भिड़लिहौं कि तखनिये पत्नी के दहाड़ कानों में पड़लौं—"हे जी, होली के त्योहार माथा पर छै आरो तों हाथ-पर-हाथ धरी कें बैठलों छों। बच्चा-बुतरू के कपड़ा सिलाना छै, पुओ-पकवान बनाना छै। होली के दिन लोग-वेद घोंर ऐतै तें कि हुनका ऐन्हैं लौटैभौ ?" हम्में सोचों में पड़ी गेलां कि आबें की हुवें, पता नै ई होली कैहनें आवै छै ? ढेर सारा पैसा खरचो, मुँहों पर रंग-कालिख पोतवाबों, महिला छों तें छेड़-छाड़ झेलों आरो मर्द छों तें नामर्द बनी कें ई सब सहों। हम्में घरनी कें होली के बुराय समझाना शुरू करलियै तें ऊ आरो बिगड़ी गेलै—'अरे डांड़ा में जोर नै, तें ब्रह्मचारी के ढोंग ? तों होली नै खेलिहौं, लेकिन नया कपड़ा आरो पुआ-पकवान के इन्तजाम करै लें पड़थौं।" हमरों सब तर्क-कुतर्क होय गेलै, सांझ तक वाक् युद्ध चलला के बाद जबें युद्ध विराम भेलों तें घरों में श्मशानी सन्नाटा पसरी गेलै। होलिका तें दू दिन बाद जरती, लेकिन हमरों दिलों में एक साथ कै-कै होलिका जरी रहलों रहै।

आखिर घरनी कें सुनाय वास्तें जोरों सें बड़बड़ैतें घरों सें निकललां कि जरा अखबार के दफ्तर सें घुरी कें आवै छी।

—अनिल शंकर झा

रिपोर्ताज

रिपोर्ताज अखबारी रिपोर्ट के साहित्यिक रूप छेकै, जाहिर छै कि

रिपोर्ट के भाषा-शैली जहाँ विषय कें सीधे-सीधे प्रस्तुत करै में विश्वास रखै छै, वहाँ रिपोर्ताज में भाषा कलात्मक आरो विषय कें रोचक बनाय के प्रयास अधिक होय छै। अंगिका में रिपार्ताज लेखन कें लैकें डॉ. निवासचंद्र ठाकुर आरो डॉ. अमरेन्द्र कें ही जानलों जाय छै, जबें कि यै विधा पर विशेष ध्यान के जरूरत छै। नीचें हिन्दुस्तान समाचार पत्र में प्रकाशित डॉ. अमरेन्द्र के एक रिपोर्ताज प्रस्तुत छै :

हो पन्ना दा, की-की होलै अबकी बौंसी मेला में?

जे कहों, हौ तें नहियें होलों होतै, जे बीस-पच्चीस बरस पहिलें होय छेलै। मार की बैलगाड़ी रों चींटी रं कतार—सौ में पचास ठो टप्परे वाली। लरुआ रों गद्दी कि कटियो टा बाँस ऊस के पतो नै लागें। चर्र-चों-चर्र-चों। वही बीचों में सवासिन रों अपनौती बात—लोंर-जोंर मिलै के बड़का बहाना; पापहरणी में पुण्य स्नान। बाप रे बाप, लोगों के हौ झुमार। पैदले-पैदल हफसली-धपसली पितयैनी साथें पतोहू। की मलकी-मलकी चलै, गोदी के गोदैला घैलों रं कमरी पर लेलें। जत्तें रंगों के मरद-मुंसा आरो जोंर-जनानी, ओत्ते रंगों के कमीज आरो छीटवाली रंगीन साड़ी। जेना लागै, रास्ता पर रंग बुलतें रहें।

आवें तें हौ रं नहिये नी बोहों ऐतें होतै—मनार आरो मेला देखवैय्या के बोहों। तहिया तें बिन्डोवों उड़ै छेलै खरीदबैया आरो देखबैया के। की मार थियेटर छौं, तें की मार सर्कस। हुन्नें स्वर्ग, नरक के मेला लागलों छौं, तें हिन्नें नाच-पार्टी।

पापहरणी पर जे भीड़ जुटै, तें जुटबे करै, ओकरा सें कम नै, ई कहौ कि बेसिये भीड़ जुटै थियेटर में। कोस भरी दूरे सें बजरंग थियेटर के आवाज सुनाय पड़ै। समझै में जरियो टा देर नै। छोंर-छबारिक के बात छोड़ी दौ, मरद-मुंसा के कान खराहा के कान रं खाड़ों होय जाय, थियेटर के आवाज पकड़ी कें ई पता लगाबै लें कि आखिर कौन नौटंकी चली रहलों छै—अरे, दही बाली के खेल चली रहलों छै।

आरो फेनू क्षण्है में दोसरों थियेटर के आवाज। सबकुछ गड्ड-मड्ड।

पँच-पँच, दस-दस कोस सें चली कें आवै छेलै लोग। की एक्के दिने लेली ? नै। आय साँझे-साँझे चललौं, तें फरचों होतें-होतें पापहरणी

पर। संक्रान्ति-लहान होलो तें दिनभरी मेला-ठेला घूमों। आबें जोंर-जनानी तें थियेटर जावें नै पारें, मजकि मरद-छबारिक भला थियेटर देखनें केना लौटें। एक राती सें मोंन भी तें नै भरैवाला। कम-सें-कम दू रात। आबें ठहरौक जोंर-जनानी धरमशाला या आपनों कोय लोंर जोंर कन। तखनी तें लोगों में कुटुम पहुनों लेली हुलासो कम नै छेलै। अखिनको नाँखी नै कि बौंसी मेला शुरू होय के पहिलें मोंन मनझमान भै गेलों। तें, आबें लोगो कें फुर्सतो कहाँ छै कि कोय केकरो कन ठहरें। भिहनकी ट्रेन पकड़लकों, फुर्र नाँखी मनार पहुँचलों, रातकों थियेटर देखलकों और फेनू भिहैनकी ट्रेन सें फुर्र नाँखि घोंर वापिस। यै में भला मेला की जमतै ?

पहिलें तें महीना भरी मेला जमै। हों-हों आदमी महीना भरी। कोन ठियां के आदमी सें भेंट-मुलाकात नै होय जाय आरो कोन पंथ के पंथी नै जुटै। जैन पंथ, सफा पंथ के साथें सनातनी के समुद्र। संताली किशोर-किशोरी के बाँसुली रं शोर। याद करथैं मोंन गनगन करें लागै छै आभियो।

कुछुवो होलों होथौं; हौ रं तें नहिये होलों होथौं। मेला जमलों होथौं तें दूसरे दिन धम सना बैठी गेलों होथौं। पहिलकों दिन जे जमलों होथौं, वहू तें सरकारे के मूं देखै लेली। वहू में आधों तें सरकारे के अमला-कफला के मूड़ी होथौं। तहिया हेनों नै होय छेलै। मेला के बन्दोबस्त सरकारी आदमी आरो पुलिस नै करै छेलै। मेला के डाक होय छेलै। सुनै छियै ड्रामा के माहिर एक्टर रंगीला के दादां ठेका लै आरो महीना भरी के मेला हेनों व्यवस्थित गुजरै, जेना रामराज रहें। मार की मीना बाजार। मीना बाजार में की मारे टिकुली, हेमानी, सिन्दुर, लट्ठी के दुकानी साथें, किसिम-किसिम के कृषि-मेला। जेबें चुट्टी काटें लागै खरीदवाबै लें।

सुनै छियै, अबकी शोभा सम्राट थियेटर ऐलों छेलै। भीड़ो खूब जमलै। चलों, कुच्छू तें मेला के दिन घुरलौं। बीचों में तें मेला उजाड़े होय गेलों छेलै। लोगें सोचलकै कि कैबरे लानी कें मेला जमैलों जावें सकै छें । आबें तोंही सोचौ भला—बौंसी मेला में कैबरे डांस केन्हौं कें सुहाबै छै ? कहै छै कि सियारी कें मौंतें घेरै छै तें शहरी दिश भागै छै। आरो फेनू वही होय रहलों छै। मंदार महोत्सव कें सरकारी बनाय कें

एकरा जीत्तोॅ करै के कोशिश ?

हो पन्ना दा, जे सरकार खुद्दे जीत्तोॅ नै लागै छै, वैं मंदार महोत्सव केॅ की जीत्तोॅ करथौं। तोहें तेॅ आपनोॅ बात राखो नै पारलेॅ होभौ। सड़को नै बोलेॅ पारलेॅ होभौ। ला, मोबाइले ठप्प होय गेलौं। मंदारवासी सबसें बड़ोॅ गलती करी रहलोॅ छै कि आपनोॅ गोड़ोॅ के ताकत पर भरोसा नै करी केॅ काठोॅ के टांग कमरी सें कस्सै लेॅ चाहै छै। हम्में पूछै छियौं पन्ना दा, है जेकि कै सौ साले सें मकर संक्रान्ति मेला बौंसी में लागी रहलोॅ छै, कोनी सरकारी बल्लोॅ पर। की कांग्रेस चलवैलेॅ छेलै, कि जनता दल, की जनसंघ, की भाजपा। आरो की राजद, एन.डी.ए.? देलकै नी मुख्यमंत्री नीतिशें मंदार महोत्सव केॅ सरकारी करी! लेतें रहियोॅ! सरकारिये होय जैथौं, तेॅ की होय जैथौं। जमींदारी के दिनोॅ में कुछ लै-दै केॅ कामो होय जाय छेलै, आबेॅ तेॅ भीतरिया देलेॅ जा आरो कामो नै। बगले में बुलौक छै। खाँटी सरकारी। की होय छै सरकारी, सब जानथौं मंदार महोत्सव केॅ सरकारी करवाय लेॅ मारामारी करी रहलोॅ छौ ! आचरज।

पन्ना दा। भांगटोॅ सड़ियाबोॅ, तभै सब कुछ सड़ियैतौं। सुनलियै कि अबकी मेला में कवियो सम्मेलन भेलै । हों, एक समय में तहूं ई सब करवाय छेलौ। कवि सम्मेलन में ढेरे कवि मंदार-सपूत के उपाधि के अलंकार सें अलंकृत भेलै। मजकि हो पन्ना दा, अखबारी में जेकरोॅ नाम देखलियै, वैंमें सबटा बाहरिये कवि मंदार सपूत भै गेलै । असली मंदार सपूत प्राण मोहन बाबू, अनूप बाबू, विमल दा, उमाकांत यादव, भोला बाबू आरनी के नाम नै छेलै। तबेॅ की करभौ—हेन्है केॅ चलै छै।

ई बात तेॅ तहूं जानै छौ पन्ना दा कि बौंसी मेला चलै छै पापहरणी सें आरो तोरोॅ पापहरणी सुखलोॅ जाय रहलोॅ छौं। वैतरणी के पानी रं बनलोॅ जाय रहलोॅ छौं आरो तोहें भरोसा करै छां सरकारोॅ पर। तोहें कुछ महीना पहिलें 'हिन्दुस्तान' में पढ़लेॅ होभौ। वैंमें शुरुवे पन्ना पर विजय भाष्कर जी के एकटा रपट छपलोॅ छेलै 'आश्वासन का समाजशास्त्र'। की वहू पढ़ी केॅ हमरो सिनी के आँख आरो दिमाग नै चेतेॅ पारलै। पहलें आपन्हें सें पापहरणी केॅ पापहरणी लायक बनावोॅ। सरकार पर भरोसा के कोय पार छै, तब तांय तेॅ अपने जोरोॅ पर पापहरणी पुण्यहरणी बनी

जैथौं। सोच्हौ, मंदार-मंथन सें अमृत निकललै, तें ओकरों एक बूंद सें इलाहाबाद में कुंभ मेला लागें लागलै, आरो हमरा सिनी मटकी भरी पानी लें हाय-हाय ! केन्हौ कें बचलों पोखर सिनी बचावों। गर्मी आवी रहलों छै। दुनिया चौगुना-पचगुना तरीका सें साले-साल गरमैलों जाय रहलों छै आरो जों मंदार होने गरमाना शुरू होलौं, तें कहाँ रहथौं मेला आरो थेयटर—नै मीनाबाजार, नै मादल, नै वंशी, नै है कहवैया कि :

हे गे बहिनियाँ, पिन्है पैजनियाँ
देखै लें जैबै मनार गे।

अनुवाद कला

अनुवाद यानी एक भाषा के रचना कें दोसरों भाषा में बदलवों छेकै। होना कें सुनै में तें ई आसान काम बुझावै छै, मजकि ई कला ओत्तें आसान नै होय छै। अनुवाद में ई बहुत जरूरी छै कि अनुवादक कें दोनों भाषा के जानकारी होना चाही। कहै के मतलब ई छेकै कि एक भाषा के जे वाक्य संरचना होय छै, ऊ दोसरों भाषा के नै, आरो जबें अनुवाद करलों जाय छै, तें यैमें कर्ता, कर्म, क्रिया आरनी के क्रम विशेष रूप सें ध्यान में राखैलें पड़ै छै। निस्संदेह कविता रों अनुवाद कठिन होय छै, कैन्हें कि वहाँ छन्द आरनी के प्रश्नो खाड़ों होय जाय छै, गद्य के अनुवाद यै दृष्टि सें कुच्छू आसान होय छै। नीचें कुछ उदाहरण प्रस्तुत छै।

उदाहरण—१

हिन्दी

पुन्नीलाल उस मकान के सबसे ऊँचे वाले हिस्से में रहते थे। काफी पैसे वाले और प्रतिष्ठा वाले भी थे। थाने से लेकर मंत्री तक उनकी पहुँच थी। दिन भर तो वह कई.कई मीटिंग में भाषण देते, घर से बाहर रहते, सांझ होते ही अपने दो-दो जेनेरेटरों को चालू कर देते, ताकि उनके घर के अतिरिक्त मुहल्ले में भी रोशनी हो सके। लोग खुश थे कि उन्हें रोशनी मिल रही है और पुन्नी लाल खुश थे कि लोग रात.रात भर जेनेरेटरों के शोर के कारण सो नहीं पाते और इस तरह उनके धन और मकान की आराम से जोगवारी

हो रही थी।

अंगिका अनुवाद

पुन्नीलाल वै मकान के सबसें उपरलका हिस्सा में रहै छेलै। काफी पैसा वाला आरो प्रतिष्ठा वाला भी छेलै। थाना सें लैकेॅ मंत्री तक हुनकोॅ पहुँच छेलै। दिन भर तेॅ हुनी कै-कै मिटिंग में भाषण दै के क्रम में घर सें बाहरे रहै छेलै आरू सांझ होतै आपनोॅ घर दू-दू जेनेरेटर केॅ चालू करी दै छेलै, यै लेली कि हुनकोॅ घरोॅ में रोशनी के अलावा मुहल्ला में भी रोशनी होय सकै। लोग खुश छेलै कि ऊ सब रोशनी पावी रहलोॅ छेलै आरो पुन्नीलाल खुश छेलै कि लोग रात भर जेनेरेटर के शोर के कारणें सुतेॅ नै सकै छेलै आरो यै तरीका सें ओकरोॅ मकान साथें धन के जोगवारी आराम सें होय रहलोॅ छेलै।

उदाहरण—२

हिन्दी

किशनचक अंधकार में डूबा हुआ था। आखिर मुहल्ले में बिजली लाने के लिए चन्दे इकट्ठे किए जा रहे थे। आधे हिस्से ने जी खोल कर चन्दा दिया, आधे ने देने से इन्कार कर दिया। न देनेवाले का कहना था कि वे दूसरी जगह से कनेक्शन ले लेंगे। इसके लिए वे हजार.हजार रुपये नहीं दे सकते।

आखिर देने वाले ने और भी रुपये देकर मुहल्ले में बिजली की व्यवस्था काफी भाग.दौड़ के बाद कर ली। बिजली जारी होते ही चन्दा न देनेवाले लोगों ने भी अपने.अपने तार नये ट्रांसफरमर से जोड़ लिए। विरोध करने पर न चन्दा देने वाले लोगों ने कहा-"बिजली सरकार की है, किसी ने विरोध किया तो इसका नतीजा भी अच्छा नहीं होगा। पड़ोसी बन कर रहना है तो सहयोग की भावना सीखिये।"

अंगिका अनुवाद

किशनचक अंधकार में डूबलोॅ छेलै। आखिर मुहल्ला में बिजली आनै वास्तें चन्दा इकट्ठा करलोॅ जाय रहलोॅ छेलै। आधा हिस्सा नें जी खोली केॅ चन्दा देलकै, आधा नें दै सें इन्कार करलकै। नै दै वाला के कहना छेलै कि वें दोसरोॅ जग्घोॅ सें कनेक्शन लै लेतै। एकरोॅ वास्तें ऊ हजार-हजार रूपया नै दियेॅ सकै।

आखिर दै वाला नें आरू रुपैया दै-दै कें मुहल्ला में बिजली के व्यवस्था काफी भाग-दौड़ के बाद करलकै। बिजली जारी होतैं चन्दा नै दै वाला लोगें कहलकै—"बिजली सरकार के छेकै। कोय्यो विरोध करलकै तें एकरों नतीजा भी अच्छा नै होतै। पड़ोसी बनी कें रहना छौं तें सहयोग के भावना सीखौ।"

उदाहरण—३

हिन्दी

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि उसने मेरा नाम बताया और तुमने उस पर शंका करते हुए रुपये नहीं दिए। तुम्हें समझना चाहिए कि कोई दूसरा व्यक्ति होता तो वह मेरा नाम लेकर रुपये नहीं माँगने आता।" घर पहुँचते ही अपमानित हुए पति ने पत्नी को डाँटा था।

दूसरे ही दिन पति ने फिर पत्नी को डाँटा था कि तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि उसने मेरा नाम बताया और तुमने उसे रुपये दे दिए। तब तो जो कोई भी मेरा नाम बता कर तुमसे जो कुछ माँगेगा-दे दोगी। जानती नहीं कि जमाना कितना धूर्त हो गया है। किस मूर्ख औरत के साथ पाला पड़ गया है। हे ईश्वर !

अंगिका अनुवाद

तोहरों हिम्मत केनां होलौं कि वें हमरों नाम बतैलकै आरो तोहें ओकरा पर शंका करी कें रुपया नै देलौ। तोहरा समझना चाहियों कि कोय दोसरों व्यक्ति होतियै तें ऊ हमरों नाम लै कें रुपया नै मांगै लें ऐतियै ।" घर पहुँचतै ही अपमानित होलों पति नें पत्नी कें डाँटलकै ।

दोसरों दिन पति नें फेर पत्नी कें डांटलें छेलै कि तोहरों हिम्मत केना होलौं कि वें हमरों नाम बतैलकै आरो तोहें ओकरा रुपया दै देलौ। तबें तें जे कोय्यो हमर नाम बताय कें तोहरा सें जे कुछ भी माँगतौं-दै देभौ। जानै छौ कि जमाना कत्तें धूर्त होय गेलों छै। कौन मूर्ख औरत के साथ पाला पड़लों छै। हे ईश्वर !

सारांश आरो सारलेखन कला

होना कें तें सारांश आरो सारलेखन, सुनै में एक्के रं बुझावै छै, मजकि

दोनों में अन्तरो छै। सारांश में कोय्यो गद्य के अंश के मूल भाव कें ही प्रस्तुत करलों जाय छै। जबें कि सारलेखन में ऊ गद्य-अंश के सब्भे टा महत्वपूर्ण तथ्य कें समेटलों जाय छै। ई बात सही छेकै कि ऊ भले सारांश लेखन रहै आकि सारलेखन—दोनों में मूल अंश के अलंकृत भाषा, मुहावरा, लोकोक्ति आरनी के त्याग करलों जाय छै आरो वै जग्घा में सीध ा-सादा भाषा में ही सारांश या सारलेखन प्रस्तुत करलों जाय छै। साथे-साथ हेकरों ख्याल रहै कि कोय मुख्य नाम आरो तिथि कें नै बदललों जाय छै। वाक्य छोटों-छोटों होना चाही। शब्द सरल होना चाही। सारांश आकि सार लेखन वास्तें ई करलों जावें सकै छै कि मूल अंश के प्रमुख पंक्ति कें रेखांतिक करी लेलों जाय आरू फेरू ऊ सिनी कें मूल के एक तिहाई अंश में बांधी लेलों जाय। आरू फेरू ओकरों एक उपयुक्त शीर्षको दै देना चाही।

कभी-कभी मूल अंश के नीचें कुछ सवालो दै देलों जाय छै आरो ओकरों उत्तर मूल गद्यांश सें खोजै लें कहलों जाय छै। निश्चित रूप सें, यै तरह सें मूल अंश के मुख्य विचार कें जानवों बहुत आसान होय जाय छै। जों सवाल नहियो देलों गेलों रहें, तहियो सार लेखक कें मनों में प्रश्न आरो ओकरों उत्तर दोहरैतें रहना चाही। यै सें मूल अंश के सार कें जानना आसान होय जाय छै। उदाहरण—

गद्यांश

१९८२ के अक्टूबर महीना रहै। गया आरो राजगीर में दू सप्ताह भटकला के बाद बनारस पहुँचलों रिहै। तखनी लाल वस्त्र सें शरीर ढकै रिहै। दाढ़ी के बाल लम्बा रहै आरो छाती तक झूलै रहै। हों, आजकल रं सफेद नै रहै।

बनारस के गली-कुची में चक्कर लगाय कें थकी गेलों रहियै। एक धुन रहै कि सच्चा साधक कें ढूढ़ी कें गुरू बनैवै।

कैक औघड़ आरो साधू भेशधारी भिखारी सें बतियाय कें मोंन भिन्नाय गेलों रहै। साधना के ढोंग करै वाला के पास कुछ नै रहै।

आठमा दिन रहै। काशी प्लेटफार्म पर रात गुजारी कें अन्हरगरे डोम सरदार घाट पहुँचलों रिहै। नित्यक्रिया सें निवृत्त होय कें एक नाव

पर बैठी गेलोॅ रिहै। दोसरा पार बालू पर उतरी कें उत्तर दिस चली देनें छेलियै। रेत समाप्त होलै आरो आगू काशे काश झलकै रहै। बीच सें एकपड़िया रास्ता रहै। वही रास्ता पर बढ़ी गेलोॅ रिहै। रास्ता के अंतिम सिरा पर एक झोपड़ी मिललै। आगू एक औघड़ आग जलैनें चीलम भरी रहनें छेलै।

भीतर सें धिक्कार के भाव उठलै—'नसेड़ी ! बाबा के नाम पर नशा में जीवन गारत करैवाला जीव। ठग !' गोस्सा सें एक नजर ओकरा पर डाललियै। "बड़ी जरलोॅ छैं ? आव.....आव ! आँखी नें जे-जे देखै छै ओकरो पार दुनिया में बहुत कुछ छै। बहुत कोयला टटोलला आरो हाथ-मूँ रगैला के बाद हीरा मिलै छै। ऊ भी हरि कृपा होला के बादे। काँटा सें हाथ छिदवैनें बिना कमलदल पावै लें चललोॅ छैं ?"

हम्में हतप्रभ। की कहै छै ? की यें हमरोॅ भटकन जानै छै ?

"राती हरिश्चन्द्र घाट पर आव। साध पूरा होतौ। लेकिन खबरदार! करेजा मजबूत छौ तभिये आव, नै तें लौटी जो। ई दुनिया सबके लेली नै छै।" कही कें वें मूँ में चिलम लगाय देलकै।

'पर उपदेश चतुर बहुतेरे' मनोॅ में गूंज उठलै। आँख तरेरी कें ओकरोॅ आँख में देखलियै। यही गलती भै गेलै—गोस्सा के आगिनी पर घड़ो पानी पड़ी गेलै । पता नै ओकरोॅ आँखी में की रहै। हमरोॅ चेतना लुप्त हुवें लागलै।

जबें चेत भेलै—धूप तपी रहलोॅ रहै। आस-पास कोय नै रहै। खाली झोपड़ी में दू टा मुंडा, एक चिमटा आरो बाहर बुझलोॅ धूनी रहै।

उठी कें चुपचाप वापस चली देलियै। मनोॅ में दृढ़ निश्चय रहै-राती हरिश्चन्द्र घाटोॅ पर देखना छै।

सांझ होथैं हरिश्चन्द्र घाट पर मंदिर के सीढ़ी पर बैठी रहलोॅ रिहै। दाहकर्म। चली रहलोॅ रहै। तरह-तरह के आवाज आरो गंध सें वातावरण रहस्यमय रहै ।

सन्नाटा में कुत्ता-सियार के आवाज सें डोॅर लागें लागलै। मोॅन हुवै—लौटी जाँव। तभी गीदड़ के तेज आवाज सें चौंकलियै। सामनें वही औघड़ रहै। मूँ पर संतोष—चलोॅ पहिलोॅ परीक्षा में खरा उतरलौं।

"आव.....चल साथ।" कही कें ऊ एक दिस चली देलकै। पीछू-पीछू हम्में। कुछ देर गेला के बाद ऊ ठिठकी गेलै। मूड़ी घुमाय कें हमरोॅ दिस देखलकै—क्रोध में फुंफकार जकां शब्द मूँ सें निकललै—"कथी लें भटकै छैं ?

फुटलों पात्र में अमृत नै देलों जाय छै, चल भाग यहाँ सें। नै तें राख में मिलवैं ।''

हम्में चुप। ऊ आगू बढ़लै। पीछू हम्में। कुछ दूर गेला के बाद ऊ फेनू मुड़लै। कुछ देर हमरा गौर सें देखलकै, फनू कहलकै—''अच्छा बैठ।''

ऊ बालू पर पदमासन पर बैठी गेलै। हम्में सामनें झोला-झक्कर फेंकी कें पदमासन लगैलियै।

''हम्में जे-जे करै छियै—ऊ-ऊ करी कें देखाव।'' कही कें वें आसन बदली-बदली कें शरीर के साधना प्रदर्शित करें लागलै। हम्में क्रिया दोहरैनें गेलियै । मतरकि जल्दीये महसूस हुवें लागलै—शरीर टूटी रहलों छै। समुद्र के थाह नै छै। हम्में रुकी गेलियै।

ओकरों मूँ पर मुस्कान ऐलै।

''चल ध्यान योग में आव।'' कही कें ऊ ध्यान में ऐलै।

हम्में चेतना समेटलियै.....आकाश.....चाँद.....तारा.....शून्य.....

सिर पर कुछ रेगै रहै, फनू कुछ नै रहलै। जब चेत भेलै—भोर के लाली फैली रहलों रहै। औघड़ के चिलम सुलगी रहलों रहै। वें स्मित मुस्कान सें हमरा दिस देखलकै—''जो हठयोग छोड़ी कें। ध्यान योग ही तोरों साध्य छौ। प्राप्त निधि के दुरुपयोग नै करिहैं। परोपकार करै सें पहिनें पात्र के परीक्षा करी लिहैं। प्रयाग में अष्टभुजी के मंदिर में प्रतीक्षा करिहैं। मार्गदर्शन करायवाला वहीं खोजला पर तोरा मिलतौ।''

कही कें ऊ उठी गेलों रहै। प्रयाग के श्मशान तक बनारस श्मशान के गंध समान प्रतीत होलों रहै।

सार-लेखन

सिद्धि रों खोज में साधु भेष धारी लेखक ई. १९८२ में आखिर बनारस पहुँचलै। वहाँ डोम सरदार घाट पार करी उत्तर दिस बढ़लै, जहाँ जाय कें ओकरा एक औघढ़ मिललै।

औघड़ें लेखक के मनों के बात भांपी कें ओकरा हरिश्चन्द घाटों पर आवै के बात कहलकै ताकि ओकरों मनों के कामना पूरा हुएँ।

हरिश्चन्द घाट पहुँचला पर लेखकें देखलकै—ऊ औघड़ वहाँ उपस्थित छेलै। दोनो जबें आगू बढ़लै, तें औघड़ें पीछू ऐतें लेखक सें फेनू लौटै के बात

कहलकै, मजकि लेखक चुप्प रहलै।

चलतें-चलतें एक जगह रुकी कें औघड़ें लेखक कें ऊ सिनी क्रिया करै लें कहलकै, जे-जे औघड़ करी रहलों छेलै। क्रिया करतें-करतें लेखक के चेतना शून्य हुवें लागलै अजीव-अजीव अनुभवो हुवें लागलै, तें औघड़ें कहलकै कि तोरों वास्तें ध्यान योगे उत्तम छौं, हठयोग नै। आरो एक बात याद रखों कि परोपकार करै के पहिनें पात्र के परीक्षा जरूर लियों।

शीर्षक—सिद्धि रों खोज

प्रश्न

१. लेखक कौन ई. के कौन महीना में बनारस पहुँचलै ?

२. डोम सरदार घाट पार करला के बाद लेखकें की देखलकै ?

३. औघड़ कें देखी लेखक रों मनों में की भाव उठलै ?

४. पहिलों दाफी औघड़ें लेखक कें की कहलकै ?

५. दोसरों दाफी लेखक सें औघड़ें फेनू की कहलकै ?

६. वहाँ सें उठला के बाद लेखक कें की बुझैलै ?

उत्तर

१. ई. 1982 के अक्टूबर महीना में लेखक बनारस पहुँचलै।

२. डोम सरदार घाट पार करला के बाद रस्ता के आखिरी सिरा पर एक झोपड़ी लेखकें देखलकै, जहाँ एक औघड़ चिलम पीवी रहलों छेलै।

३. औघड़ कें देखी कें लेखक के मनों में घृणा के भाव ऐलै, ई सोची कें कि नशा पान सें जिनगी बरबाद झुट्ठे बरबाद करै छै।

४. लेखक के नगीच ऐला पर औघड़ें कहलकै कि जों करेजों पुष्ट छौ तें हरिश्चन्द घाट में आव, वांही तोरों साध पूरा होतौ।

५. दूसरों दाफी औघड़ें लेखक सें कहलकै कि तोरों कल्याण हठयोग में नै ध्यानयोग सें ही संभव छै, जेकरों मार्ग प्रदर्शन कराय वाला प्रयाग में ही मिलें पारै। साथें-साथ यहू कहलकै कि केकरों परोपकार के पहिलें पात्र के परीक्षा जरूरी छै।

६. लेखक कें हेने बुझैलै जेना बनारस के श्मशान सें लै कें प्रयाग के श्मशान तक एक्के गंध फैली रहलों छै।

पत्र-लेखन

सेवा में
सम्पादक
प्रभात खबर
भागलपुर
बिहार

महोदय,

हम्में आपनें के लोकप्रिय अखबार द्वारा स्थानीय प्रशासन रों ध्यान अपनों मुहल्ला केरों समस्या दिश खीचै लें चाहै छियै,

कि महीनौ सें ई मोहल्ला के गंदगी जस-रों-तस जमलों होलों छै जेकरों कारण नै खाली वातावरणे दुर्गन्धमय होय रहलों छै, बलुक घातक बीमारियो फैलै के सम्भावना बढ़ी गेलों छै।

जलजमाव के संकट अलगे छै। मुहल्ला रों सबटा गंदा पानी एक्के गड्ढा में जमा होतें रहै छै आरो ऊ पानी के निकासी के कोय व्यवस्थो नै छै।

जे एकटा सड़क छै, वहू मुरम्मत के अभाव में एकदम टूटी-भाँगी गेलों छै, जेकरों कारण सड़क पर दुर्घटना होत्हैं रहै छै। यहाँ तक कि ई मुहल्ला में अभियो तांय बिजली के कोय व्यवस्था नै छै; इस्कूल-कॉलेज के बात तें दूर के बात छेकै।

हम्में विश्वास करै छियै कि आपनें के लोकप्रिय अखबार में ई पत्र प्रकाशित होला पर स्थानीय प्रशासन के ध्यान जरूरे ई दिस खिचतै।

भवदीय
दीनदयाल भगत

आवेदन पत्र

ई किसिम के पत्र व्यक्तिगत आरो व्यावसायिक पत्र सें एकदम भिन्न होय छै। कोय किसिम के औपचारिकतो यैमें नै होय छै। नमूना :

पद, जै लेली ई आवेदन करलों गेलों छै (लिपिक) अंगिका

१. नाम सीताराम आर्य

२. पिता रों नाम	भुवनेश्वर आर्य
३. जन्म-तिथि	१२-२-१९८२
४. (शब्द में)	बारह फरवरी उन्नीस सौ अस्सी
५. वर्तमान पता	छोटा पचगढ़
	साहिबगंज, ८१६१०९ (झारखंड)
६. स्थायी पता	पथरगामा, गोड्डा, सं. प. (झारखंड)
७. अनुसूचित जाति/जनजाति	नैं
८. धर्म	हिन्दू
९. नागरिकता	भारतीय
१०. योग्यता	

हम्में प्रमाणित करै छियै कि आवेदित पद लेली निर्धारित योग्यता हमरा में छै आरो जे सूचना सिनी यै आवेदन पत्र के साथ संलग्न करलों गेलों छै, ऊ एकदम सही छै।

११. संलग्न पोस्टल	ऑर्डर रों संख्या ०९६३२
१२. संलग्नक सिनी	रों संख्या २

आवेदक रों हस्ताक्षर

व्यावसायिक पत्र

यै किसिम के पत्र में कोय चीज मंगैबों, सामान के प्राप्ति पर सूचना भेजबों आरनी आवै छै। नमूना :

तारीख–

सेवा में,
व्यापार प्रबन्धक
अंगिका संसद, नई दिल्ली
महाशय,

कृपा करी कें निम्नांकित किताबों के दू-दू प्रति, हमरों नामों सें वी. पी. पी. द्वारा, नीचें लिखलों पता पर भेजियै :

१. फीनिक्स : डॉ. मृदुला शुक्ला
२. गुलबिया : डॉ. आभा पूर्वे
३. भदवा चंदर : सुरेन्द्र प्रसाद यादव

—भवदीय
लखन यादव

नवलखा मंदिर के पास
देवघर, (सं. प.) झारखण्ड

पारिवारिक पत्र रों नमूना

गिलान पाड़ा
दुमका, झारखण्ड
तिथि—१०-८-०८

पूज्य पिताजी,

सादर चरणस्पर्श

आपने रों चिट्ठी कल्हे मिली गेलों छेलै। ई जानी कें बड्डी खुशी होलै कि गुड्डू मैट्रिक के परीक्षा प्रथम श्रेणी सें पास करलें छै।

आपनें हमरों वास्तें जे किताब वी. पी. पी. सें भेजनें छेलियै, वहू सिनी मिली चुकलों छै।

घर में सब बड़ों सिनी कें हमरों प्रणाम निवेदित करी दिहौ।

शेष कुशल छै।

आपनें रों आज्ञाकारी पुत्र
कैलाश सिंह

■■

डॉ. अमरेन्द्र : एक परिचय

काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, आलोचना की विधाओं में अब तक सत्तर से अधिक पुस्तकों का सृजन । तीन दर्जन से अधिक प्रसारित रेडियो नाटक की पांडुलिपियाँ इधर-उधर पड़ी हुई। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तक और ग्रन्थों में दर्जनों लेखों का प्रकाशन। सम्प्रति : वैखरी (हिन्दी), पुरबा (अंगिका) पत्रिकाओं का सम्पादन ।

सम्पर्क : लाल खां दरगाह लेन, सराय भागलपुर–८१२००२ (बिहार) ।
मो. ८३४०६५०६७९, ९९३९४५१३२३
ई–मेलःdramrendra.ang@gmail.com
website : www.dramrendra.com

डॉ.आभा पूर्वे : एक परिचय

अंगप्रदेश के भागलपुर जिला के समृद्ध परिवार में ई.1964 में जन्म। स्वर्णपदक के साथ एम. ए.। ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि। हिन्दी और अंगिका में डेढ़ दर्जन से अधिक मौलिक और सम्पादित पुस्तकों का सृजन। अंग महिला साहित्यकार संसद की अध्यक्षा के रूप में नारी जागृति के लिए सक्रिय । सम्प्रति : व्याख्याता, बी. एड. विभाग, सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर (बिहार)। सम्पर्क : शरत चंद पथ, मशाकचक, भागलपुर–८१२००१ (बिहार) ।

9 788196 510725
ISBN : 9788196510725

अंगिका संसद सराय भागलपुर

मूल्य : 150 रूपये